नई पीढ़ी के निर्माण का मासिक

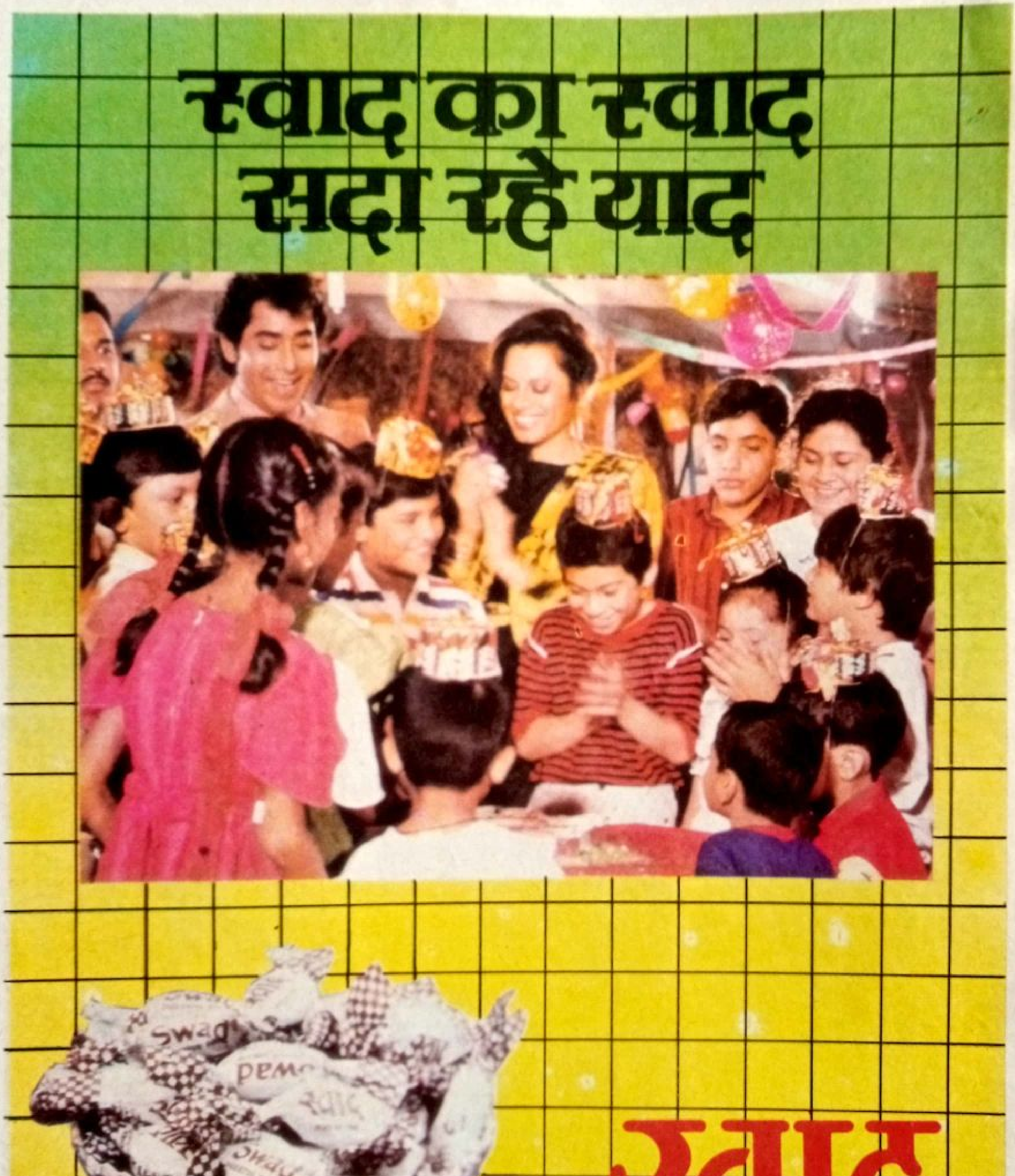
नंदन



हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन

रु.३.५०पै.

जून '८९

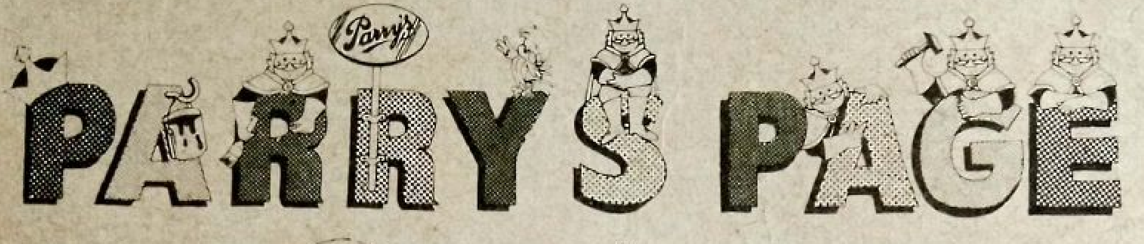


Anil Pub.



पढ़िये डायमंड कामिक्स और जीतिये 2 लाख रु० के नकद इनाम
कार्टूनिस्ट प्राण का
प्राण
बिल्लू और फिल्म शो
मोटू पतलू और फिल्म की शूटिंग
पलटू और कंजूस लाला
डब्बू जी के धमाके
हंसी का खजाना
अंकुर और गलीचा चोर
डायमंड कामिक्स में
मूल्य प्रत्येक 5/-
मामा भांजा और ड्रैकुला जादूगर
ताऊ जी और
महाबली शाका और तोप का कमाल
डायमंड मिनी कामिक्स
चाचा भतीजा और डाक बंगला
मामा भांजा और दो मूर्ख
लम्बू मोटू और रांग नम्बर
मोटू छोटू और मुसीबत ही मुसीबत
लेखक राजीव
रहस्य रोमांच व साहसिक घटनाओं से भरपूर
नई बाल पाकेट बुक्स
चाचा चौधरी और पीलू की करामात
पिंकी और गहनों के चोर
अंकुर और डाकुओं से टक्कर
फौलादी सिंह और कांच का देश
मोटू छोटू और जूता कम्पनी
महाबली शाका और आदमखोरों का खजाना
चाचा भतीजा और जादूगर की हत्या
मीकू और मौसी के हीरे
मूल्य प्रत्येक 3/-
डायमंड कामिक्स डाइजेस्ट में
मूल्य प्रत्येक 12/-
तेनालीराम
राजन इकबाल III
फौलादी सिंह V
चाचा भतीजा IV
डायमंड कामिक्स प्रा.लि.
2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

Scanned with CamScanner

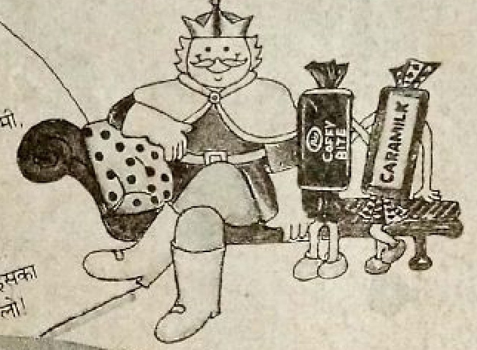


प्रिय दोस्तो !



छुट्टियां फिर आ पहुंचीं तो मैंने सोचा कि पैरी पेज बनाने का इससे बढ़िया समय और भला क्या होगा? मेरे साथियों (ट्राई मी, लॉलीपॉप, कॉफ़ी बाइट और कैरामिल्क) ने मिल कर एक बड़ा मजेदार हॉलीडे पेज बनाया है छुट्टियों में तुम इसका भी मज़ा लो!

Parry's
THE KING OF SWEETS



पैरीज़ टॉफियां और बिस्किट- हर किसी को भायें.

सांप कैसे नचाया जाता है ?

तुमने कोई सपेरा तो जरूर देखा होगा जो बीन के संगीत से सांप को नचाया करता है. लेकिन असलियत यह है कि सांप संगीत सुन ही नहीं सकता. संगीत क्या वह कुछ भी नहीं सुन सकता. वह बिल्कुल बहरा होता है. जब सपेरा उसे नचाता है तो वह अपने पैर से जमीन पर थपकी देता है और खुद झूमता है. थपकियों के कंपन की ताल पर सांप हिलने लगता है और ठीक सपेरे की नकल करने लगता है. इसी को हम सांप का झूमना और नाचना समझते है





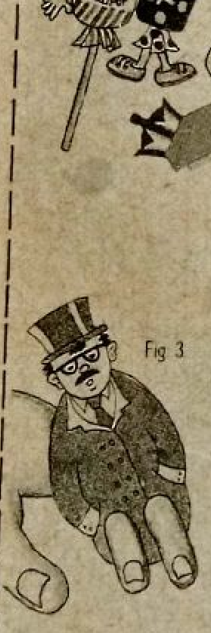
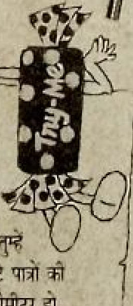


Fig 3



Fig 2



कागजों को नचाएं तो कैसा रहे ?

यह है नाच का एक अनोखा कार्यक्रम. बस तुम्हें सिर्फ़ इतना करना है कि कागज पर छोटे-छोटे पात्रों की तस्वीर खींच लो जिनकी ऊंचाई करीब ९ सेंटीमीटर हो. लेकिन इतना ध्यान रहे कि उन पात्रों की टांगें न हों. (चित्र-१ देखो). जब तस्वीरें बन जाएं उनमें रंग भर दो और उन्हें आकार के मुताबिक काट लो. जहां पर टांगें होनी चाहिएं थीं, वहां पर सावधानी के साथ छेद कर दो (चित्र-२ देखो) अब अपनी पहली व दूसरी उंगलियां इन छेदों में डालो (देखो चित्र-३) और एक पात्र को बाएं हाथ की उंगलियों से तथा दूसरे को दाएं हाथ की उंगलियों से नचाओ. तुम अपने दोस्तों से भी नाचने वाले कागज के पात्र बनवा सकते हो और फिर उनके साथ नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन कर सकते हो.

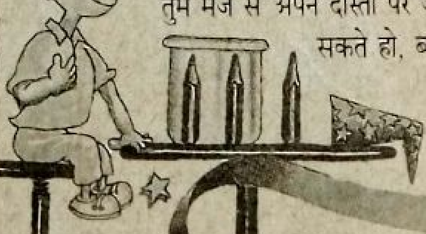
Fig 1





देखो यारो, यह जादुई पेंसिल !

एक बड़े गिलास मे थोड़ा पानी भर दो. इस गिलास के पीछे एक पेंसिल रख दो. अब अगर तुम गिलास के आगे से पेंसिल की तरफ देखोगे तो एक अजब नजारा देखोगे — वहां अचानक दो पेंसिलें दिखाई देंगी. तुम अपनी दांई आंख बंद करके देखोगे तो बांई तरफ की पेंसिल गायब हो जाएगी. बांई से देखोगे तो दांई गायब. ऐसा पानी में रोशनी के वक्रीकरण के कारण होता है. वक्रीकरण के बारे में तुमने भौतिक शास्त्र यानी फ़िज़िक्स में पढ़ा होगा. सीधी सी बात है कि जब प्रकाश की किरणें पानी या गिलास जैसी किसी चीज से होकर गुजरती हैं तो उनकी दिशा बदल जाती है. इस तरह तुम मजे से अपने दोस्तों पर जादूगर होने का रौब जमा सकते हो, बात है न मज़ेदार?



Parry's
THE KING OF SWEETS

✂ CUT AND KEEP



अब लायन पेंसिल्स की ओर से एक और नयी पेशकश... पर्ल फिनिश युक्त **लायन पिंकी** पेंसिल. आकर्षक पेंसिल. देखने में खूबसूरत. इसकी एच बी लैड की मज़बूत बनावट के कारण यह सहजता से लिखे, और न ही बार-बार टूटे.

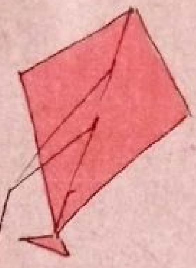
रबर टिप और हेक्ज़ागॉनल के साथ भी उपलब्ध

लायन पेंसिल के अन्य जाने-माने ब्राण्ड :

लायन **मोटो**, लायन **टरबो**, लायन **स्वीटी**, लायन **कॉन्कॉर्ड**, लायन हाय-टैक **मैटालिक**, लायन **मशहूर**, लायन **एक्ज़ेक्यूटिव**, लायन **नॉवेल्टी**, लायन **जीमैटिक** ड्राइंग पेंसिलें और **रतन** कलर पेंसिलें तथा वैक्स क्रेयॉन.

लायन पेंसिल्स प्रा. लि., ९५ पारिजात, मरीन ड्राइव, बम्बई ४०० ००२.

नंदन



जून '८९

वर्ष : २५ अंक : ८

सम्पादक

जयप्रकाश भारती

कहां क्या है

मुख-पृष्ठ : विद्याव्रत एलबम : एम. एस. अग्रवाल

सहायक सम्पादक : चन्द्रदत्त 'इन्दु'

उप-सम्पादक : देवेन्द्र कुमार, रत्नप्रकाश शील, क्षमा शर्मा, डा. चन्द्रप्रकाश; चित्रकार : प्रशांत सेन



आओ बात करें

रामेश्वर रोज समुद्र तट पर सैर करने जाता था । तट पर आकर टकराती लहरों का शोर सुनना, उनकी फुहारों में भीगना अच्छा लगता था उसे । बस्ती वहां से दूर थी । सुबह के समय तट पर कम ही लोग होते थे ।

एक सुबह रामेश्वर तट पर गया, तो उसने रेत पर पड़ी एक सीप देखी । 'अगर इसमें मोती होगा, तो समझो भाग्य खुल गया ।' सोचता हुआ वह सीप उठाने चला । तभी पीछे से आवाज आई— "यह सीप मेरी है ।"

रामेश्वर ने घूमकर देखा । एक आदमी तेजी से बढ़ा आ रहा था । उसने कहा— "मैंने बहुत मेहनत से सीपियां इकट्ठी की थीं । उठाते समय एक गिर गई, यह वही है । मैं काफी समय से ढूंढ़ रहा हूं । मेरा नाम विशाल है । मैं अक्सर यहां आता हूं ।"

रामेश्वर को गुस्सा आ गया । वह समझ गया कि विशाल झूठ बोल रहा है । उसने कहा— "यह सीप मेरी है । सुबह मैं यहां सबसे पहले आया हूं । इसे मैं लूंगा ।"

"तुम मुझे जानते नहीं । मेरे मुंह का कौर छीनना हंसी-खेल नहीं ।"— कहकर विशाल सीप लेने झपटा, तो रामेश्वर भी उससे उलझ पड़ा । अगले ही पल दोनों रेत पर लुढ़क रहे थे । शोर सुनकर भीड़ जमा हो गई । कोई विशाल का पक्ष ले रहा था, तो कुछ लोग रामेश्वर को सही बता रहे थे । जल्दी ही वहां दो दल हो गए । तट पर जैसे घमासान युद्ध छिड़ गया ।

किसी ने यह नहीं देखा कि लहरें तट की ओर दौड़ी आ रही हैं । एक ऊंची लहर आई और लौटते समय सीप को भी अपने साथ बहा ले गई ।

तभी किसी ने कहा— "अरे, वह सीप कहां है, जिसके लिए तुम लोग लड़ रहे हो ?"

रामेश्वर और विशाल ने देखा कि सचमुच जिस सीप के लिए लड़ रहे थे, उसे तो समुद्र बहा ले गया था । दोनों चुपचाप खड़े रह गए । धीरे-धीरे भीड़ भी बिखरने लगी ।

अब वे दोनों तट पर अकेले खड़े थे । दोनों को लग रहा था कि उन्होंने कुछ खो दिया है । कुछ देर बाद वे अपने-अपने रास्ते चले गए ।

रामेश्वर अगली सुबह समुद्र तट पर घूमने गया, वही पुराना हर दिन का वातावरण, पर उसका मन न लगा । दिमाग में एक ही विचार था— 'बहुत बड़ा नुकसान हो गया ।' थोड़ी देर बाद उसने विशाल को आते देखा । दोनों की नजरें मिलीं, पर दोनों ही चुप रहे । फिर विपरीत दिशाओं में चले गए । कई दिन तक ऐसा ही चलता रहा ।

फिर एक दिन सुबह रामेश्वर तट पर पहुंचा, तो उसने विशाल को टहलते हुए पाया । एकाएक विशाल लड़खड़ाया और गिर पड़ा । उसके गिरने से रामेश्वर को खुशी हुई, पर कुछ देर बाद भी जब विशाल न उठा, तो वह झिझकते हुए पास गया । विशाल बेहोश था । रामेश्वर लड़ाई भूल गया । उसने विशाल को कंधे पर उठाया और बस्ती की तरफ चल दिया । एक डाक्टर की दुकान पर ले गया । उपचार के बाद विशाल को होश आ गया । उसे पता चला कि रामेश्वर उठाकर वहां तक लाया है, तो चकित रह गया । पर कहा कुछ नहीं ।

अगली सुबह दोनों सागर तट पर फिर मिले, तो एक दूसरे को देखकर मुसकरा उठे । फिर तो ईर्ष्या की जगह दोस्ती हो गई । वह दोस्ती पक्की होती गई । सीप वाली बात चलती, तो दोनों ही हंस देते । कहते— "एक सीप गई तो गई, पर हमें मित्रता के मोती दे गई ।"

हम सब भी ऐसे मोती पा सकें, तो कितना अच्छा हो ।

तुम्हारे भइया

जय प्रकाश भारती

यज्ञदत्त एक गरीब ब्राह्मण था। नगर के बाहर जंगल में टूटा-फूटा एक शिवालय था। उसी का पुजारी था वह। मंदिर के पास ही उसकी झोंपड़ी थी, जिसमें वह सपरिवार रहता था। शिवालय में बहुत कम लोग आते थे। शिवरात्रि अथवा अन्य त्योहारों पर कुछ अधिक श्रद्धालु वहां आते, तो कुछ चढ़ावा एकत्र हो जाता था। उसी चढ़ावे से यज्ञदत्त साल भर तक अपने परिवार का भरण-पोषण करता था। उसकी पत्नी उसे समझाती— 'अब यह मंदिर छोड़, नगर के किसी बड़े मंदिर में चले जाना चाहिए।' पर पत्नी की बात पर यज्ञदत्त मुसकराकर कहता— "इसी मंदिर में मेरे पिता सूर्यदत्त पुजारी थे। उनके बाद यह जिम्मेदारी मुझ पर आ गई है। यहीं रहकर पूजा-अर्चना करूंगा।"

एक मुहर रोज

— कमला चमोला

पत्नी चिढ़कर बोली— "भगवान शिव ने तुम्हारे पिता को ही क्या दिया, जो तुम्हें देंगे!" पत्नी की बात पर यज्ञदत्त खामोश हो जाता। बोलकर वह झगड़े को और बढ़ाना नहीं चाहता था।

यज्ञदत्त बहुत विद्वान था। उसके पिता सूर्यदत्त उसे सभी वेद-शास्त्रों में पारंगत बना गए थे, किंतु लोग उसकी विद्वता से परिचित नहीं थे। एक दिन नगर सेठ विष्णुप्रिय वहां से गुजर रहा था। बरगद के नीचे टूटे-फूटे शिवालय के पास कुआं देख, वह वहां रुक गया। कुएं के शीतल जल से उसने स्नान किया। तब तक यज्ञदत्त एक दोने में कुछ जंगली फल और पानी ले आया। बोला— "सेठ जी, यहां इस वन में, मैं इन्हीं चीजों से आपका सत्कार कर सकता हूं।"

विष्णुप्रिय बोला— "पुजारी जी, फल ग्रहण करने से पहले मैं पूजा करना चाहता हूं। आज सोमवार है। माघ मास की पूर्णिमा भी है। मुझे विधि-विधान से पूजा करवाइए।"

यज्ञदत्त ने नगर सेठ के साथ बैठकर पूजा-आराधना की, शिव स्तोत्र पढ़ा। इसके बाद वह



सेठ जी को शिव पुराण की कथाएं सुनाने लगा। विष्णुप्रिय विस्मित रह गया। बोला— "पुजारी जी, आप तो गुदड़ी के लाल हैं। यहां जंगल में इस टूटे-फूटे शिवालय में क्यों अपनी विद्वता को बर्बाद कर रहे हैं? मैंने नगर में बड़ा ही भव्य एक शिवालय बनवाया है। पुजारी के रहने के लिए मंदिर के अहाते में सुंदर घर भी है। आप वहीं चलकर रहिए। मंदिर में प्रतिदिन सैंकड़ों भक्त आते हैं। सहस्त्रों रुपयों का चढ़ावा चढ़ता है। उस चढ़ावे पर आपका ही अधिकार होगा।"

"नहीं सेठ जी!"— यज्ञदत्त बोला— "मैं इस शिवालय को छोड़कर कहीं नहीं जाऊंगा।"

पुजारी की बात सुनकर सेठ निराश होकर चला गया। यज्ञदत्त की पत्नी क्रोधित होकर बोली— "तुमने तो घर आई लक्ष्मी ठुकरा दी। तुम जैसे आदमी के साथ रहकर मेरी जिंदगी बर्बाद हो गई।"

पत्नी की बात पर यज्ञदत्त ठंडी सांस भरकर कुएं के पास जाकर बैठ गया। शाम होने वाली थी। तभी एक बूढ़ा लाठी टेकता वहां आया।

बोला— "पुजारी जी, मुझे जरा पूजा करवा दीजिए। बड़ी दूर, नीचे घाटी से आया हूं।"

यज्ञदत्त ने बूढ़े को शिवालय में बैठा, विधि-विधान से पूजा करवाई। बूढ़े ने सोने की एक मुहर चढ़ाई और लाठी टेकता हुआ चला गया।

सोने की मुहर देखकर यज्ञदत्त और उसकी पत्नी की आंखें फटी रह गईं। आज तक किसी ने सोने की मुहर तो क्या, चांदी का रुपया तक नहीं चढ़ाया था। वहां पांच-दस पैसे ही चढ़ते थे। फटेहाल-से नजर आने वाले बूढ़े ने भला सोने की मुहर कैसे चढ़ा दी? यह दोनों की समझ में नहीं आ रहा था। यज्ञदत्त की पत्नी बोली— "हो सकता है, बूढ़े ने कोई मनौती मानी हो। वह पूरी हो गई हो, इसीलिए उसने सोने की मुहर चढ़ाई हो। जो भी हो। आप शहर जाकर खाने-पीने का कुछ सामान और बच्चों के कपड़े-लत्ते ले आइए। बरसों बाद भगवान शिव की कृपा से अच्छा खाने-पहनने को मिलेगा।"

यज्ञदत्त पत्नी की सलाह पर नगर में गया मुहर के बदले खाने-पीने की ढेर-सारी चीजें, कपड़े व घर के लिए बर्तन ले आया। अच्छा भोजन व कपड़े पाकर उसके बच्चे भी बहुत प्रसन्न थे।

अगले दिन शाम को फिर वही बूढ़ा लाठी टेकता हुआ आया। यज्ञदत्त से बोला— "चलिए पुजारी जी, मुझे पूजा करवा दीजिए।" यज्ञदत्त ने फिर विधि-विधान से बूढ़े को पूजा-अर्चना कराई। पूजा के बाद बूढ़े ने माथा टेका और सोने की एक मुहर फिर चढ़ा दी। इसके बाद वह लाठी टेकता हुआ जैसे आया था, वैसे ही चला गया। यज्ञदत्त फिर हैरान रह गया। उसकी पत्नी के हर्ष का पारावार न था। खुशी से बावली हो वह बोली— "बूढ़ा तो हमारे दिन ही पलटने आ गया।"

अब तो यह रोज की बात हो गई। बूढ़ा रोज शाम को आता। पूजा करता और सोने की एक मुहर चढ़ाकर चला जाता।

इसी तरह एक वर्ष गुजर गया। बूढ़ा उसी तरह मुहरें चढ़ाता रहा। यज्ञदत्त के पास काफी धन एकत्र हो गया। उसके परिवार के दिन भी बदल गए। पत्नी और बच्चे अब बड़े प्रसन्न रहते थे। परंतु यज्ञदत्त अब भी पहले-सा सरल व सीधा था। उसी तरह से शिव की अर्चना करता था।

एक दिन जब बूढ़ा पूजा के बाद मुहर चढ़ाकर जाने लगा, तो यज्ञदत्त बोला— "बाबा, आपकी कृपा से मेरे पास काफी धन हो गया है। मैं सोच रहा हूं, उन पैसों से मैं इस शिवालय का जीर्णोद्धार करवा दूं। यहां सुंदर मंदिर बनवाऊं।"

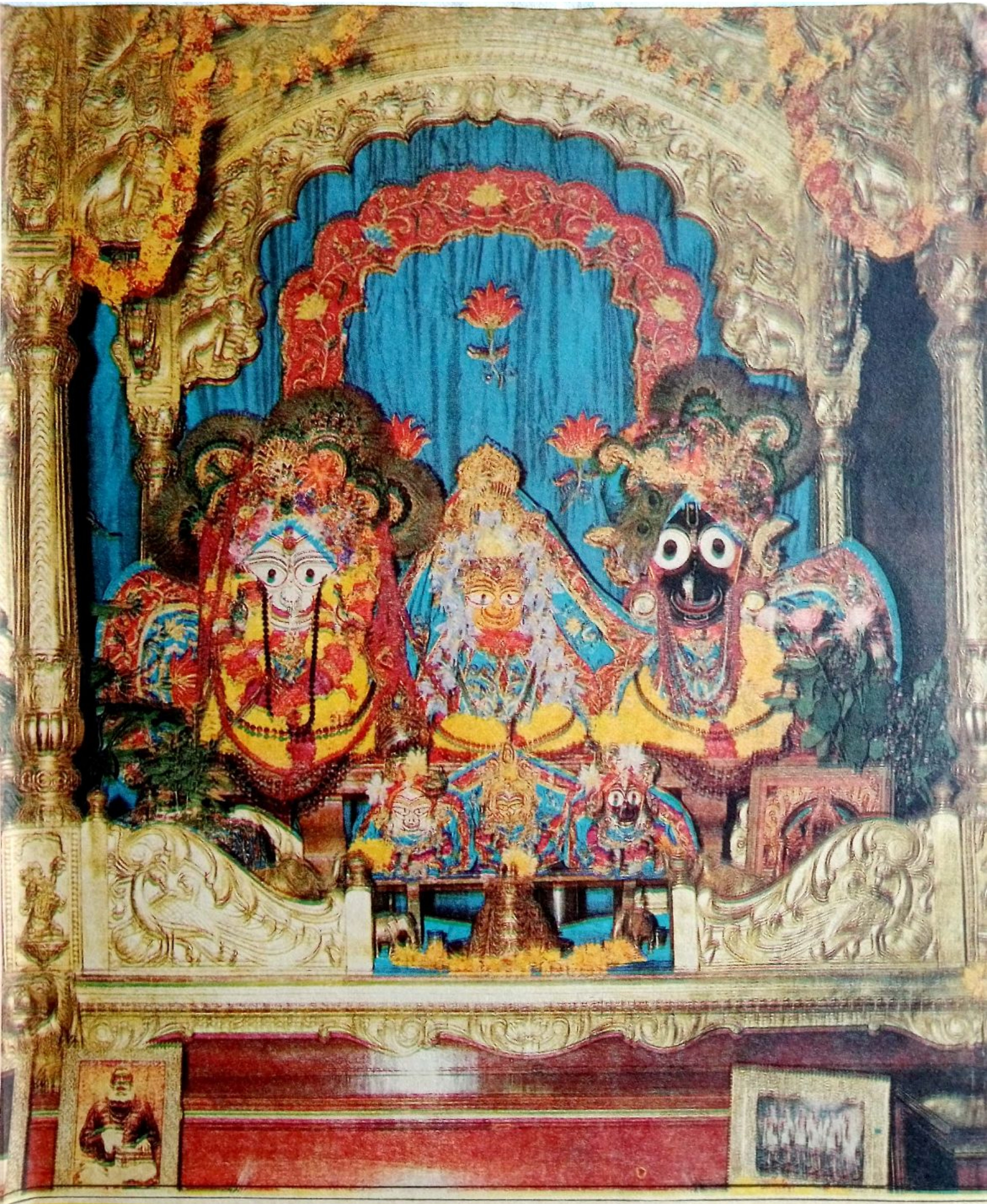
यज्ञदत्त की बात सुनकर बूढ़ा बोला— "उन पैसों को मंदिर बनाने में क्यों खर्च कर रहे हो? उन्हें अपने पास रखो। तुम्हारे काम आते रहेंगे।"

— "नहीं बाबा, मेरा गुजारा तो आपकी दया से चल ही रहा है। वह धन मुझे इस मंदिर के कारण ही मिला है। इसलिए शिवालय बनवाना मेरा कर्तव्य है।"

यज्ञदत्त ने दूर-दूर से अच्छे-अच्छे कारीगर बुलवाकर मंदिर का निर्माण कार्य आरंभ करा दिया। बूढ़ा अब भी प्रतिदिन पहले की तरह वहां आकर एक मुहर चढ़ाता था। लगभग चार माह में एक भव्य और विशाल शिव मंदिर वहां बनकर तैयार हो गया। जिस दिन शिवलिंग की स्थापना होनी थी, उसके एक दिन पहले यज्ञदत्त ने उस बूढ़े से कहा— "बाबा, कल मंदिर में पहली पूजा आप ही करेंगे। आपकी ही कृपा से यह मंदिर बन पाया है। आप सुबह आ जाना।"

यज्ञदत्त की बात पर बूढ़ा मुसकराता हुआ चला गया। अगले दिन वहां अपार जन-समूह जुटा हुआ था। लोग दूर-दूर से उस भव्य और सुंदर मंदिर को देखने आ रहे थे। परंतु बूढ़े बाबा का कहीं पता नहीं था। शाम हो गई, पर बूढ़ा नहीं आया। इसके बाद कई दिन गुजर गए, बूढ़ा नहीं आया। यज्ञदत्त अपनी पत्नी से बोला— "रोज यहां सैकड़ों दर्शनार्थी आने लगे हैं, परंतु बूढ़े बाबा का कहीं पता नहीं। कहीं वह बीमार तो न हो गए हों। मैं आज घाटी में जाकर उन्हें देखता हूं।"

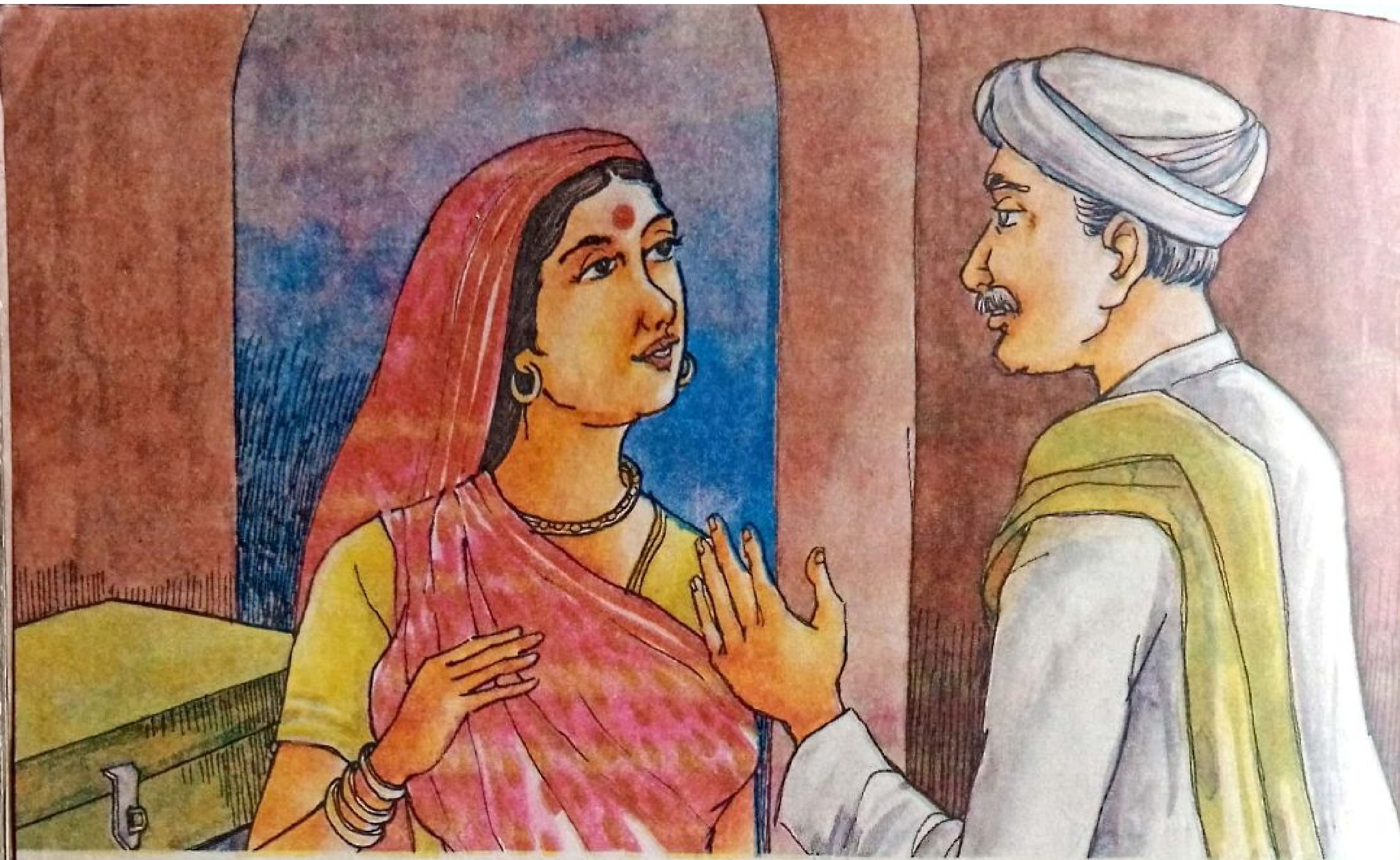
यज्ञदत्त घाटी में उन्हें देखने गया, पर वहां न बूढ़ा था, न उसकी झोंपड़ी। चारों ओर सपाट जमीन थी। यज्ञदत्त समझ गया कि बूढ़ा कोई साधारण आदमी नहीं था। सोच-सोचकर उसकी आंखों से आनंद के आंसू बहने लगे।



नंदन एलबम : ६६

बलराम, सुभद्रा, जगन्नाथजी

हरे राम हरे कृष्ण मंदिर, ज्यूरिख (स्विटजरलैंड)



छोटी बहू

—डा. सत्येंद्र वर्मा

रमापति नाम का एक व्यापारी था । उसके चार बेटे थे — विनीत, अजीत, सुनीत और पुनीत । रमापति की पत्नी का नाम था राधिका । बेटे बड़े होते गए और अपने पिता के व्यापार में हाथ बंटाने लगे । चौथा बेटा पुनीत जब बड़ा होकर अपने पिता की दुकान पर जाने लगा, तब राधिका ने रमापति से कहा — "अब हमें अपने बेटों का विवाह कर देना चाहिए । बहुओं के आने से हमारा घर भर जाएगा । मुझे भी घर-गृहस्थी के कामों में सहायता मिले ।"

रमापति ने राधिका के तर्क को उचित माना । अपने सबसे बड़े बेटे विनीत का विवाह बड़ी धूम-धाम से कर दिया । विनीत की बहू रूपवती थी । वह अपने साथ बहुत सारा साज-सामान और धन लेकर आई थी । बहू के घर आने के बाद, एक दिन रमापति ने राधिका को एक चंद्रहार देते हुए कहा — "इसे उपहार स्वरूप बहू को दे दो ।" राधिका ने चंद्रहार बहू को दे दिया । बहू ने चंद्रहार को खुशी-खुशी अपने पास रख लिया ।

कुछ दिन के बाद रमापति ने राधिका से पूछा — "बहू तुम्हें कैसी लगी ?"

राधिका ने कहा — "बहू अच्छी है, सुंदर है । धीरे-धीरे घर के कामों में भी हाथ बंटाने लगेगी ।"

रमापति ने पूछा — "क्या उसने चंद्रहार स्वीकार कर लिया ?"

राधिका ने कहा — "क्यों ? मेरे देने पर बहू को चंद्रहार स्वीकार करना ही था ।"

रमापति कुछ देर तक सोचता रहा । फिर बोला— "अब मैं शीघ्र ही अजीत का विवाह करूंगा । देखूं, उसकी पत्नी कैसी आती है ?"

राधिका ने पूछा — "ऐसा क्यों ?"

तब रमापति ने गंभीरता से उत्तर दिया — "रूप और धन ही सब कुछ नहीं होता ।"

कुछ ही दिनों बाद, उसने अपने दूसरे बेटे अजीत का विवाह कर दिया । दूसरी बहू के आने के कुछ ही दिन के बाद, व्यापारी ने राधिका के हाथ में एक चंद्रहार दिया । बोला— "यह तुम अपनी तरफ से

बहू को दे दो।" राधिका ने चंद्रहार बहू को दे दिया। दूसरी बहू ने भी प्रसन्नता के साथ चंद्रहार को स्वीकार कर लिया। सास के चरण छुए।

कुछ दिन बाद रमापति ने अपनी पत्नी से पूछा — "तुम्हें दूसरी बहू कैसी लगी ?" राधिका ने कहा — "बहू तो मुझे बहुत अच्छी लगी। सदा मुसकराती रहती है, विनम्र भी है।"

व्यापारी ने पूछा— "क्या बहू ने चंद्रहार स्वीकार कर लिया ?"

राधिका ने कहा — "हां-हां, स्वीकार क्यों न करती ! मेरी दोनों बहुएं बेटियों के समान हैं। बहुत अच्छी हैं। आप पता नहीं क्या सोचते हैं ?"

रमापति बोला — "मैं अब शीघ्र ही सुनीत का विवाह करूंगा। देखें, उसके भाग्य में क्या है ?"

राधिका ने अपने पति से कहा — "आप क्यों ऐसा सोचते हैं ? मुझे भी तो कुछ बताइए।" व्यापारी ने कहा— "मृदुभाषी और विनम्र होना ही सब कुछ नहीं है, और भी गुण होने चाहिएं।"

फिर रमापति ने तीसरे बेटे सुनीत का विवाह कर दिया। इस बार उसने बहू के चयन में विशेष सावधानी दिखाई। हर बार की तरह इस बार भी बहू के आने के कुछ दिन बाद व्यापारी ने राधिका को एक चंद्रहार दिया। वह बोला — "बहू को अपनी तरफ से यह चंद्रहार भेंट कर दो।"

राधिका मन ही मन खीझ उठी। वह समझ नहीं पा रही थी, उसके पति आखिर चाहते क्या हैं ? चंद्रहार देकर वह परखना क्या चाहते हैं ? राधिका ने चंद्रहार लिया और अपनी नई बहू के गले में डाल दिया।

चंद्रहार देने के कुछ दिन बाद, व्यापारी ने राधिका से पूछा — "बहू तुम्हें कैसी लगी ?"

राधिका ने कहा— "यह बहू तो मुझे बहुत ही अच्छी लगी। मेरी तो तीनों ही बहुएं अच्छी हैं। आप ही न जाने इनमें क्या खोट पाते हैं ?"

व्यापारी ने पूछा— "क्या बहू ने चंद्रहार ले लिया ?"

राधिका ने कहा — "नई बहू है। जो कुछ हम आशीर्वाद स्वरूप देंगे, वही वह स्वीकार करेगी। चंद्रहार भी मूल्यवान और सुंदर है। उसे पाकर कौन मुग्ध नहीं हो जाएगा ?"

रमापति ने कहा — "यह तो समय ही बताएगा।"

कुछ ही समय बाद, व्यापारी ने सबसे छोटे बेटे पुनीत का विवाह कर दिया। रमापति को विश्वास था कि इस बार वह अपने लक्ष्य में अवश्य सफल होगा। लड़की के घर वाले निर्धन, किंतु संस्कारशील थे। रमापति ने दहेज में भी कुछ नहीं लिया।

छोटी बहू के आगमन के कुछ दिन बाद, व्यापारी ने पत्नी को पुनः एक चंद्रहार दिया और कहा — "इस चंद्रहार को अपने हाथों से बहू के गले में पहना दो।" दो दिन बीते, व्यापारी ने राधिका से फिर पूछा— "बहू तुम्हें कैसी लगी ?"

राधिका बोली — "बहू का रंग सांवला है, कद भी छोटा है। दहेज में भी आपने कुछ नहीं लिया।





किंतु ईश्वर का दिया हम लोगों के पास सभी कुछ तो है।''

व्यापारी ने उत्सुकता के साथ अपनी पत्नी से पूछा — ''बहू ने चंद्रहार ले लिया ?''

राधिका ने कहा — ''बहू ने चंद्रहार नहीं लिया।''

—''फिर बहू ने क्या कहा ?''

''उसने कहा कि माता जी मैं चंद्रहार लेकर क्या करूंगी। इसे आप अपने पास ही रखिए। मेरे पास रहे या आपके पास, एक ही बात है। मुझे तो बस आप लोगों का स्नेह चाहिए। मैं तन-मन से आप लोगों की सेवा करना चाहती हूं।''

रमापति प्रसन्नता से झूम उठा। उसने कहा — ''यही बहू मेरे विचारों के अनुरूप है। यही बहू हम दोनों का साथ देगी।''

कुछ वर्षों बाद समय का पहिया ऐसा घूमा कि रमापति का दिवाला निकल गया। वह भिखारी के समान हो गया। तीनों बड़ी बहुएं अपने-अपने पति को किसी न किसी बहाने से मायके ले गईं, किंतु सबसे छोटी बहू नहीं गई।

एक दिन रमापति ने छोटी बहू से कहा— ''बेटी, मेरा समय खराब है। तुम भी अपने मायके चली जाओ।''

वह बात सुनकर छोटी बहू ने कहा — ''मैं आपकी बेटी हूं। आप मुझे मायके जाने की सलाह देकर दुखी कर रहे हैं। अब तक तो मैंने भी खूब सुख भोगा। यही अवसर है, जब मैं आप लोगों की सेवा कर सकती हूं।''

बहू की भावनाओं से रमापति का मन द्रवित हो गया। उसने बहू को फिर समझाया— ''मेरे पास कुछ भी नहीं है। रोटी-पानी चलाना कठिन हो रहा है। तुम अपने मायके चली जाओ।'' छोटी बहू अपनी बात पर दृढ़ रही। उसने अपने गले से अपना मंगलसूत्र निकालकर देते हुए कहा — ''पिता जी, इस मंगलसूत्र को बेचकर आप कोई नया काम आरम्भ कीजिए। मुझे विश्वास है, हमारे दिन अवश्य बदलेंगे।''

छोटी बहू की बातों से रमापति की आंखों में आंसू छलक आए। उसने बोझिल मन से मंगलसूत्र ले लिया। कहा — ''तुमने तो मेरा दिया हुआ चंद्रहार भी नहीं लिया। मुझे अपना मंगलसूत्र दे रही हो।'' छोटी बहू ने कहा — ''पिता जी, आपका दुःख हम सभी का दुःख है और आपका सुख हमारा सभी का सुख है। धैर्य रखिए, सब ठीक हो जाएगा।''

रमापति मंगलसूत्र लेकर बाजार गया। मंगलसूत्र बेचने से उसे जो पैसा मिला, उससे उसने फेरी लगाने का काम शुरू कर दिया। रमापति और पुनीत दोनों ने मिलकर कठिन परिश्रम किया। कुछ ही दिनों में समय के पहिए ने फिर करवट ली। परिश्रम ने अपना रंग दिखाया। व्यापार में लाभ होने लगा। रमापति की सम्पन्नता लौट आई। छोटी बहू ने चमत्कार कर दिखाया था। ●



खाना नहीं खाऊंगा

— देवेन्द्र सत्यार्थी

आज भी उसकी याद आती है, तो आंखें भीग जाती हैं। बचपन में जितना प्यार उसने दिया, जितने किस्से-कहानियां सुनाईं, जितनी बातें बताईं, वे क्या भूलने की चीजें हैं !

'फत्तू !' छोटा-सा नाम था उसका। आज से सत्तर बरस पहले का उसका चेहरा मेरी आंखों के आगे नाचता है। तब मैं शायद छह-सात बरस का था। दूसरी कक्षा में पढ़ता होऊंगा। और वह था नौ-दस बरस का, पर पढ़ता नहीं था। पढ़ने के लिए भला स्कूल कौन भेजता उसे ! उसके मां-बाप जो नहीं थे। भाई-बहन भी नहीं थे। एक अनाथ बच्चे की कौन परवाह करता ? हां, उसी के गांव का दूर का एक रिश्तेदार था गिरधर। वही उसे अपने साथ पंजाब ले आया था। हमारे कस्बे में काम करने आया गिरधर, तो साथ में फत्तू भी था। दिन भर खेलता रहता। प्यारी-प्यारी बातें करता। देखने में सांवले रंग का, मगर बहुत खूबसूरत।

मैंने उसे गिल्ली-डंडा खेलने के लिए बुलाया। खेल में उसने मुझे खूब पदाया। गिल्ली के पीछे-पीछे भागते पसीने-पसीने हो गया था मैं। चिढ़ा हुआ तो था ही। उसका नाम पता चला, तो मैंने भी चिढ़ाने की गरज से कहा— "फत्तू खाए नौ मन सत्तू !"

हाथ में डंडा लिए वह मेरी ओर लपका। आगे-आगे मैं, पीछे वह। खूब तेज दौड़ा मैं, मगर फत्तू से कैसे बच पाता ? आखिर उसने पकड़ ही तो लिया। घबराहट के मारे मेरी आंखों से आंसू निकल आए। तब फत्तू हंसा। उसने मुझे भी हंसाने, बहलाने की कोशिश की।

उसके बाद फत्तू जब-जब मिलता, खूब किस्से-कहानियां सुनाता। तरह-तरह के पेड़, फूल, चिड़ियां और तारों के बारे में पहले-पहल फत्तू से ही पता चला। इन चीजों के बारे में न कोई घर में बताता था, न स्कूल में। इसलिए फत्तू मेरा सखा ही नहीं, गाइड भी बन गया।

और फिर संयोग ऐसा हुआ कि फत्तू हमारे घर में, घर के सदस्य की ही तरह रहने लगा। हुआ यह कि एक दिन गिरधर अपने गांव गया। फत्तू पीछे से अकेला रह गया। अब वह अक्सर हमारे घर आ जाता। एक दिन बातों-बातों में पिता जी ने पूछ लिया— "फत्तू, काम करेगा हमारे घर ?"

फत्तू ने सिर झुका दिया। बोला— "हां।"

— "क्या काम कर सकता है रे ?"

— "आपके गाय-भैंस चरा दिया करूंगा, पिता जी !"

— "अच्छा, कितने रुपए लेगा महीने के।"

सुनकर फत्तू के चेहरे पर एक रंग आता, एक जाता। अचानक गम्भीर होकर बोला— "नहीं, मैं काम नहीं करूंगा।"

"क्यों ?... क्यों ?"— पिता जी हैरान।

"इसलिए कि मैं नौकर बनकर काम नहीं करना चाहता। तनखा नहीं लूंगा। आप घर का लड़का समझें, तो काम करने को तैयार हूं।"

पिता जी ने फत्तू के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा — "ठीक है फत्तू, आज से तू इस घर का है। जैसे हम रहते हैं, वैसे ही तू रहेगा।"

बस, उसी दिन से फत्तू सारे घर भर का लाड़ला हो

गया। वह गाय-भैंसे चराने जाता, दूध निकालता। और भी घर-बाहर के सारे काम दौड़-दौड़कर करता। जो भी काम अटकता, घर भर में फत्तू की पुकार लगती।

लेकिन वही फत्तू जो घर भर को खुश रखता था, एक दिन बहुत उदास दिखाई पड़ा।

"क्या बात है फत्तू? पिता जी ने डांटा है क्या?"— मैंने सहमकर पूछा।

— "नहीं। पिता जी डांटें, तो कोई क्यों रोएगा? उन्हें अधिकार है..."

— "तो?"

फत्तू ने जवाब नहीं दिया। बस, चुपचाप मुंह फेर लिया। उसकी आंखों में आंसू थे।

मैं समझ गया, जरूर कोई गम्भीर बात है। लेकिन स्कूल जाने का समय हो गया था। मैं चुपचाप स्कूल चला गया।

लौटा तो देखा, फत्तू जहां सुबह बैठा था, अब भी वहीं बैठा है। न गाय-भैंस चराने गया, न शायद कोई और काम किया। घर में खाना भी नहीं बना था।

पूछने पर मां बोलीं— "फत्तू ने खाना नहीं खाया। फिर कोई और कैसे खाता!"

जैसे ही मुझे पता चला, मैं दौड़ा-दौड़ा फत्तू के पास गया। पूछा— "फत्तू, मुझे बताओ न, खाना क्यों नहीं खाया? सब परेशान हैं..."

"मैंने उन्हें बता दिया है देव!"— फत्तू धीरे-से, रोती हुई आवाज में बोला।

— "क्या?"

— "यही कि चाचा भामा को नहीं बेचेंगे। अगर बेचेंगे, तो मैं खाना नहीं खाऊंगा।"

"कौन बेच रहा है भामा को?"— मैंने उत्तेजित होकर पूछा।

भामा हमारे घर की सबसे अच्छी दुधारू भैंस थी। खूब दूध देती, सीधी-सी। इतनी अच्छी नस्ल की भैंस गांव भर में दूसरी न थी। फत्तू से खूब हिली मिली थी। फत्तू भी उसे खूब प्यार से नहलाता, अपने हाथ से चारा खिलाता।

भामा को बेचने की मैं कल्पना ही नहीं कर सकता था। तो फत्तू की जिद ठीक थी। मैंने कहा— "तू चिंता न कर फत्तू! मैं मां से कहूंगा। मां चाचा को डांटेंगी। भामा बिकेगी नहीं, हमारे घर रहेगी।"

फत्तू कुछ देर चुप रहा। फिर बोला— "मैंने बिशेशर चाचा को दौलतराम से बात करते सुना है।"

चाचा लालची थे। घर में सबको यह बात पता थी। फिर घर में चलती भी उन्हीं की थी, क्योंकि वह तेज-तर्रार थे। सभी उनका रोब मानते। पिता जी सीधे-सादे थे। जो कुछ कहो, आराम से मान जाते थे।

मैंने जाकर मां से कहा— "चाचा से कहो न मां, भामा को न बेचें।"

इतने में चाचा भी न जाने कहां से आ गए। बोले— "कितने तो रुपए मिल रहे हैं।"

मैं चुप। इतने में फत्तू भी आ गया। बोला— "लेकिन चाचा जी, यह भी तो सोचिए, भामा हमारे घर भर को प्यारी है। क्या घर के किसी आदमी को बेचा जा सकता है?"

— "तू ज्यादा भाषण न पिला।"—चाचा खीजकर बोले— "हम तो यही जानते हैं कि गाय-भैंसें बिकती हैं, बिकने के लिए ही होती हैं।"

फत्तू ने कुछ कहना चाहा, तो चाचा बोले—



''ज्यादा मेरे मुंह लगने की जरूरत नहीं है। घर के दूसरे लोगों ने ज्यादा लाड़ करके तुझे बिगाड़ रखा है। लेकिन मैं तेरी बातों में नहीं आने वाला....''

सुनकर फत्तू चुपचाप आंगन के पीछे वाले कमरे में जाकर बैठ गया।

हारकर मैंने एक और रास्ता निकाला। पड़ोस में लक्ष्मी दादी रहती थीं। मुझे खूब लाड़ करतीं। दौड़ा-दौड़ा उनके घर गया। बोला— ''चूरी बना दो, दादी मां! फत्तू को खिलानी है।''

दादी चुप रहीं। उन्हें सारी बात पता थी। फिर धीरे से बोलीं— ''मैं जानती हूं फत्तू को। जिद का पक्का है।''

उन्होंने ठीक कहा था— फत्तू ने चूरी को छुआ तक नहीं।

मैं चूरी का डिब्बा लक्ष्मी दादी को वापस कर आया। तभी बैठक से चाचा उठकर आए। आंगन में आकर जोर से बोले— ''ठीक है, खाना बनाओ। सबसे पहले फत्तू खाएगा, फिर हम लोग। भामा को नहीं बेचेंगे। मैंने दौलतराम को बुलाकर कह दिया है।''

अब तो घर भर की प्रसन्नता का ठिकाना नहीं था। फत्तू के चेहरे पर भी मुसकान आ गई। सबसे ज्यादा खुश थी मां।

खीर बनाकर उन्होंने सबसे पहले अपने हाथ से फत्तू को खिलाई। फिर घर भर के लोगों ने खाया। खूब बातें होती रहीं। गपशप, हंसी-मजाक करते-करते बहुत देर हो गई। सब सोने चले गए।

अचानक आधी रात को फत्तू की आवाज सुनाई दी— ''भामा...कोई ले गया भामा को ... मुझे सपना आया है...।''

''नहीं फत्तू, कैसी बात करता है रे!'' — मां और घर के दूसरे लोगों ने समझाने की बहुत कोशिश की, पर फत्तू को जैसे चैन ही नहीं पड़ रहा था। दौड़ा-दौड़ा वहां गया, जहां गाय-भैंसें बंधती थीं। देखा, वह खूंटा खाली है, जहां दिन में भामा बंधती थी।



फत्तू की दोनों आंखों से आंसू की धाराएं बहने लगीं। हिचकियां बंध गईं। घर भर के लोगों ने समझाया। पिता जी बोले— ''एक भैंस ही तो थी... हम और ले आएंगे। घर में वैसी ही कितनी भैंसें हैं...। एक भैंस के लिए रो रहा है पागल!''

पर फत्तू था कि उसकी हिचकियां थम ही नहीं रही थीं। मां ने कहा— ''फत्तू, चुप कर। मैं वही भैंस ले आऊंगी दौलतराम से। चाहे कितने ही रुपए क्यों न देने पड़ें।''

फत्तू जवाब में एक ही बात कहता— ''धोखा क्यों किया आपने मेरे साथ? भामा को बेचना ही था, तो मुझे झूठा दिलासा क्यों दिया?''

मां ने जैसे-तैसे उसे सोने के लिए राजी किया। हम सभी सो गए, लेकिन फत्तू ... ! भला, उसे नींद कैसे आती। देर तक उसकी सिसकियां सुनाई देती रहीं।

सुबह उठने पर घर में लोगों ने देखा, फत्तू नहीं है। वह आधी रात को ही उठकर कहीं चला गया था।

बहुत भाग-दौड़ की, लेकिन फत्तू का कुछ पता नहीं चला। हां, मां कुछ रुपए अपनी ओर से मिलाकर भामा को तीसरे ही दिन वापस ले आईं। जब-जब भामा को देखतीं, उन्हें फत्तू की याद आती और आंखें भर आती। कहतीं— ''बेटे से बढ़कर था मेरे लिए फत्तू। पता नहीं कहां चला गया!'' ●

लालची सूरज

—दिलीप जैन

बहुत पहले सांपों के चार पैर हुआ करते थे। इन्हीं दिनों की बात है। किसी गांव में एक गरीब लकड़हारा रहता था। उसका नाम था सूरज।

एक शाम सूरज घर जा रहा था। कड़ाके की ठंड थी। रास्ते में उसने देखा, एक बड़ा सांप ठंड के कारण सिकुड़ा, बेजान-सा पड़ा है। सूरज को दया आ गई। उसने सांप को उठाकर अपने फटे कम्बल में लपेट लिया। घर पहुंचकर आग के पास रख दिया।

गरमी मिलने से सांप का जाड़ा दूर हो गया। उसने सूरज को धन्यवाद देते हुए कहा— "मैं सांपों का राजा हूं। मेरी जान बचाकर तुमने मुझ पर बहुत उपकार किया। मैं तुम्हें वरदान देता हूं। आज से तुम सांपों के चलने की आवाज सुन सकोगे। अब तुम्हें कोई सांप काट भी नहीं पाएगा।" यह कहकर नागराज वहां से चला गया।

अब सूरज जब भी जंगल में जाता, चारों ओर सांपों के पैरों की आवाज उसे सुनाई देती। उससे वह सांपों से बचकर चलता, मगर सारे दिन सांपों की पदचाप सुन-सुनकर परेशान भी हो उठा।

उसने एक सांप को पकड़ लिया। उसे घर ले आया। फिर संपेरे के हाथ बेच दिया। दूसरे दिन उसने दो सांप पकड़े। उन्हें भी ऊंचे दामों पर बेच दिया। अब तो सूरज रोज ही सांप पकड़ने लगा। उसका लालच बढ़ता जा रहा था। नागराज के वरदान के कारण सांप उसे काट नहीं सकते थे।

कुछ ही दिन में सूरज ने सांपों का व्यापार शुरू कर दिया। इस व्यापार से वह धनवान हो गया। खतरनाक से खतरनाक सांप को वह बिना डरे पकड़ लेता था।

अब सांपों के बीच तहलका मच गया। वे नागराज के पास फरियाद लेकर पहुंचे— "महाराज, यदि सूरज से वरदान वापस न लिया, तो सांपों का वंश नष्ट होते देर न लगेगी।"

नागराज सूरज के बारे में सुनकर बहुत दुखी हुए। बोले— "मैंने सूरज को एक रहम दिल इंसान समझा था, इसीलिए उसे वरदान दिया था। पर उसने विश्वासघात किया है।"

"ठीक है, आप अपना वरदान वापस ले लें। हम उसे जिंदा नहीं छोड़ेंगे।"— सांपों ने कहा

"मैं ऐसा नहीं कर सकता। दिया हुआ वरदान वापस नहीं लिया जा सकता। मैं उससे बात करके समझाने की कोशिश करूंगा। मुझे आशा है, वह सीधी राह पर आ जाएगा।"— नागराज बोला।

नागराज सूरज से मिलने उसके घर आया। उस समय वह आराम से लेटा था। नागराज की पदचाप दूर से ही सुन, बोला— "अच्छा, आज सांप स्वयं मेरे घर ही आ गया। चलो, मुझे पकड़ने नहीं जाना पड़ेगा।"

नागराज ने कहा— "लगता है, तुमने मुझे पहचाना नहीं। मैं नागराज हूं। एक दिन तुमने मेरी जान बचाई थी, इसीलिए मैंने वरदान दिया था। लेकिन तुम उसका दुरुपयोग कर रहे हो। यह ठीक नहीं।"

नागराज की बात सुन, सूरज बहुत जोर से हंसा। बोला— "क्या तुम मुझे इतना मूर्ख समझते हो ?



तुम्हारी बात मानकर मैं अपना कारोबार चौपट करने वाला नहीं। आज तो मैं तुम्हें भी पकड़ लूंगा। तुम मुझसे बचकर नहीं जा सकते।" यह कह, सूरज नागराज की ओर लपका। नागराज बिजली की-सी फुर्ती से भाग निकला।

लौटकर नागराज ने अपने साथियों से कहा— "सूरज लालची है। वह मानने वाला नहीं। वह तो मुझे भी पकड़ना चाहता है। चलो, हम नाग देवता की शरण में चलते हैं। वह जरूर कोई उपाय सुझाएंगे।"

सब सांप इकट्ठे होकर नाग देवता के पास गए। सारी बात सुन, उन्होंने कहा— "नागराज, बिना सोचे समझे ऐसा वरदान देकर तुमने बहुत गलत काम किया। फिर भी तुम्हारी रक्षा के लिए कुछ न कुछ तो करना ही पड़ेगा। आज से सूरज को सांपों के चलने की आवाज सुनाई नहीं देगी।"

"क्या आप मेरा वरदान सूरज से वापस ले लेंगे?"— नागराज ने पूछा।

"नहीं, वरदान तो वापस नहीं ले सकता, पर उसे बेकार जरूर कर सकता हूं। उसका एक ही तरीका है। आज से सांपों के पैर नहीं होंगे।"— नागदेवता ने कहा।

यह सुनकर सांप बहुत चकित हुए। बोले— "फिर हम चलेंगे कैसे?"

नाग देवता मुसकराकर बोले— "अब तुम बिना पैरों के भी बहुत तेज चल सकोगे।"

उस दिन के बाद सांपों के पैर गायब हो गए। जब सांपों के पैर ही नहीं रहे, तो सूरज उनके चलने की आवाज कहां से सुन पाता? अपनी सूझबूझ से नाग देवता ने सूरज से सांपों को नष्ट होने से बचा लिया। ●



एक सौ पांच

—उमेशचन्द्र चतुर्वेदी

बात उस समय की है, जब पांडव जुए में हार, शर्त के अनुसार छिपकर दंडक वन में रह रहे थे। इस वनवास में भी उन्हें चैन नहीं था। दुर्योधन सदा अपनी सेना के साथ उनको खोजता फिरता था।

दुर्योधन की यह दुष्ट प्रकृति तथा धमा चौकड़ी गंधर्वराज चित्रसेन को अच्छी नहीं लगती थी। चित्रसेन अर्जुन का प्रिय मित्र भी था। अतः अपने मित्र को किसी से तंग होते देखकर उसका क्रोधित होना स्वाभाविक ही था। उसने अर्जुन के इस दुश्मन भाई को दंड देने का निश्चय किया।

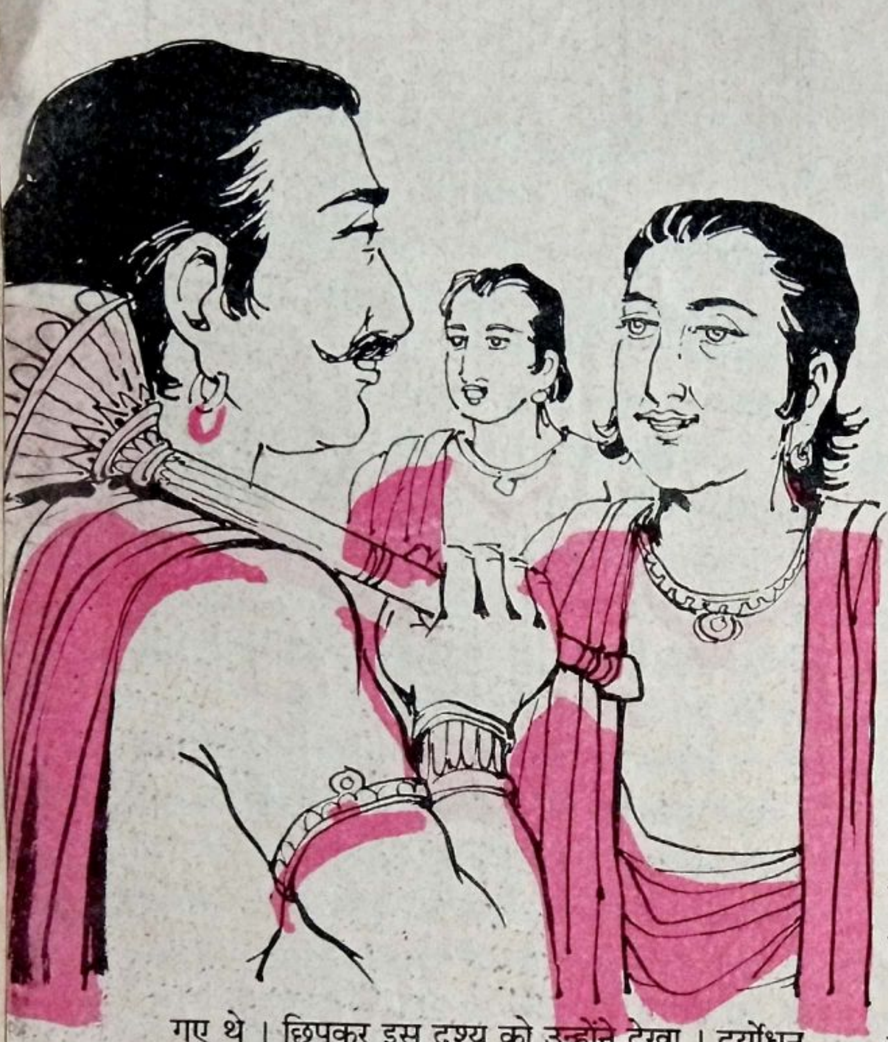
वसंत ऋतु आने पर एक दिन उसे अपने गुप्तचरों से सूचना मिली कि दुर्योधन पांडवों की खोज में इधर ही आ रहा है। दुर्योधन को सबक सिखाने के लिए चित्रसेन ने अपने दरबारियों की बैठक बुलाई। मंत्रियों तथा सलाहकारों से मशविरा करके उसने तत्काल दुर्योधन को पकड़ने का निश्चय किया।

दुर्योधन से चित्रसेन की कोई दुश्मनी नहीं थी। उससे लड़ाई का बहाना खोजा गया। दुर्योधन जिस रास्ते से आ रहा था, उसी की बगल में पुष्कर सरोवर था। चित्रसेन उसी सरोवर में अपनी पत्नी के साथ स्नान करने लगा। कुछ ही देर में दुर्योधन वहां आ पहुंचा। उसने चित्रसेन को नहाते देखा, तो हंस पड़ा। कुछ अशिष्ट शब्द भी कहे।

फिर क्या था। पुष्कर के आसपास छिपी गंधर्व सेना दुर्योधन की सेना पर टूट पड़ी। दोनों सेनाओं में घमासान युद्ध होने लगा। लेकिन गंधर्वों के आगे कौरव टिक न सके। दुर्योधन भागने लगा, तो चित्रसेन ने अपने योद्धाओं को आदेश दिया— "पकड़ लो इस दुष्ट को।"

दुर्योधन पकड़ा गया। उसे बंदी बनाकर चित्रसेन अपने देश की ओर लौट पड़ा।

गंधर्वों तथा कौरवों की इस लड़ाई को भीम ने भी देखा था। उस समय वह पानी लाने उसी सरोवर पर



गए थे। छिपकर इस दृश्य को उन्होंने देखा। दुर्योधन की इस दशा पर वह अत्यंत प्रसन्नथे। जल्दी से पानी भरा और कुटिया की ओर दौड़ पड़े। वह जल्दी से जल्दी यह सुखद समाचार अपने भाइयों को सुनाना चाहते थे।

कुटिया पर पहुंचकर उन्होंने पानी का बर्तन रख दिया। हांफते हुए युधिष्ठिर से बोले— "भैया, एक खुश खबरी है।"

"कैसी खुशखबरी ?"— युधिष्ठिर ने पूछा।

—"जब मैं पानी लेने गया, तो देखा कि गंधर्वराज चित्रसेन और दुर्योधन के बीच युद्ध हो रहा था।"

"फिर क्या हुआ ?"— युधिष्ठिर की आंखों में चिंता के भाव थे। तब तक अन्य तीनों भाई अर्जुन, नकुल और सहदेव भी वहां आ पहुंचे थे।

—"फिर चित्रसेन दुर्योधन को पकड़कर अपने देश ले गया। अब हमें कोई...."

"...क्या ! "— युधिष्ठिर का मुंह खुला रह गया।

तभी एक व्यक्ति— 'महाराज की जय हो !' कहता हुआ वहां पहुंचा। वह हांफ रहा था। युधिष्ठिर ने उससे पूछा— "शांत हो दूत, क्या बात है ?"

—"महाराज, आपके अनुज कौरव नरेश दुर्योधन को गंधर्व नरेश पकड़ ले गए हैं। आप उनकी रक्षा करें।"

दूत के इस वाक्य से भीम बिफर उठे — "हमें क्या गरज है कि हम उस दुष्ट को छुड़वाएं।"

"दुर्योधन दुश्मन होते हुए भी तुम्हारा भाई है भीम !"— युधिष्ठिर ने भीम की बात को बीच ही में काटकर कहा।

—"मगर भैया !"

—"मगर क्या, हमारी दुश्मनी आपसी है। दूसरे के लिए हम पांच और सौ मिलकर एक सौ पांच हैं। दुर्योधन को पकड़ने वाला हमारा दुश्मन है। हम उससे लड़कर दुर्योधन को छुड़वाएंगे।"

युधिष्ठिर की इस बात पर दूत भी नतमस्तक हो उठा।

फिर पांचों पांडवों ने अपने हथियार उठाए ! भीम की गदा उनके कंधे पर आ गई। उन्होंने एक घड़ी के अंतराल में ही चित्रसेन को घेरकर उससे दुर्योधन की मांग की। चित्रसेन ने प्रत्युत्तर में इंकार कर दिया।

पांडवों तथा गंधर्वों में घमासान युद्ध होने लगा। भीम की गदा और अर्जुन के गांडीव ने चित्रसेन की सेना में कोहराम मचा दिया। गंधर्व सेना भागने लगी। फलतः गंधर्वराज चित्रसेन को दुर्योधन मुक्त करना ही पड़ा।

मुक्त होने पर दुर्योधन बड़ा ही लज्जित हुआ। उसने युधिष्ठिर से क्षमा मांगी। युधिष्ठिर ने उसे वापस हस्तिनापुर भेज दिया।

पांडवों की इस उदारता तथा भ्रातृ-प्रेम से चित्रसेन भी बहुत प्रभावित हुआ। उसने भी युधिष्ठिर को प्रणाम किया और वापस लौट गया।●

आप कितने बुद्धिमान हैं ?

यहां दो चित्र बने हुए हैं । ऊपर पहले बनाया हुआ मूल चित्र है । नीचे इसी चित्र की नकल है । नीचे का चित्र बनाते समय चित्रकार का दिमाग कहीं खो गया । उसने कुछ गलतियां कर दीं । आप सावधानी से दोनों चित्र देखिए । क्या आप बता सकते हैं कि नीचे के चित्र में कितनी गलतियां हैं ? इसमें दस गलतियां हैं । सारी गलतियों का पता लगाने के बाद आप स्वयं इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी बुद्धि कितनी तेज है । १० गलतियां ढूंढ़ने वाला **जीनियस;** ६ से ९ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला **बुद्धिमान;** ४ से ५ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **औसत बुद्धि;** ४ से कम गलतियां ढूंढ़ने वाला : **स्वयं सोच ले कि उसे क्या कहा जाए ?**

सही उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए जा रहे हैं । आप सावधानी से प्रत्येक पृष्ठ देखिए और उत्तर खोजिए । आपकी बुद्धि की परख के लिए निर्धारित समय—१५ मिनट ।







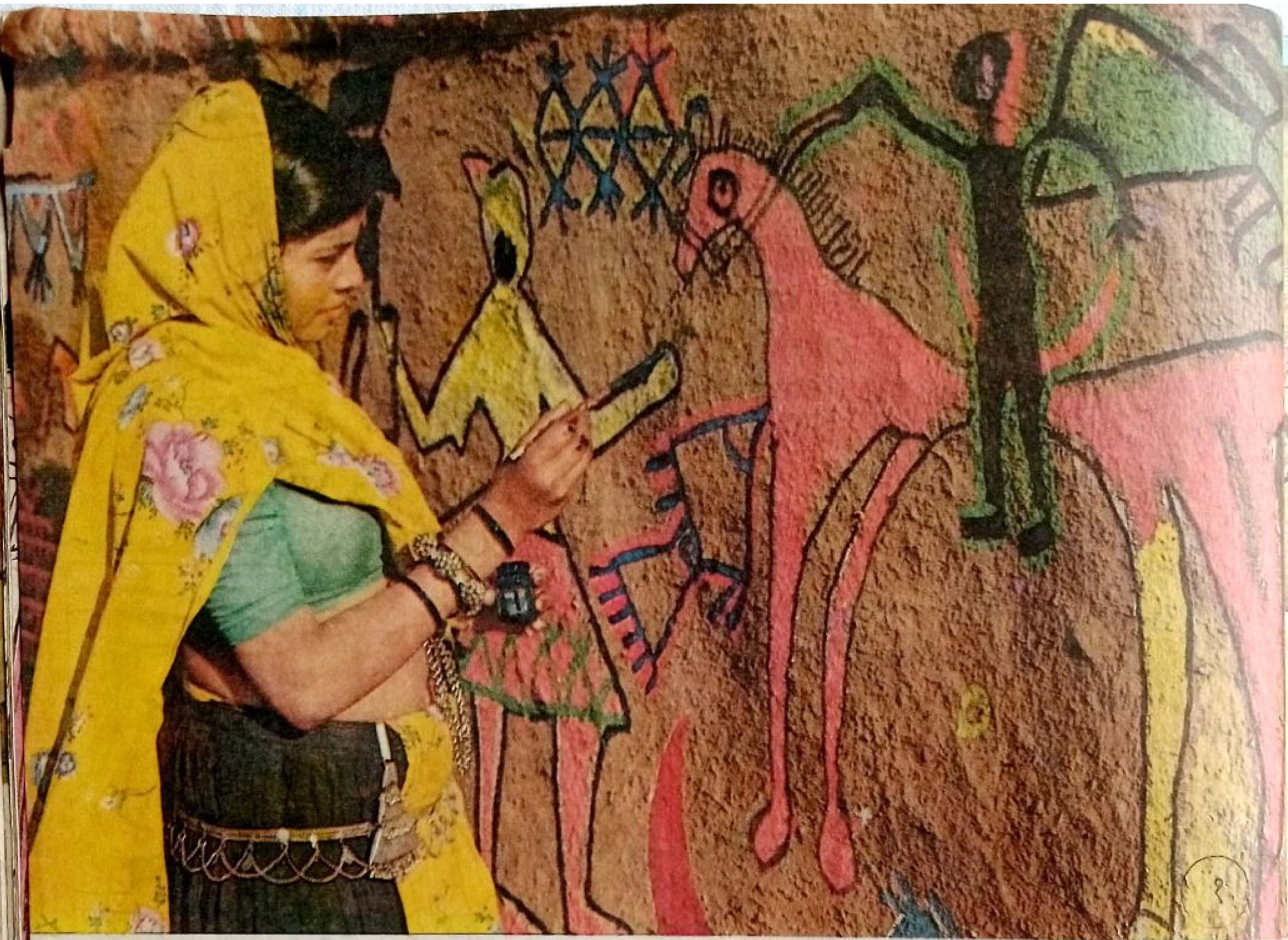
कहानी लिखो : ६७

सामने बने चित्र के आधार पर एक कहानी लिखिए । उसे १० जून '८९ तक **सम्पादक 'नंदन', हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१** के पते पर भेज दीजिए । चुनी गई कहानी पुरस्कृत कर प्रकाशित की जाएगी ।

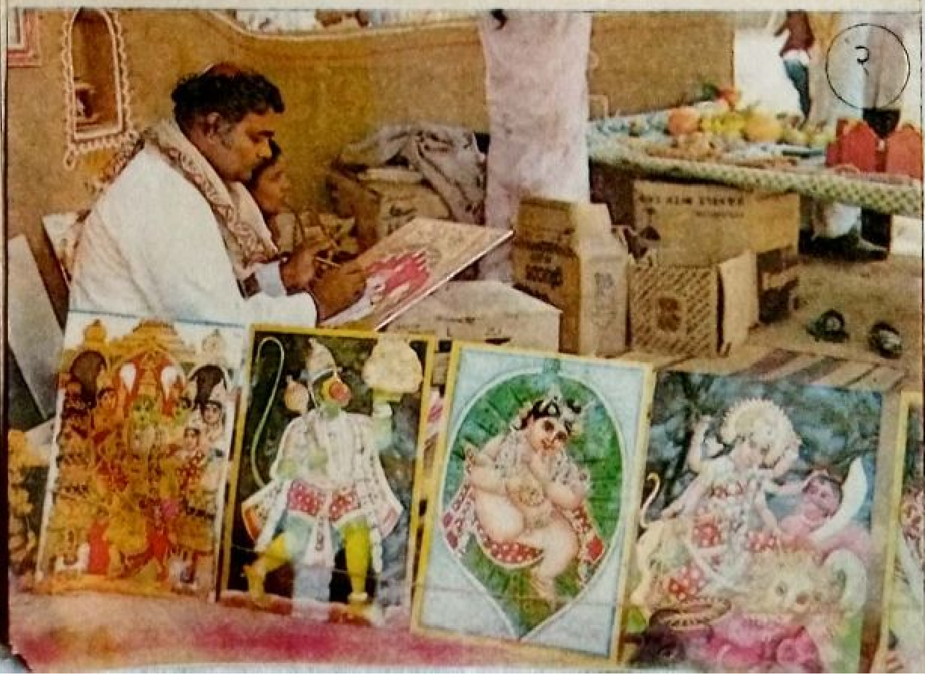
परिणाम : अगस्त '८९ अंक

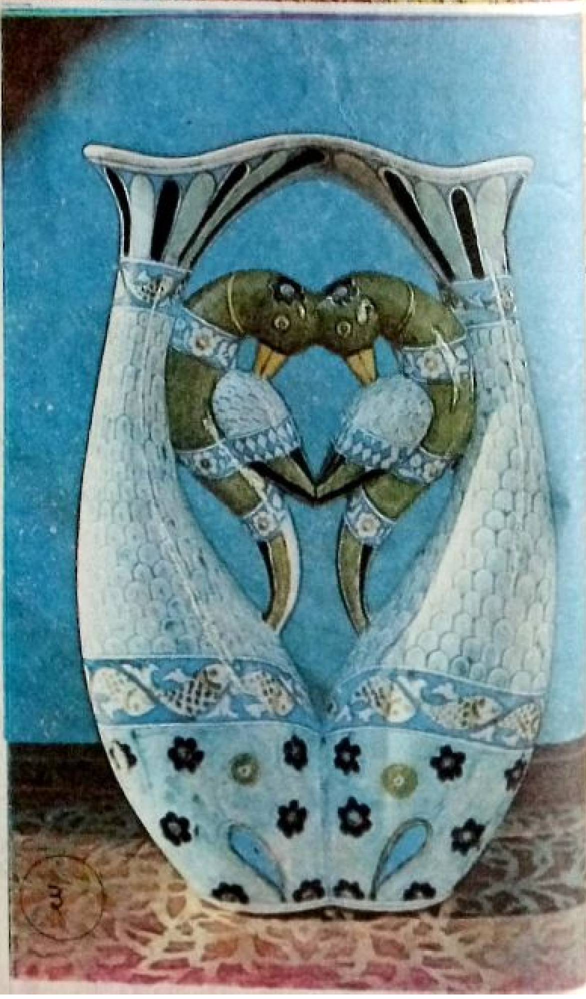
चित्र पहेली : ६७

'आओ मिलकर खेलें खेल' विषय पर रंगीन चित्र बनाइए । उसे १० जून '८९ तक 'नंदन' कार्यालय में भेज दीजिए । पसंद किया गया चित्र 'नंदन' में छपेगा । पुरस्कार भी मिलेगा । **परिणाम : सितम्बर '८९ अंक**

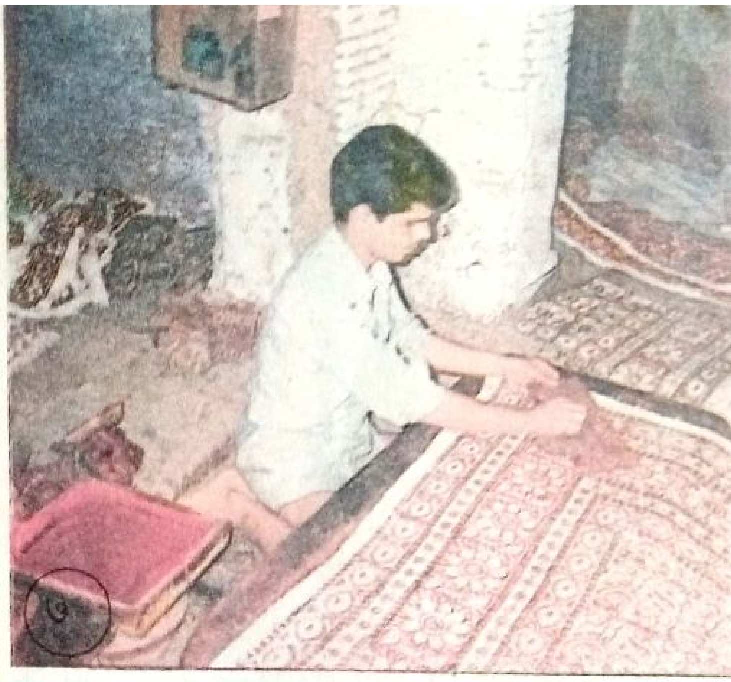


रंग-रंग की अजब कलाएं जादू-सा कर जाएं















आदमी जब जन्मा, चित्रकला साथ लेकर आया। इसीलिए चित्र कला की पहुंच है झोंपड़ी से लेकर महलों तक। जीवन में खुशियां भरना इसका काम है। त्योहार हो या उत्सव, चित्रकला के बिना सब फीके। प्रस्तुत है ऐसी ही चित्रकला की रंग बिरंगी झलक। इसे आप लोक कला भी कह सकते हैं। १. देहात में घर की दीवार : सजावट अपने आप; २. देवताओं के चित्र बनाता कलाकार; ३. फूल दान पर भी चित्रकारी; ४. अल्पना प्यारी-प्यारी; ५. अपनी-अपनी अल्पना : डिजायन और रंग; ६. बच्चे ने भर दिए सितारों में रंग; ७. वस्त्रों पर छपाई : पुराना साधन; ८. देखिए, तरह-तरह के डिजायन।

चित्र : विद्याव्रत, भगवानदास रूपानी, देवेन्द्र अग्रवाल



अदल-बदल

—शूद्रक

उज्जैन में उन दिनों राजा पालक का शासन था। वह कहने को राजा था। सारा राजकाज रानी का भाई शकार चलाता था। लेकिन वह बड़ा अहंकारी था। शकार का व्यवहार प्रजा के साथ अच्छा नहीं था। लोग उससे परेशान थे। पर क्या करते।

नगर में चारुदत्त नामक एक ब्राह्मण रहता था। किसी समय वह नगर के धनी व्यक्तियों में गिना जाता था। उसका सारा धन दूसरों की भलाई में खर्च होता था। कहीं धर्मशाला बनवाता, तो कहीं कुंए खुदवाता। इस तरह उसका धन खत्म होने लगा। वह धनी से गरीब बन गया, किंतु उसका व्यवहार पहले जैसा ही था। उसका मित्र था मैत्रेय। वही उसके सुख-दुःख का साथी था।

नगर में वसंतसेना नाम की प्रसिद्ध नर्तकी रहती थी। उसके पास धन की कमी न थी। शकार उससे विवाह करना चाहता था। उसे धमकियां भी देता रहता था, परंतु वह धमकियों से डरी नहीं। वह चारुदत्त की प्रशंसक थी।

एक शाम वसंतसेना घूमने निकली। शकार ने उसे अकेली देखा, तो उसका पीछा करने लगा। वसंत सेना बचने के लिए चारुदत्त के घर में घुस गई। शकार उसे देर तक खोजता रहा। फिर हाथ मलता चला गया।

वसंतसेना ने घर जाने की सोची। उसके शरीर पर काफी आभूषण थे। रात हो चली थी। इसलिए अकेले जाने में खतरा था। उसने आभूषणों को चारुदत्त के पास धरोहर रूप में रख दिया। फिर अपने घर लौट आई।

वसंतसेना की दासी थी मदनिका। वह शर्विलक नामक ब्राह्मण से प्रेम करती थी। शर्विलक ने एक दिन उससे विवाह का प्रस्ताव रखा।

यह सुन, वह उदास हो गई। शर्विलक के पूछने पर उसने बताया कि उसे वसंतसेना ने खरीदा हुआ है। जब तक वसंतसेना उसे मुक्त न कर दे, वह विवाह नहीं कर सकती। सुनकर शर्विलक सोच में पड़ गया। वह गरीब था। मदनिका को छुड़ाने के लिए धन कहां से लाता? आखिर उसने चोरी करने की सोची। एक रात

वह चारुदत्त के घर में घुस गया। वहां उसे आभूषणों की पेटी मिल गई। ये वही आभूषण थे, जिन्हें वसंतसेना ने चारुदत्त के यहां धरोहर रखा था। उन आभूषणों को लेकर वह मदनिका के पास पहुंचा। वह चौंकी। उसने बताया कि ये आभूषण तो वसंतसेना के हैं। वह बोली— "तुमने अच्छा नहीं किया। इससे चारुदत्त की बदनामी होगी।"

"मैं क्या करूं?"— शर्विलक ने पूछा। क्या कहती मदनिका। तभी वसंतसेना ने दोनों की बातचीत छिपकर सुन ली। उसने दोनों का प्रेम देख, विवाह कर दिया। मदनिका को मुक्त कर दिया।

चारुदत्त को आभूषणों की चोरी का पता चला। उसने पत्नी धूता से वसंतसेना के आभूषणों की चोरी के बारे में कहा। फिर बोला— "इस चोरी से हमारी बड़ी बदनामी होगी। कोई उपाय सोचना चाहिए। आभूषणों के बदले में हमें कुछ देना चाहिए।"

पति की परेशानी समझ धूता ने कहा— "मेरे पास एक रत्नमाला बची है। बहुत दिन पहले मुझे आपने भेंट दी थी। आप उसे वसंतसेना को दे दें।"

चारुदत्त ने जवाब दिया— "नहीं, मैं यह नहीं कर सकता। मैंने तुम्हें दुःख ही दिया है। सारे आभूषण बिक गए। ले-देकर एक ही रत्नमाला बची है। मैं इतना स्वार्थी नहीं कि उसे भी तुमसे छीन लूं।"

पति की बात सुनकर धूता ने कहा— "आपकी निंदा क्या मेरी निंदा नहीं है? मेरे लिए आपसे बढ़कर और क्या हो सकता है? रत्नमाला को वसंतसेना के पास अवश्य भेज दें।" पत्नी के बार-बार कहने पर चारुदत्त ने मैत्रेय को रत्नमाला देकर कहा—"तुम इसे वसंतसेना को दे देना। और हां, चोरी की बात उसे न बताना।"

मैत्रेय रत्नमाला ले, वसंतसेना के पास पहुंचा। वसंतसेना ने पहले माला न लेने की सोची। पर उसे ध्यान आया कि माला न लेने से चारुदत्त को दुःख होगा। उसने आभूषणों के बारे में कुछ न पूछा, न ही कुछ बताया। उसने माला ले ली। फिर मैत्रेय को बताया कि वह कल सुबह चारुदत्त से मिलने आएगी।

अगले दिन वसंतसेना चारुदत्त के घर पहुंची। द्वार पर दासी रदनिका खड़ी थी। पास ही एक बच्चा रो रहा था। वसंतसेना ने बच्चे के बारे में पूछा। रदनिका ने बताया कि यह चारुदत्त का इकलौता पुत्र रोहसेन है। वसंतसेना को देखकर बच्चा चुप हो गया। रदनिका ने बच्चे से कहा— "तुम गाड़ी से खेलो।" बच्चा बोला— "मुझे नहीं खेलना इस गाड़ी से।" कहकर गाड़ी फेंक दी। फिर रोने लगा।

रदनिका ने उसे मुश्किल से चुप कराया। वह बोली— "अभी तो तुम गाड़ी लेने की जिद कर रहे थे। अब गाड़ी फेंक दी। आखिर बात क्या है?" बच्चे ने रूठे स्वर से कहा— "मेरे साथियों के पास सोने की गाड़ियां हैं। मेरी गाड़ी मिट्टी की है।" कहकर वह फिर रो पड़ा।

रदनिका बच्चे को कैसे समझाती कि उसका पिता चारुदत्त गरीब है। अगर वह समझाती तो क्या रोहसेन समझ पाता! रदनिका ने वसंतसेना से कहा— "क्या करूं? यह तो चुप ही नहीं होता। आप ही इसे समझाइए।"

वसंतसेना ने बच्चे को अपने पास बुलाया। बड़े प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरा। बोली— "अच्छा, गाड़ी लाओ।" वह मिट्टी की गाड़ी उठा लाया। वसंतसेना ने अपने शरीर पर पहने आभूषणों को उतार लिया। उन्हें मिट्टी की गाड़ी में रख दिया। यह देख रदनिका दंग रह गई। बच्चे ने रदनिका से उसके



शूद्रक—संस्कृत के महान साहित्यकार। समय पांचवीं और छठी सदी के आसपास। उज्जैन में जन्मे थे। पद्मप्राभृतक, कुमुद्वती प्रकरण, वत्सराजचरित एवं मृच्छकटिक इनकी कृतियां मानी जाती हैं। इस समय केवल 'मृच्छकटिक' ही उपलब्ध है। यहां इसकी संक्षिप्त कथा दी जा रही है।—सं.

बारे में पूछा। वह कुछ कहती, उससे पहले ही वसंतसेना बोल पड़ी— "मैं तुम्हारे पिता की दासी हूं।" कहकर वह अपने घर लौट गई। बच्चा खुश होकर खेलने लगा। रदनिका वसंतसेना की उदारता देखकर चकित थी।

चारुदत्त ने देखा— बच्चा आभूषणों से भरी गाड़ी से खेल रहा है। वह चौंक उठा। पूछने पर रदनिका ने सारा किस्सा बता दिया। चारुदत्त ने सोचा— 'इन आभूषणों को वापस कर देना चाहिए। पहले ही उसके आभूषण चोरी हो गए हैं। उन्हें ही नहीं लौटा पाया हूं। कहीं ये भी चोरी हो गए, तो मैं क्या करूंगा ? रही-सही पत्नी की एक रत्नमाला थी। वह भी मैंने दे दी। मेरे पास अब है ही क्या।' उसने मैत्रेय को बुलाकर कहा— "तुम ये आभूषण वसंतसेना को वापस दे आओ।" मैत्रेय ने कहा— "मैं इन्हें वसंतसेना के पास पहुंचा दूंगा।"

इन्हीं दिनों प्रजा में शासन के खिलाफ विद्रोह भड़क उठा। विद्रोह का नेता था आर्यक। राजा पालक ने उसे कारागार में डाल दिया। आर्यक कारागार से भागने की कोशिश करता रहता।

एक दिन चारुदत्त ने वसंतसेना को लाने के लिए गाड़ी भेजी। सेवक गाड़ी लेकर गया। तभी उसे ध्यान आया कि जल्दी-जल्दी में बिछावन तो घर पर ही छूट गया। इसलिए उसने बीच में ही गाड़ी घर की ओर मोड़ दी। इतने में शकार का सेवक गाड़ी लेकर उधर से निकला।



उसने देखा, सड़क पर कई गाड़ियां रास्ता रोके खड़ी हैं। वह गाड़ियां हटवाने चला गया। उसी समय वसंतसेना आ गई। शकार की गाड़ी वैसी ही थी, जैसी चारुदत्त की। उसने सोचा— 'चारुदत्त ने शायद यह गाड़ी मेरे लिए भेजी है।' और वह गाड़ी में बैठ गई। उस बेचारी को भला क्या पता था कि जिस गाड़ी में वह बैठी हुई है,वह चारुदत्त की नहीं है। शकार का सेवक गाड़ियां हटवाकर आया। उसे भी यह पता न चला कि गाड़ी में वसंतसेना बैठी है। उसने गाड़ी आगे हांक दी।

इधर चारुदत्त का सेवक गाड़ी लेकर दोबारा वसंतसेना के घर पहुंचा। वसंतसेना उसे कहीं नजर नहीं आई। वह वसंतसेना को खोजने चला गया। तभी कारागार से भागा आर्यक वहां आ पहुंचा। उसने देखा, सामने एक गाड़ी खड़ी है। चलाने वाला भी नहीं है। उसने सोचा-'क्यों न इसी में छिप जाऊं। गाड़ीवान आएगा, कहीं न कहीं गाड़ी ले ही जाएगा।'

चारुदत्त का सेवक आया। उसे लगा, जैसे गाड़ी में कोई बैठा है। परदा पड़ा रहने के कारण वह ठीक से न देख सका। यही समझा कि गाड़ी में वसंतसेना बैठी है। वह गाड़ी लेकर चारुदत्त के यहां पहुंचा। चारुदत्त ने देखा— अंदर आर्यक बैठा है। आर्यक उसका मित्र था। आर्यक ने सब कुछ बता दिया। चारुदत्त ने उसे सैनिकों से बच निकलने में मदद दी।

उधर शकार की गाड़ी थोड़ी दूर गई थी कि रास्ते में शकार मिल गया। गाड़ी में झांककर देखा, वसंतसेना बैठी है। वह दंग रह गया। वसंतसेना भी चौंकी। शकार खुशी से नाच उठा। उसने सोचा— शायद वसंत सेना मुझसे विवाह के लिए मान गई है।

तभी तो मेरी गाड़ी में बैठ कर स्वयं आई है ।' यह सोचकर वह वसंतसेना से विवाह के बारे में कहने लगा । वसंतसेना ने मना कर दिया । इस पर शकार गुस्से से जैसे पागल हो उठा । उसने वसंतसेना का गला दबा दिया ।

फिर उसे मृत समझकर उसका शरीर पत्तों से ढक दिया और वहां से भाग गया । उसने अदालत में जाकर वसंतसेना की हत्या का आरोप चारुदत्त पर लगा दिया । न्यायाधीश ने चारुदत्त को बुलवाया । उधर मैत्रेय भी अदालत में पहुंचा । उसने न्यायाधीश को बताया कि हत्या शकार ने की है । इस पर शकार अदालत में ही उससे लड़ पड़ा । मैत्रेय की बगल से वसंतसेना के आभूषणों की पेटी गिर गई । ये वही आभूषण थे, जिन्हें मना करने पर भी वसंतसेना रोहसेन की मिट्टी की गाड़ी में रखकर चली आई थी ।

शकार ने न्यायाधीश से कहा— "इन आभूषणों से यह साबित होता है कि चारुदत्त ने ही आभूषण हथियाने के लिए वसंतसेना को मार डाला है ।"

चारुदत्त ने स्वीकार किया कि ये आभूषण वसंतसेना के ही हैं । इस पर उसे फांसी की सजा सुना दी गई । उसकी पत्नी धूता ने बहुत सफाई दी कि उसका पति निर्दोष है, पर किसी ने सुनी । उसने तय किया कि अब जीवित रहना बेकार है । वह रोहसेन को लेकर चल दी ।

तभी वसंतसेना एक बौद्ध भिक्षुक के साथ वहां आ पहुंची । उसने लोगों को बताया –"मेरी हत्या का प्रयास शकार ने किया था । उसने मेरा गला घोटा, तो मैं बेहोश हो गई । वह भाग गया । उधर से यह भिक्षुक निकले । इन्होंने ही मेरे प्राण बचाए हैं ।"

भेद खुल गया देख, शकार ने चुपके से वहां से भागना चाहा । परंतु सिपाहियों ने उसे पकड़ लिया । चारुदत्त को छोड़ दिया गया । उधर आर्यक ने पालक को मारकर उज्जैन की गद्दी संभाल ली । उसने चारुदत्त को वेणुल्ट का राजा बना दिया । चारुदत्त प्राण देने जा रही अपनी पत्नी के पास पहुंचा । धूता ने देखा, तो खुशी से झूम गई । परिवार आराम से रहने लगा।●

बात का धनी

—गोपालदास नागर

तब भावनगर में राजा तख्तसिंह का राज्य था । राज्य में हरिप्रसाद देसाई नामक एक दानवीर नागर ब्राह्मण थे । उन्हें लोग 'कर्ण का अवतार' कहते थे । देसाई के घर जो भी जाता, संतुष्ट होकर लौटता था । उनके दान की चर्चा दूर-दूर तक फैली हुई थी । वह गुप्त रूप से दान करते । अहंकार या बड़ाई का उनसे दूर-दूर तक कोई रिश्ता न था ।

एक दिन देसाई भोजन करने की तैयारी कर रहे थे, तभी बम्बई से एक विद्यार्थी आया । बोला—"मुझे पांच मिनट आपसे बात करनी है ।"

"तुम बम्बई से आए हो । भोजन का समय है । पहले भोजन कर लो । फिर आराम से बैठकर बातें करेंगे ।"—देसाई ने उस युवक से कहा ।

युवक के मन में शंका हुई कि बड़े व्यक्ति हैं । भोजन के बाद आराम करेंगे । फिर घूमने-फिरने चले जाएंगे । मुझे निराश लौटना पड़ेगा । बम्बई से यहां आने का किराया भी व्यर्थ जाएगा । लेकिन वह कर भी क्या सकता था ! चुपचाप देसाई के साथ बैठकर भोजन करने लगा ।

भोजन के बाद देसाई ने कहा—"अब अपनी समस्या बताओ ।"

"श्रीमान !"—युवक ने संकोच के साथ कहा—"मैं इस वर्ष बम्बई कालेज में बी. ए. की परीक्षा में सर्व प्रथम आया हूं । बैरिस्टर बनने की इच्छा से लंदन जाना चाहता हूं । यदि आप बीस हजार रुपए उधार देने की कृपा करें, तो स्वदेश लौटकर ब्याज सहित आपकी रकम चुका दूंगा ।"

युवक की बात सुनकर हरिप्रसाद देसाई हंस पड़े । बोले—"अरे भाई ! इतनी बड़ी रकम तुम कैसे चुका पाओगे ?"

—"मैं बैरिस्ट्री में भी सर्व प्रथम आऊंगा, इसका मुझे विश्वास है । लौटकर मैं एक-दो वर्ष में इतनी रकम कमा ही लूंगा ।"



उसका आत्मविश्वास और दृढ़ निश्चय देखकर देसाई प्रभावित हो गए। उन्होंने मुनीम को आदेश दिया—"इन्हें बीस हजार रुपए अभी दे दो।"

युवक यह सुनकर आश्चर्य में डूब गया। हरिप्रसाद देसाई ने कहा—"अब तुम अपना नाम तो बताओ।"

"मेरा नाम है फिरोजशाह मेहता।"—युवक ने कहा। रुपए मिल जाने पर उसने देसाई से कहा—"श्रीमान ! इन रुपयों की लिखा-पढ़ी करा लें।"

"अरे भाई !"—देसाई प्रसन्नता से बोले—"मैं तो तुम्हें छात्रवृत्ति दे रहा हूं। इसमें लिखा-पढ़ी की बात कहां आती है ! मैं अपनी तरफ से पांच हजार रुपए और देता हूं, जिनसे तुम विलायत जाने के योग्य कपड़े आदि की व्यवस्था कर सको।"

पचीस हजार की रकम पाकर, फिरोजशाह मेहता भौचक्का रह गया। अपनी पढ़ाई की इतनी अच्छी व्यवस्था होने से उसके हृदय में प्रसन्नता का सागर लहराने लगा। उसके नेत्रों से खुशी के आंसू टपक पड़े। उसने देसाई के चरण पकड़ने चाहे। देसाई ने ऐसा करने से रोकते हुए कहा—"मेरे चरण स्पर्श करने की आवश्यकता नहीं। खूब पढ़कर गरीबों की सेवा करो, यही मेरा आशीर्वाद है।"

उन्हें नमस्कार कर, फिरोजशाह मेहता ने विदा ली। फिर एक दिन विदेश से बैरिस्टर बनकर फिरोजशाह मेहता बम्बई लौट आए। कुछ ही वर्षों में उन्होंने काफी नाम और यश कमा लिया।

भावनगर राज्य और ब्रिटिश-शासन के बीच बंदरगाह के बारे में झगड़ा चल रहा था। तत्कालीन दीवान विट्ठल भाई ने अपनी चिंता हरिप्रसाद देसाई के सामने रखी।

हरिप्रसाद देसाई ने कहा—"यदि आपकी इच्छा हो, तो हाईकोर्ट में पैरवी करने के लिए युवा बैरिस्टर फिरोजशाह मेहता को बुला लूं।"

"यह तो बहुत अच्छी बात होगी।"—विट्ठल भाई बोले—"मैंने उनका नाम तो सुना है, किंतु परिचय नहीं है।"

बम्बई हाईकोर्ट में भावनगर का पक्ष रखने के लिए मेहता को पत्र लिखा गया। फिरोजशाह मेहता ने यह मुकदमा लड़ा और न्याय भावनगर राज्य के पक्ष में हुआ। बंदरगाह की चुंगी लेने का अधिकार राज्य को मिल गया।

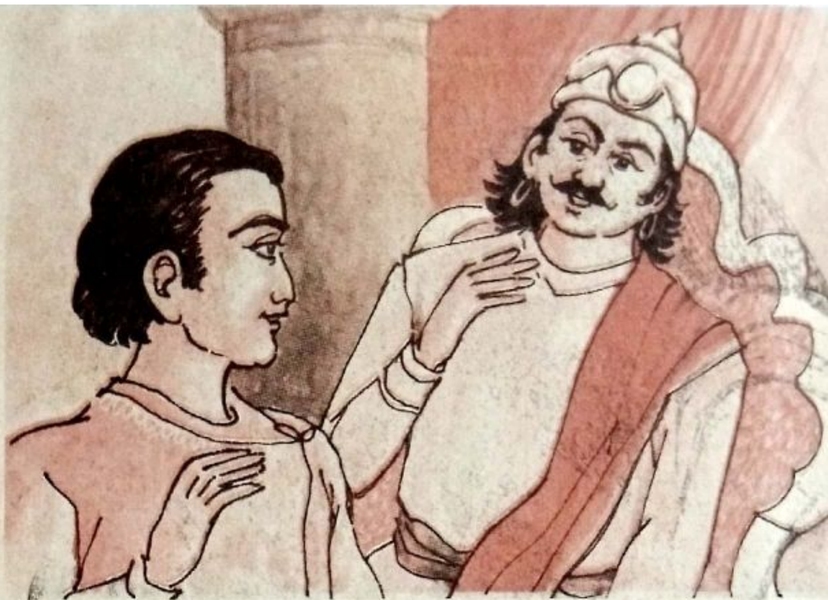
राजा तख्तसिंह ने प्रसन्न होकर फिरोजशाह मेहता को निमंत्रण भेज, भावनगर बुलवाया। मेहता का सम्मान करते हुए राजा ने पांच लाख रुपए उन्हें देने चाहे।

रुपए लेने से इंकार करते हुए फिरोजशाह मेहता ने कहा—"मैं एक पाई भी लेना नहीं चाहता। मुझे तो अपने पिता समान हरिप्रसाद देसाई की आज्ञा का पालन करना था। पिता के आज्ञा पालन की फीस नहीं होती।" केवल पुष्पहार स्वीकार करके मेहता ने विदा ली। वह सीधे हरिप्रसाद देसाई के घर पहुंचे। उन्हें श्रद्धा के साथ प्रणाम किया।

हरिप्रसाद देसाई ने मेहता के कार्य एवं व्यवहार की बड़ी प्रशंसा की। देसाई से अपनी प्रशंसा सुनकर फिरोजशाह मेहता संकोच में पड़ गए। बोले—"आपने मुझे पिता का ऋण चुकाने का एक छोटा-सा अवसर दिया, यह मेरा सौभाग्य है।" ●

किसका हाथ

— कीर्ति कुमार सिंह



सुवर्णपुर के राजा थे— अनंतसेन। बहुत योग्य और कुशल शासक थे। उनकी बुद्धिमत्ता की चर्चा दूर-दूर तक थी।

अनंतसेन को विद्वानों और बुद्धिमानों की संगति बहुत प्रिय थी। यही कारण था कि उनके दरबार में कवियों और विद्वानों की भरमार थी। उन सब में राजकवि मणिमाल राजा के सबसे प्रिय थे।

मणिमाल बहुत ही योग्य कवि थे। दूर-दूर तक उनकी टक्कर का कोई कवि न था। लेकिन राजा का अंतरंग होने के कारण धीरे-धीरे उनमें अहंकार आने लगा। राजा ने उनका अहंकार दूर करने की ठानी।

एक दिन बातों ही बातों में राजा मणिमाल से पूछ बैठे— "राजकवि, आप बहुत ही महान कवि हैं। मैं जानना चाहता हूं, आपकी महानता में किसका योगदान सबसे अधिक है ?"

राजकवि राजा की प्रशंसा से गद्‌गद्‌ हो गए। झूठी विनम्रता दिखाते हुए बोले— "महाराज, मैं किस योग्य हूं ! जो भी बन सका हूं, आपके कारण।"

राजकवि की झूठी विनम्रता पर मन ही मन मुस्कराते हुए अनंतसेन ने कहा— "राजकवि ! मेरे अलावा आपकी महानता में और किसका योगदान है ?"

"आपके अलावा तो सारा श्रेय मेरी बुद्धि, मेरी योग्यता और मेरी प्रतिभा को ही है।"— राजकवि ने अहंकार से कहा। राजा अनंतसेन मन ही मन मुसकराए, परंतु उस समय उन्होंने कुछ नहीं कहा।

दूसरे दिन वह चुपचाप वेश बदलकर राजकवि की पत्नी से मिले। उसे कुछ समझाया।

राजकवि के घर लौटते ही उनकी पत्नी, राजा के कहे अनुसार बहाना खोजकर उनसे लड़ बैठी। फिर रूठकर मायके चली गई।

कुछ दिनों तक तो ठीक चला, परंतु धीरे-धीरे राजकवि परेशान हो उठे। बच्चों को संभालना, भोजन की व्यवस्था, घर की जिम्मेदारियां तथा और भी तमाम कामों की देख-रेख कर पाना राजकवि के बूते के बाहर था। लिखने-पढ़ने के अलावा उन्होंने और किसी चीज की ओर कभी ध्यान नहीं दिया था। नौकरों के भरोसे सब कुछ छोड़ देने पर तो समस्याएं और भी बढ़ गईं। हार कर उन्होंने पत्नी को बुलाने के लिए भरोसे के एक नौकर को भेजा, किंतु पत्नी ने उसे फटकार कर लौटा दिया।

कुछ महीने इसी उहापोह में बीत गए। एक दिन राजा उद्यान में राजकवि के साथ टहल रहे थे। एकाएक उन्होंने रूखे स्वर में कहा— "राजकवि, मैं आपके स्थान पर किसी अन्य को रखने की सोच रहा हूं।"

"क्यों महाराज ?"— राजकवि के पैरों तले से जमीन खिसक गई।

"राज्य के कई कवि इधर काफी प्रशंसा प्राप्त कर रहे हैं। कई अच्छे-अच्छे ग्रंथ लिखे गए हैं। आपने तो पिछले काफी समय से कुछ भी नहीं लिखा।"— राजा ने कहा।

"मैं काफी परेशान हूं महाराज !"—राजकवि धीमी आवाज में बोले— "मेरी पत्नी रूठकर मायके चली गई है। इसीलिए घर की सारी जिम्मेदारियां मुझ पर आ गई हैं। कुछ लिखा ही नहीं..."

अचानक राजा जोर से हंसे। बोले— "अब बताइए राजकवि ! क्या आपके आगे बढ़ने में आपकी पत्नी का हाथ नहीं है ?"

राजकवि मणिमाल अब सब कुछ समझ गए। उनका अहंकार हमेशा के लिए गायब हो गया था।





नानी

अम्मा की नानी की नानी
नानी की नानी की नानी ।
गई कुएं पर भरने पानी
पानी में थी मछली कानी ।
बोली,'तुम क्यों आईं नानी
कहां तुम्हारी मुन्नी रानी ?'

घरौंदे

बच्चे खेल रहे बालू पर
बना घरौंदे सुंदर-सुंदर ।
एक घरौंदा मेरा
एक घरौंदा तेरा ।
मेरा झंडे वाला
तेरा कंडे वाला ।
इसी बात पर हुई लड़ाई
गुत्थम-गुत्था हाथापाई,
सबके सब मिट गए घरौंदे
बच्चों ने पांवों से रौंदे ।



—निरंकार देव सेवक



मूंछें

वाह-वाह ये काली मूंछें,
लगती बड़ी निराली मूंछें ।

किसी-किसी की इंच-इंच भर,
कुछ ने गज भर पालीं मूंछें ।

कुछ लोगों के तो सचमुच की,
पर जोकर की जाली मूंछें ।

कोई रखता मूंछ तानकर,
कुछ ने खूब झुका लीं मूंछें ।

बड़ी मूंछ से सब डरते हैं,
ज्यों बंदूक दुनाली मूंछें ।

कोई कहता शान मर्द की,
इसीलिए रखवा लीं मूंछें ।

कुछ कहते यह तो झंझट है,
इसीलिए मुंडवा लीं मूंछें ।

जिसको जैसी भाई उसने,
उसी रूप में ढालीं मूंछें ।

—डा. भैरूंलाल गर्ग

छोटी रातें

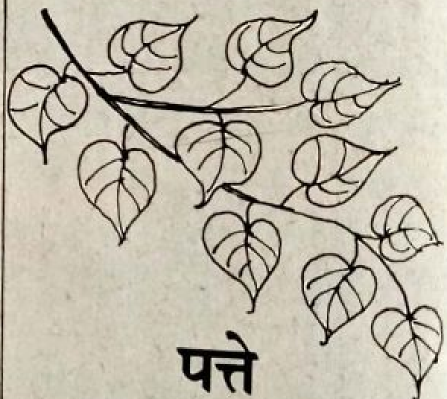
गरमी आई, गरमी आई
लम्बे-लम्बे दिन दे-देकर
छोटी-छोटी रातें लाई ।

पत्ता-पत्ता है अलसाया
धूप है ज्यादा, कम है छाया,
फूलों का मुंह उतरा-उतरा
कली-कली लगती मुरझाई ।

नभ से जैसे आग बरसती
धरती जल के लिए तरसती,
खेतों में पड़ गईं दरारें
लूओं से दुनिया घबराई ।

खेलें खेल, पसीना आता
तन पर कपड़ा नहीं सुहाता,
लेकिन गरमी भी अच्छी है
यह गरमी छुट्टी तो लाई ।

— मधुर शास्त्री



पत्ते

चिकने हरे-हरे-से पत्ते,
मनमोहक हैं कैसे पत्ते !
लगे हुए डाली पर फर-फर,
संग हवा के तिरते पत्ते ।
कड़ी धूप से चिड़ियों की ये
हंस-हंस रक्षा करते पत्ते ।
मोती जैसा ओस-कणों को,
सुबह-सुबह चमकाते पत्ते ।
हरी-भरी धरती के सपने,
हर दिल में लहराते पत्ते ।

—रमेशचंद्र पंत

सुनहरी लकीर

— अनंत कुशवाहा



बूंदी के जंगलों से घिरी पहाड़ी के नीचे का पानी चट्टानों की पर्तों में समा जाता। वर्ष भर उनसे पानी रिसकर पतले-पतले झरनों के रूप में ताल को भरता रहता था। एक बार शिकार पर निकले बुंदा रावल ने यह अद्‌भुत दृश्य देखा। तभी उन्होंने सोचा, क्यों न इस पहाड़ी पर ऐसा महल बनवाया जाए, जिसका प्रतिबिम्ब इस तालाब में पड़े।

जंगल का वह भाग साफ कर दिया गया। पत्थरों की कटाई-छंटाई होने लगी। जल्दी ही महल बनने का काम शुरू हो गया। बुंदा रावल स्वयं आठ-दस दिन में वहां का चक्कर लगा आते थे। चौक, कंगूरे, झरोखे, बुर्जियां कहां कैसी होंगी, इस पर मुख्य राजगीर हुकमा से चर्चा भी करते रहते थे। जल्दी ही महल का सुंदर प्रतिबिम्ब तालाब में दिखाई देने लगा।

एक दिन बुंदा रावल से हुकमा ने कहा— "अन्नदाता! महल की दीवारों पर बढ़िया चित्रकारी होने से इसकी सुंदरता बहुत बढ़ जाएगी। अगर हुकुम करें तो.... ?"

—"हां, हां, इसमें हुकुम की क्या बात! चित्रों को मांडने की व्यवस्था कर लो।"

—"इसके कारीगर यहां नहीं हैं अन्नदाता! मेवाड़ के गांवों से बुलाने होंगे। वे मेवाड़ से बाहर नहीं जाते और अपनी कला का भेद भी नहीं बताते।"

रावल की त्यौरी चढ़ गई— "मुंहमांगा धन देने पर भी आने को तैयार न होंगे?"

—"नहीं, हुजूर! वे चितेरे शायद एक शर्त पर आ सकते हैं। आपकी कृपा हो जाए तो....।"

—"क्या कहना चाहते हो?"

—"अगर आप अपने यहां उन्हें बसने की और नियमित कुछ धन देने की व्यवस्था कर दें, तो शायद कोई चितेरा अपने परिवार को लेकर यहां आ जाए।"

बुंदा रावल हंस पड़े— "इसमें इतनी चिंता की क्या बात है? ले आओ। सब इंतजाम हो जाएगा।"

दस दिन बाद जब बुंदा रावल महल देखने गए, तो हुकमा एक दुबले-पतले बूढ़े के साथ हाजिर हुआ।

"अन्नदाता को जुहार कर भोमराज!"— हुकमा खुद कमर तक झुक गया। भोमराज ने जरा-सा सिर झुकाकर हाथ जोड़ लिए।

रावल का चेहरा थोड़ा सख्त हो गया। उन्हें भोमराज का यह व्यवहार अच्छा नहीं लगा।

—"यह भोमराज है हुजूर! अपने परिवार के साथ आया है। चित्रकारी करेगा। हर सप्ताह सोने का एक सिक्का मांगता है।"

रावल का मुंह लगा सरदार बनेसिंह तमक गया— "हर सप्ताह एक अशर्फी! पागल हो गए हो क्या?"

भोमराज ने गम्भीर होकर कहा— "हुजूर, अपनी तारीफ नहीं करता हूं, लेकिन दीवार पर बने चित्रों को देखकर, आपको मेरी मांग उचित ही लगेगी।"

बुंदा रावल ने कुछ सोचा— "ठीक है। काम शुरू कर दो।"

—"सात दिन में एक सोने का सिक्का मिलेगा न?"

हुकमा ने भोमराज को पीछे खींच लिया। वह फुसफुसाया— "अरे, अन्नदाता ने कह दिया न! फिर तू क्यों चिंता कर रहा है? काम तो शुरू कर।"

महल का बचा-खुचा काम व साज-सज्जा

बनेसिंह की देखरेख में चल रही थी। बुंदा रावल राजकाज के झंझटों में कुछ अधिक व्यस्त हो गए थे। वे कभी-कभी बनेसिंह से जानकारी ले लेते थे।

—"मेवाड़ से आए चित्रकार ने चित्र मांडने शुरू किए या नहीं ?"

"अभी नहीं हुजूर ! वह रंग तैयार कर रहा है।"— बनेसिंह कहता।

बनेसिंह ने पहले ही कई बार हुकमा से पूछताछ की थी। उसे यही उत्तर मिला था कि चित्रकार रंग की घुटाई कर रहा है। इस बात को एक माह हो गया था। सात दिन में एक अशर्फी की बात बनेसिंह के सीने में शूल की तरह चुभती थी। उसने एक दिन भोमराज को बुलवाया। वह ऐसे ही उठकर आ गया था। उसकी अंगुलियों में रंग लगा था।

—"चित्रकारी का काम कब शुरू होगा ?"

—"मैं रंग तैयार कर रहा हूं। बस, कुछ दिनों की बात है।"

—"कुछ दिन नहीं ! फौरन काम शुरू करो, नहीं तो सोने का सिक्का मिलना बंद करा दूंगा।"

—"सोने के सिक्के रंग बनाने के काम आते हैं।"

बनेसिंह कुटिलता पूर्वक हंसा— "अरे बुड्ढे ! यह मेवाड़ का गांव नहीं है। बुंदा रावल की जागीर है। तू किसे मूर्ख बनाना चाहता है ? जल्दी काम शुरू कर, नहीं तो रावल जी के सामने तेरे होश ठिकाने करा दूंगा।"

उस दिन भोमराज बिना कुछ कहे धीरे-धीरे चला गया था वहां से।

महल की साज-सज्जा लगभग पूरी हो गई थी, लेकिन दीवारों पर चित्र बनना अभी शेष था। सरदारों के साथ बुंदा रावल आए। बनेसिंह से उन्होंने पूछा— "मेवाड़ के चित्रकार ने काम शुरू किया ?"

—"नहीं हुजूर ! अभी तक रंग ही बना रहा है।"

—"क्या ? उसको रंग की प्यालियों सहित बुलवाइए।"

बनेसिंह का इशारा पाते ही दो सैनिक चल दिए। थोड़ी देर में ही रंग की तीन-चार प्यालियों सहित भोमराज को हाजिर किया गया। उसने प्यालियों को कस कर पकड़ रखा था। बनेसिंह ने कड़ककर कहा— "क्यों रे दुष्ट ! तुझे आए दो माह पूरे होने जा रहे हैं और अभी तक तेरा रंग ही तैयार नहीं हुआ है।"

—"रंग तो तैयार ही है, लेकिन आपने मुझे दुष्ट कहा। मैं अब काम नहीं करूंगा।"

—"क्या तू चित्रकारी का काम नहीं करेगा ?"

—"नहीं करूंगा। हम चित्र मांडने को पूजा समझते हैं और हमारे साथ पुजारी की तरह ही बर्ताव किया जाता है। नीचों की तरह नहीं।"

बनेसिंह की तलवार चमकी और भोमराज का सिर धड़ से अलग हो गया। रंग की प्यालियां भी फर्श पर गिरकर चूर हो गईं। बुंदा रावल और उनके साथ उपस्थित सभी लोग सन्न रह गए।

"यह क्या गजब कर दिया ! तलवार उठाने का आदेश किसने दिया था ? चित्रकार की बात को समझे बिना तुमने उस पर वार कर दिया। मैं तुम्हें बंदी बनाने का आदेश देता हूं।"— बुंदा रावल ने गरजकर कहा।

बनेसिंह सिर झुकाए खड़ा था। भोमराज का शरीर तड़पकर शांत हो गया। कांपते हुए हुकमा की ओर मुड़कर बुंदा रावल ने कहा— "भोमराज के परिवार का पूरा ध्यान रखा जाए। हमने उसके और उसके परिवार के प्रति घोर अपराध किया है।"

महल में बने संगमरमर के फर्श पर पड़े रक्त के धब्बे साफ कर दिए गए, लेकिन लाल-पीले-हरे रंग के धब्बे और सुनहरे रंग की एक मोटी लकीर किसी भी तरह साफ न हो सकी। छेनी से टांचकर देखा गया। पत्थर में रंग दो अंगुल की गहराई तक पहुंच गया था। कहते हैं— बूंदी के चित्रकार अपने को भोमराज का वंशज मानते हैं। आज भी बूंदी के महलों के एक भाग में संगमरमर की बड़ी-सी चौकी पर लगे रंग के धब्बे उसी तरह चटख व चमकदार हैं, जैसे अभी-अभी के ढुलके रंग हों। ●


देवर्षि नारद
ब्रह्माजी ने सृष्टि की रचना शुरू की। नारद सहित अपने पुत्रों को बुलाया। कहा कि सृष्टि रचो। नारदजी नहीं माने।
सनक, सनंदन आदि बड़े भाई तपस्या करने चले गए। मैं भी तपस्या करूंगा।
सभी तपस्या करने चले गए, तो सृष्टि कौन रचेगा ?
लाख समझाने पर भी नारद तैयार नहीं हुए, तो...
जाओ, गंधर्व योनि में पैदा होकर विवाह रचाओ। तुम्हारे ज्ञान का भी लोप हो जाएगा।
नारद की अनुनय-विनय से ब्रह्माजी शांत हो गए।
पितामह, क्षमा करें। आखिर मैं आपका पुत्र हूं।
मेरा शाप सच होकर रहेगा, मगर तुम गंधर्वों में श्रेष्ठ होगे। वीणा वादन और गायन में निपुण, विद्वान और ज्ञानी बनोगे, किंतु सदा घूमते रहोगे।
शाप से मेरा उद्धार कब होगा ?
नारदजी पितामह ब्रह्मा के क्रोध से दुखी थे। उन्होंने भी शाप दिया...
क्रोध का परिणाम मुझे भुगतना ही चाहिए।
बिना कारण आपने मुझे त्यागा। जब तक तीन कल्प न बीत जाएं, धरती पर आपकी पूजा नहीं होगी।

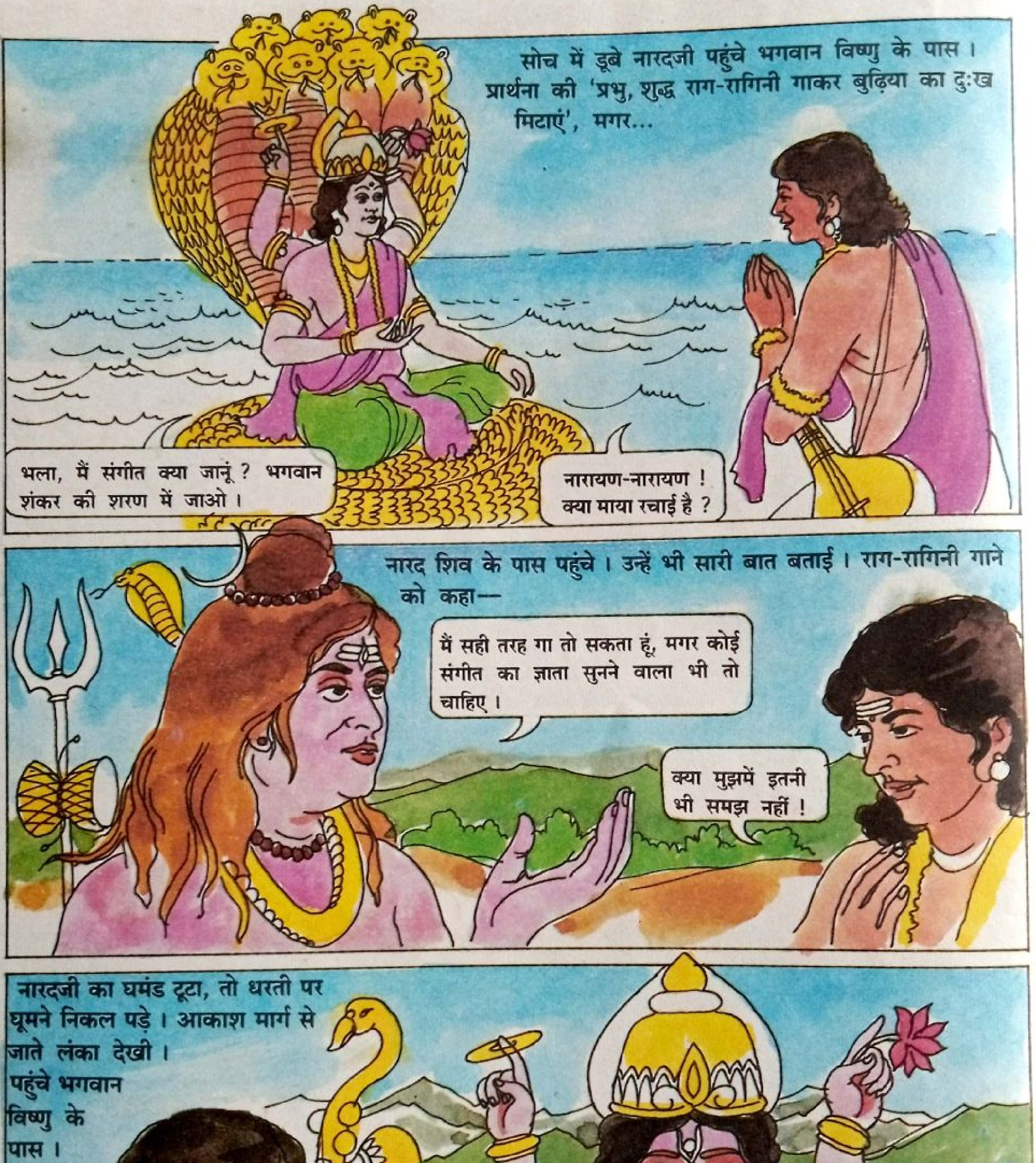

गंधर्वराज निःसंतान थे । संतान प्राप्ति के लिए शिव को प्रसन्न किया ।
गंधर्वराज, वर मांगो ।
मुझे ऐसे पुत्र का वरदान दीजिए, जो हरि भक्त हो ।
गंधर्वराज, यह बालक पूज्य होगा । इसका नाम उपबर्हण रखो ।
शिव ने वरदान दिया । गंधर्वराज के घर नारदजी ने पुत्र के रूप में जन्म लिया ।
जैसी आपकी आज्ञा !
धीरे-धीरे उपबर्हण युवा हो गए । नदी तट पर ध्यान में लीन बैठे थे, तभी गंधर्व कन्याएं आईं ।
कैसा सुंदर है ! पति हो तो ऐसा ।
योग शक्ति से शरीर छोड़, नया जन्म लेना होगा इसके लिए ।
उनमें से एक ने चित्ररथ गंधर्व के घर जन्म लिया । उसके साथ उपबर्हण का विवाह हो गया ।
आप जैसे श्रेष्ठ नर को पति रूप में पाकर मैं धन्य हुई ।
हां, मैं भी सुखी हूं ।

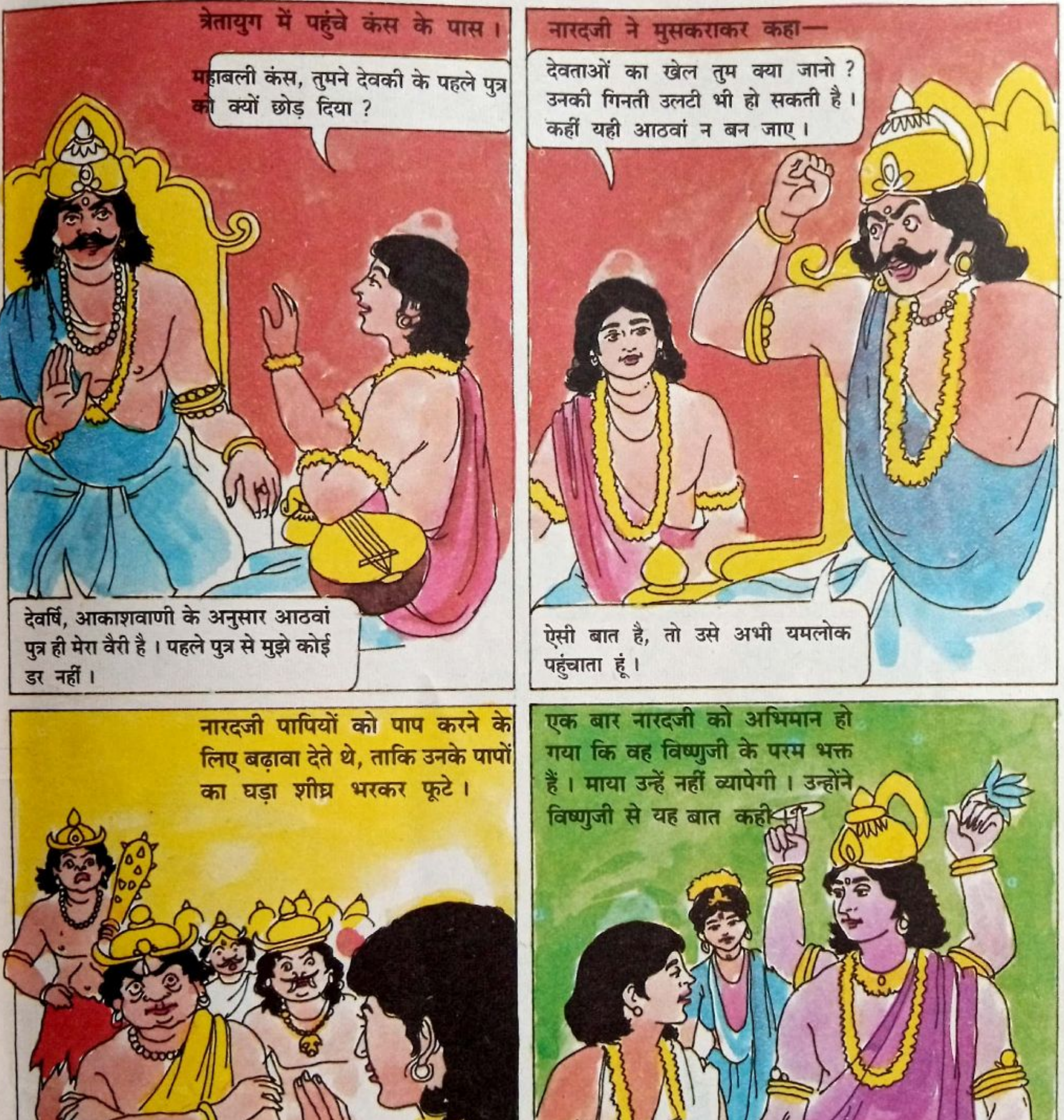

नारद उपबर्हण के रूप में जगह-जगह घूमते। वीणा पर भजन गाते, एक दिन ब्रह्माजी की सभा में पहुंचे। वहां नाचती रम्भा के ध्यान में खो गए। ब्रह्माजी को बुरा लगा।
तुम्हारे मन में विकार आ गया। जाओ, इस शरीर को त्याग, मनुष्य बनो।
जय नारायण!
नारदजी ने दासी कलावती के पुत्र के रूप में जन्म लिया। जन्म लेते ही मूसलधार पानी बरसा। जगत को नार (जल) देने वाले इस बालक का नाम नारद पड़ा।
कलावती तेरा पुत्र बहुत ही सुंदर है।
सब भगवान की लीला है।
पांच बरस का नारद हृष्ट-पुष्ट था। ज्ञान की बातें करता था। एक दिन कोई तेजस्वी ब्राह्मण घर आया। नारद ने उसकी बड़ी सेवा की।
लाइए, गरम पानी से आपके चरण धो दूं!
बेटा, हम तुम्हें श्रीकृष्ण मंत्र का उपदेश देते हैं।
सांप के काटने से उनकी मां की मृत्यु हो गई। नारद गंगा तट पर पीपल के नीचे ध्यान लगाकर बैठ गए।
अब तू शीघ्र ही जन्म-मरण के बंधन से छूट, बैकुंठ प्राप्त करेगा।



आकाश से एक दिव्य प्रकाश उतरकर धरती पर फैल गया। नारद उसी में समा गए। ब्रह्माजी के शाप की अवधि पूरी हुई।
नारद पुनः देवर्षि बन, स्वर्ग चले गए।
एक जगह ठहरना उन्हें रास नहीं आता था। कभी किसी लोक में, तो कभी कहीं। भगवान का गुणगान करना और दुखियों के दुःख दूर करना, उन्हें प्रिय था।
दक्ष यज्ञ में भस्म हो, उमा ने पार्वती के रूप में जन्म लिया। वह शिव को पति रूप में पाना चाहती
मगर शिव तपस्या में लीन थे। इंद्र ने तपस्या भंग करने कामदेव को भेजा...
एक ही बाण से शिव का ध्यान भंग हो जाएगा।
क्रोध में शिव का तीसरा नेत्र खुला।
किसने बाधा डाली मेरी तपस्या में ?
कामदेव भस्म हो गया। शिव का क्रोध शांत नहीं हुआ। देवता नारदजी की शरण में गए।
आप भगवान शंकर के प्रिय हैं। उनका क्रोध शांत करें।
शिव कृपालु हैं, मैं जाता हूं।


नारदजी शिव को प्रणाम कर, वीणा पर भजन गाने लगे। भोले शंकर प्रसन्न हो गए।
कैसे आए नारदजी ?
प्रभु, पार्वतीजी आपकी राह देख रही हैं।
भगवान शिव नारदजी का इशारा समझ गए।
ठीक है, पार्वती की परीक्षा लेता हूं। तुम्हें फिर बुलाऊंगा
कुछ दिन बाद शिव का संदेश मिला। नारदजी शिव-लोक पहुंचे।
पार्वती के साथ विवाह कर रहा हूं। जाओ, सारे देवताओं को निमंत्रण दे आओ।
शिव की बारात में नारदजी के भजन सभी को पसंद आए। वह अभिमान में भर उठे— मुझसे बड़ा गायक दूसरा नहीं। एक दिन....
क्या कष्ट है ? कौन हो तुम ?
मैं राग-रागिनी हूं। मुए नारद ने बेसुरे स्वरों में गा-गाकर मेरी यह दशा बना दी है कोई ठीक तरह गाए, तो मेरी दशा सुधरे


सोच में डूबे नारदजी पहुंचे भगवान विष्णु के पास। प्रार्थना की 'प्रभु, शुद्ध राग-रागिनी गाकर बुढ़िया का दुःख मिटाएं', मगर...
भला, मैं संगीत क्या जानूं? भगवान शंकर की शरण में जाओ।
नारायण-नारायण! क्या माया रचाई है?
नारद शिव के पास पहुंचे। उन्हें भी सारी बात बताई। राग-रागिनी गाने को कहा—
मैं सही तरह गा तो सकता हूं, मगर कोई संगीत का ज्ञाता सुनने वाला भी तो चाहिए।
क्या मुझमें इतनी भी समझ नहीं!
नारदजी का घमंड टूटा, तो धरती पर घूमने निकल पड़े। आकाश मार्ग से जाते लंका देखी। पहुंचे भगवान विष्णु के पास।
भगवन, धरती पर निशाचरों के अत्याचार....
मैं शीघ्र ही राजा दशरथ के घर राम के रूप में जन्म ले, इनका वध करूंगा।


त्रेतायुग में पहुंचे कंस के पास ।
महाबली कंस, तुमने देवकी के पहले पुत्र को क्यों छोड़ दिया ?
देवर्षि, आकाशवाणी के अनुसार आठवां पुत्र ही मेरा वैरी है । पहले पुत्र से मुझे कोई डर नहीं ।
नारदजी ने मुसकराकर कहा—
देवताओं का खेल तुम क्या जानो ? उनकी गिनती उलटी भी हो सकती है । कहीं यही आठवां न बन जाए ।
ऐसी बात है, तो उसे अभी यमलोक पहुंचाता हूं ।
नारदजी पापियों को पाप करने के लिए बढ़ावा देते थे, ताकि उनके पापों का घड़ा शीघ्र भरकर फूटे ।
एक बार नारदजी को अभिमान हो गया कि वह विष्णुजी के परम भक्त हैं । माया उन्हें नहीं व्यापेगी । उन्होंने विष्णुजी से यह बात कही ।
नारदजी, चलो गरुड़ पर बैठकर कहीं चलते हैं । माया-मोह की बात बाद में ।
चलिए ।


दोनों गरुड़ पर बैठकर चल दिए। एक सरोवर के निकट पहुंचे।
कितना स्वच्छ जल है !
जाओ, स्नान कर लो।
डुबकी लगाते ही उन्हें लगा, वह किसी राजा की रानी हैं। बूढ़ी होने पर एक ब्राह्मण उन्हें फिर उसी सरोवर पर ले आया। डुबकी लगाकर सिर उठाया, तो फिर नारद।
अरे, जल में खड़े-खड़े क्या सोच रहे हो ?
आपकी माया से जकड़ा गया। दो पल में ही इतना जीवन भोग लिया। मायापति आप धन्य हैं !
नारदजी अजर-अमर हैं। ज्ञानियों में श्रेष्ठ। नारद पुराण प्रसिद्ध है। वह देवता भी हैं, ऋषि भी, इसीलिए देवर्षि कहलाए। ऋषि उनसे ज्ञान चर्चा सुनते हैं।



बरसा सौ बार

— के. राधाकृष्णन अयिरूर

सियेन और लिसे दो भाई थे। सियेन बड़ा था। वह अमीर भी था। छोटा भाई लिसे गरीब था। गरीब भाई लिसे की मदद करना तो दूर, सियेन के दिल में उसके प्रति हमदर्दी तक नहीं थी। वह बार-बार उसकी निंदा किया करता था।

अपने भाई द्वारा अपमान सहना लिसे के लिए कठिन हो गया। दूर कहीं जाकर जीने का निश्चय कर, वह घर से निकल गया। घूमता-फिरता वह एक सराय में पहुंचा। रात घिरने लगी थी। वह वहीं टिक गया।

मार्च की ठंडी रात थी। सराय में कुछ युवक आग के पास बैठे हंस रहे थे। लिसे ने गिना, वे बारह थे। वह भी उन लोगों के पास बैठकर आग तापने लगा।

सहसा एक युवक ने लिसे से पूछा—"इस महीने का मौसम बहुत खराब है, सच है न!"

लिसे ने जवाब दिया—"ठंडा तो है, लेकिन यह कहना ठीक नहीं होगा कि खराब है। हर महीने का अपना-अपना महत्व है। सभी महीने अच्छे हैं।"

शेष सभी युवकों ने सिर हिलाकर उसकी बात पर सहमति व्यक्त की।

अगले दिन सवेरे लिसे उनसे विदा लेकर जाने लगा, तो एक युवक ने लिसे को एक छोटी-सी पेटी भेंट में दी। इसी ने उससे मौसम के बारे में पूछा था।

"इस पेटी को खोलकर जो भी इच्छा करोगे, पूरी होगी।" —उसने कहा।

लिसे ने कृतज्ञता प्रकट कर पेटी ले ली। कुछ दूर चलने के बाद उसको थकावट महसूस हुई, पेटी खोलकर उसने कहा—"एक पालकी मिल जाती, तो अच्छा होता।" तुरंत उसे अपने सामने एक पालकी दिखाई दी। साथ में चार कहार भी थे।

लिसे पालकी में बैठ गया। पालकी चल दी। बैठे-बैठे लिसे को भूख लगी, तो पेटी खोलकर बढ़िया खाना मांगा। रात में आराम करने के लिए एक तम्बू मंगाया। सवेरे राजकीय पोशाक मंगाई। पोशाक पहन उसने पालकी अपने गांव की ओर मोड़ दी।

सियेन अपने घर की छत पर खड़ा था। उसने देखा कि एक सुंदर पालकी लेकर कहार उसके घर की ओर आ रहे हैं। पालकी घर के सामने आकर रुक गई। कीमती कपड़े पहने एक आदमी पालकी से उतरा। सियेन ने ध्यान से उसकी ओर देखा।

"अरे, यह तो छोटा भाई लिसे है!" —उसने आश्चर्य से कहा।

सियेन झटपट नीचे उतरा। लिसे को गले से लगा कर प्यार से उसे अंदर ले गया। फिर

बढ़िया-बढ़िया पकवान मंगवाए। ऐसा दिखाया, जैसे उसे लिसे से बहुत प्यार है। मगर मन ही मन सोचता रहा, लिसे रातों-रात इतना अमीर कैसे बन गया?

आखिर बातों ही बातों में वह पूरी बात समझ गया। छोटे भाई के साथ बैठकर उसने रात का खाना खाया। सोने के लिए अपने कमरे में गया, लेकिन नींद नहीं आई। वह भी अब उसी तरह की पेटी पाना चाहता था। अंत में उसने भी उसी सराय में जाने की सोची।

सवेरे जैसे ही लिसे विदा लेकर गया, सियेन घर से निकल पड़ा। शाम को उसी सराय में जा पहुंचा। भाग्य अच्छा था कि वे सभी युवक वहीं बैठे आग ताप रहे थे। सियेन भी आग के पास बैठ गया।

जिस युवक ने लिसे से प्रश्न पूछा था, सहसा वही सियेन से बोला— "इस महीने का मौसम बहुत खराब है, सच है न!"

"हां, हां, सच है। इतना खराब महीना और दूसरा कोई नहीं। अगर मार्च न होता, तो दुनिया को कितना आराम होता।" —सियेन का जवाब था।

सवेरे विदा लेते समय उस युवक ने सियेन को एक हंटर दिया। बोला— "अगर सौ मांगो, तो यह हंटर सौ ही देगा।"

हंटर लेकर सियेन घर आया। वह बहुत खुश था। सौ मांगने पर सौ देनेवाला हंटर पाकर वह फूला नहीं समा रहा था। उतावली में उसने कहा—"हंटर, मुझे सौ दो।"

फिर क्या था? हंटर ने सियेन को मारना शुरू कर दिया—एक, दो, तीन....। मार खाते-खाते सियेन ने भागने की कोशिश की, लेकिन हंटर उसका पीछा करके उस पर बरसता रहा—बावन, तिरेपन, चौवन...। अंत में दर्द से कराहते चिल्लाते सियेन बिस्तर पर गिर गया। पूरे सौ बार बरसने के बाद ही हंटर ने उसे मारना बंद किया।

बड़े भाई की दुर्दशा की खबर पा, लिसे दौड़ता आया। भाई की हालत देखी, तो रो पड़ा।

"भैया, क्या हुआ था?" —उसने पूछा।

रोते-चिल्लाते सियेन ने उसे पूरी बात सच-सच बता दी।

लिसे ने कहा—"भैया, आपके पास पैसा तो है, लेकिन बुद्धि नहीं। सराय में आपने जिन बारह युवकों को देखा था, वे बारह महीने थे। हर महीने का अपना-अपना महत्व है। ऐसा कहना ठीक नहीं था कि कुछ अच्छे हैं, कुछ खराब। मार्च की निंदा करके आपने ठीक नहीं किया। उसी अपराध की सजा में आपको मिले सौ हंटर। अब आप इस हंटर को किसी ऐसे स्थान पर छिपा दीजिए, जहां इसे कोई न देख पाए।"

सियेन की समझ में बात आ गई। वह अपनी गलती पर पछताने लगा। उसने लिसे को गले से लगा लिया। दोनों भाई फिर प्यार से रहने लगे! ●



लोटा भर दूध

—डा. रामजन्म शर्मा

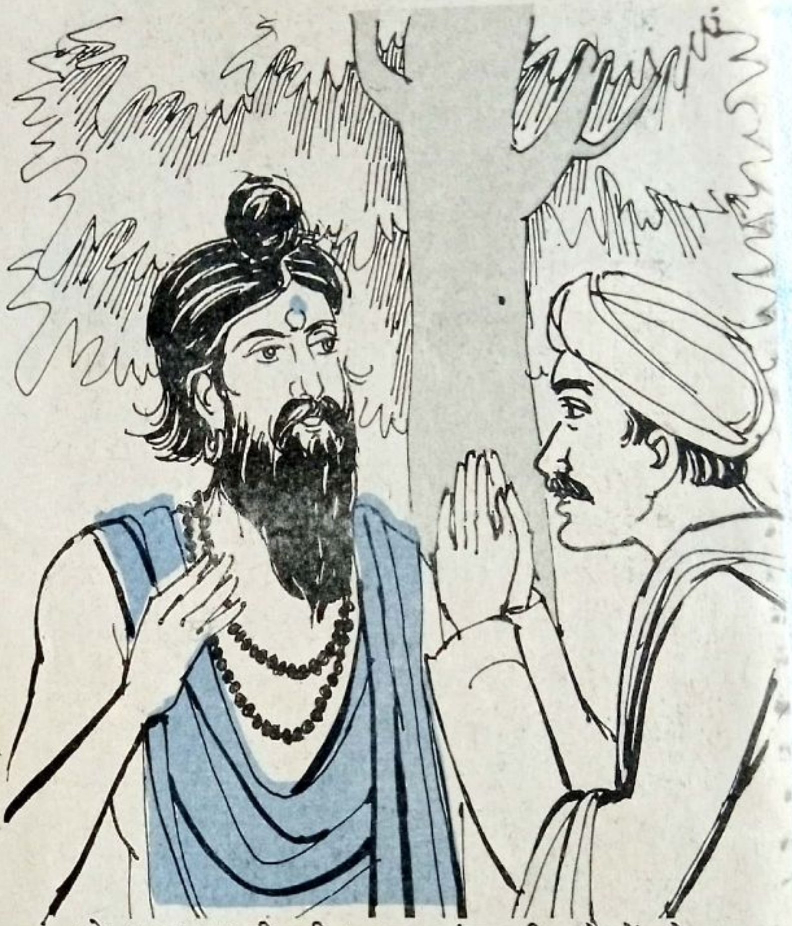
रामचरण के पास खेती बहुत थोड़ी थी। मगर भैंसें एक दर्जन से भी ज्यादा थीं। वह दूध बेचने का व्यवसाय करने लगा था। था वह परिश्रमी और लगन वाला। बस, आमदनी बढ़ती चली गई। नया घर बना और मान-सम्मान भी बढ़ा। इस घर में खाने-पीने की कमी न थी। वैसे रामचरण को बचपन से ही पहलवानी का शौक था। जवानी में उसके जोड़ का पट्ठा दूर-दूर तक नहीं था। घर का काम किया और अखाड़े की मिट्टी में जा लेटा। उसके जीवन का यही क्रम वर्षों तक चलता रहा।

उम्र ढलने के साथ-साथ रामचरण के काम का बोझ भी कम हो गया था। दो जवान बेटे थे उसके। अब घर-गृहस्थी का काम वे ही संभालते थे। रामचरण की जीवनचर्या बदल चुकी थी। काम से फुर्सत पा, वह शाम को रोज महादेव के मंदिर में माथा टेकने जाता था।

एक दिन मंदिर में आकर एक साधु ने धूनी रमाई। रामचरण भी रोज साधु की संगति में जाकर बैठने लगा। उनके लिए घर से दूध-दही भी ले आता। साधु उसके मन को पहचान गए थे। वह रामचरण को भक्ति का उपदेश देने लगे। रामचरण का मन उनमें रमने लगा। वह भक्तिरस में डूबने लगता। घंटों कीर्तन करता रहता। बचपन में पढ़ न सका था, मगर धीरे-धीरे उसे अक्षर ज्ञान हो गया। यह देखकर साधु बहुत प्रसन्न हुए।

कुछ दिन बाद साधु चले गए, मगर रामचरण भक्त बन गया। सुबह-शाम मंदिर जाना। कथा-कीर्तन करना और साधु संगति में रहना। अब गांव वाले उसे भगत जी के नाम से पुकारने लगे। वह साधु-संतों की सेवा करना अपना कर्त्तव्य समझता था, इसीलिए हर रोज एक-दो साधुओं को घर लाकर उन्हें खाना खिलाता। बैठाकर उनके चरण दाबता।

रामचरण की पत्नी पति की भक्ति से अपने



को धन्य मानती थी। वह गांव की औरतों से कहती—"हमारे पिछले जनम के कोई अच्छे काम हैं, जिनसे इनका मन भगवान की भक्ति में रम गया।"

बेटे-बहू भी रामचरण की बातों में दखल न देकर चुपचाप उसकी आज्ञा मान लेते। वह जो भी साधु-संतों पर खर्च करता, घर वाले खुशी-खुशी दे देते। बेटों को लग रहा था, पिता के सत्कर्मों के कारण उनकी आय चौगुनी हो गई है। गांव के कुछ लोग रामचरण से मन ही मन जलने लगे। वे अक्सर कहते—"यह रामचरण बड़ा भगत बनता है। दिन-रात साधु-संतों की मंडली इसके चक्कर काटती है। भला, इसमें ऐसा क्या है? पूरा ढोंगी है यह!"

मगर रामचरण इन बातों की ओर कान नहीं देता था। वह केवल घर आए साधु-संतों का स्वागत सत्कार ही न करता था, बल्कि अगर उसे पता चल जाता कि कोई महात्मा आए हैं, तो वह दौड़कर उनसे मिलने जाता। जो सेवा बन पड़ती, करता। कई बार साधु के वेश में ठगों ने भी उसे ठगा था। रात को घर

में सोए और सुबह घर का सामान लेकर चम्पत। गांव के बड़े-बूढ़े कहते—"रामचरण, छोड़ो साधु-संतों का यह झमेला। आज की दुनिया में साधु के वेश में कौन ठग आ जाए, क्या पता! कभी मुसीबत में न फंस जाना।"

उनकी बातें सुनकर रामचरण कानों पर हाथ लगाकर कहता—"भैया, ऐसा न कहो। जो जैसा करेगा, वैसा भरेगा। मैं तो साधु वेश की सेवा करता हूं। कोई साधु वेश में धोखा दे, तो मैं क्या कर सकता हूं?" उसकी बातें सुन, गांव वाले हंसकर रह जाते। आपस में कहते—"इस मूढ़ को समझाना कठिन है। अपने आप भुगतेगा।"

एक दिन जैसे उसकी परीक्षा का दिन आ गया। गांव से कुछ दूरी पर एक बड़ा नाला था। नाले के आसपास लम्बी-लम्बी घास उगी थी। पास ही गहन जंगल था। एक दिन पता चला कि कहीं से एक चीता आकर नाले की झाड़ियों में छिपा है। उसने गांव के चरते हुए जानवरों पर हमला किया था। दो दिन में कई जानवर मारकर खा चुका था। आज गांव वाले इकट्ठे होकर चीते की खोज में जाने वाले थे। वे हथियारों से लैस चौपाल पर इकट्ठा हुए।

इसी बीच में गांव के कुछ शरारती लोगों को शरारत सूझी। वे रामचरण के पास आए। बोले—"भगत जी, सुना है, एक बड़े संत नाले के पास बैठे तपस्या कर रहे हैं। लोगों ने उन्हें वहां से हटाना भी चाहा, मगर हटे नहीं। कहते हैं, मुझे तपस्या के लिए एकांत चाहिए। नाला बरसाती है। उसमें पानी भी नहीं। पता नहीं, बेचारे क्या खाते-पीते होंगे।"

यह सुनना था, रामचरण का मन व्याकुल हो उठा। भागा-भागा घर गया। घर से एक लोटा दूध लिया, चादर उठाई और चल दिया साधु की खोज में।

रामचरण को जाते देख, वे लोग घबराए। आपस में कहने लगे—"यह तो बहुत बुरा हुआ। हमने झूठ बोला। वहां साधु नहीं, चीता है। कहीं बेचारे पर हमला न कर दे, इसे रोकना चाहिए।"

उन लोगों ने जाते हुए रामचरण को रोकने के लिए आवाजें दीं, किंतु उसने जैसे कुछ सुना ही नहीं। वह अपनी धुन में मस्त चलता ही गया। थोड़ी देर में वह नाले के पास जा पहुंचा।

नाले के आसपास वह साधु को ढूंढ़ने लगा। बरगद का पेड़ था। वह पेड़ के पास गया। वहां भी साधु नहीं थे। रामचरण सोचने लगा—'साधुओं में कितने ही सिद्ध होते हैं। पता नहीं, वह सिद्ध महात्मा ही हों। मेरी परीक्षा लेने के लिए कहीं नाले के झाड़ों में छिपकर न बैठे हों।" यह सोच, वह सूखे नाले में उतर गया। वहां साधु को ढूंढ़ने लगा।

चीता घास में छिपा बैठा था। आदमी की आहट पा, चौकन्ना हो गया। चीते ने करवट बदली, तो पत्तों की चरमराहट हुई। आहट पाकर रामचरण उसी ओर बढ़ा। वह बार-बार 'सीताराम-सीताराम' पुकार रहा था।

उसे झाड़ियों में दो चमकती आंखें दिखाई पड़ीं। आगे बढ़ा, तो बैठा हुआ चीता दिखाई पड़ गया। चीता उसे देखकर चुप रहा। मगर बैठा था आक्रमण की मुद्रा में। रामचरण ने सोचा—"वही सिद्ध योगी चीते का रूप धारण किए हैं। मेरी परीक्षा लेने के लिए यह रूप लिया है उन्होंने। मगर मैं डरूंगा नहीं। और बिना दूध पिलाए यहां से हटूंगा भी नहीं।"

उसके मन में जरा भी भय नहीं था, क्योंकि वह तो चीते को सिद्ध महात्मा के रूप में देख रहा था।



उसने दूध-भरा लोटा चीते के पास रख दिया। हाथ जोड़कर घुटनों के बल बैठ गया। बोला— "महात्मा जी, प्रसाद ग्रहण करें।"

चीता भले ही क्रूर था, मगर रामचरण के मन की निर्मलता से उसकी क्रूरता जाती रही। वह धीरे से आगे खिसका। फिर लोटे में मुंह लगाकर दूध पीने लगा। रामचरण ने उसके पैरों पर मस्तक रख दिया। चीता चुपचाप दूध पीता रहा। रामचरण चीते के रूप में महात्मा को देख रहा था और चीता पालतू बिल्ली की तरह उसके व्यवहार से चकित था। इसी बीच चीते को खोजती गांव की भीड़ वहां आ गई। लोगों ने दूर से देखा, रामचरण चीते के पैरों के पास बैठा है। चीता दूध पीकर अपनी जीभ मुह पर इधर-उधर फेर रहा था। गांव के चौधरी के हाथ में बंदूक थी। वह बंदूक ताने भीड़ के साथ उधर लपका।

लोगों की भीड़ देख, चीते ने किसी तरह अपना बचाव किया। बंदूक की गोली चले, इससे पहले ही चीता झाड़ियों में छिप गया।

गांव वाले रामचरण के पास आए। वह भी 'सीताराम-सीताराम' रट रहा था। चीते जैसा भयंकर पशु ने उसकी बात मान, दूध पी लिया। उसे कुछ नहीं कहा। यह देख-सुनकर गांव वाले हैरान थे। वह चांडाल-चौकड़ी, जिसने रामचरण को मौत के मुंह में झोंकने का षड्यंत्र रचा था, अब उससे क्षमा मांग रही थी। 'भगत जी की जय' एक साथ गांव वाले बोल पड़े। फिर उसको साथ ले, लौट चले गांव की ओर।●





तीसरा मालिक

—कनक

बहुत समय पहले की बात है। एक गांव था। नाम था-सुंदरपुर। उस गांव में चतुरसेन नाम का ब्राह्मण रहता था। था वह बहुत चतुर। लोग उससे सलाह लेने आते रहते थे। वह उचित सलाह देकर सबको खुश कर देता। पर लोगों की खुशी से गुजारा चलना मुश्किल था। लोग कहते— 'चतुर अपनी चतुराई से रोटी नहीं खा सकता। कैसा आदमी है!'

एक दिन चतुरसेन की पत्नी बोली— "आप बहुत ही चतुर हैं। लेकिन यहां आपकी चतुराई का क्या मूल्य! आप राजदरबार में जाइए। राजा आपकी चतुराई का सम्मान करेंगे। वह आपको अच्छे पद पर रख लेगें। वहां कोई परेशानी भी नहीं रहेगी।"

पत्नी की बात सुन कर वह बोला— "वहां जाकर हम क्या करेंगे? जैसे-तैसे गुजारा तो चल ही जाता है। फिर हम दो ही जने हैं। किसके लिए धन इकट्ठा करें?"

पत्नी ने कहा— "आप नहीं जानते। लोग तरह-तरह के ताने मारते हैं। मुझसे यह सब बर्दाश्त नहीं होता?" फिर उदास हो गई। पत्नी का हठ देख, वह राजदरबार में जाने के लिए मान गया।

अगले दिन वह राजा के पास पहुंचा।

"महाराज, मेरा नाम चतुरसेन है। मैं आपकी सेवा करना चाहता हूं।"— उसने कहा।

राजा ने पूछा— "तुम क्या कर सकते हो?"

उसने कहा— "अपने मुंह से अपनी क्या तारीफ करूं? दो-चार दिन मुझे सेवा का अवसर दें।"

राजा ने उसे रख लिया।

दो दिन बीते। दरबार में दो आदमी आए। राजा ने उनसे आने का कारण पूछा। उनमें से एक बोला— "महाराज, मेरा नाम रतन है। मैं हरिपुर गांव का निवासी हूं। मेरे घोड़े को यह आदमी चुरा लाया है। मुझे घोड़ा दिला दें।"

तब दूसरे ने कहा— "महाराज, मेरा नाम सुखदास है। मैं हसनपुर नामक गांव में रहता हूं। मैंने कुछ दिन पहले घोड़ा खरीदा था। उस घोड़े को यह मेरे घर से चुरा लाया है।" दोनों एक-दूसरे को चोर बताते रहे। दोनों ने अपनी-अपनी दलीलें राजा के सामने रखीं। राजा सोच में पड़ गए। क्या फैसला दें?

चतुरसेन ने राजा से कहा— "महाराज, आप यह झगड़ा मुझ पर छोड़ दें। तीन दिन में इसका फैसला हो जाएगा। तब तक इन्हें हिरासत में रखा जाए। घोड़े को घुड़साल में भिजवा दें। चौथे दिन इस विवाद का निपटारा मैदान में हो। सभी लोगों को बुलाया जाए।" राजा ने यह बात भी मान ली।



चौथे दिन मैदान में खूब भीड़ इकट्ठी हो गई। चतुरसेन की चतुराई देखने के लिए सब उत्सुक थे। राजा ने कहा— "चतुरसेन, तुम अपना फैसला सुनाओ।" चतुरसेन ने नौकर से घोड़ा लाने को कहा। घोड़ा आ गया। दोनों आदमियों को बुलाया गया। चतुरसेन ने उन्हें एक-एक चाबुक थमाते हुए कहा— "तुम दोनों बारी-बारी से घोड़े पर चाबुक बरसाओ। अन्यथा तुम्हें फांसी दे दी जाएगी।" दोनों आदमी चाबुक बरसाने आगे बढ़े। तभी चतुरसेन ने उन्हें रोक दिया।

राजा ने पूछा— "चतुरसेन, तुमने जैसा कहा था, वैसा करने से इन्हें क्यों रोक लिया?"

"महाराज, मैंने समझ लिया कि घोड़ा किसका है?"— वह बोला। दोनों आदमी खुश हो गए।

"तो बताओ, घोड़ा किसे दिया जाए?"— राजा ने पूछा।

उसने कहा— "घोड़ा किसी को न दिया जाए। क्योंकि घोड़ा इनमें से किसी का भी नहीं है। दोनों ही चोर हैं। कहीं से इसे चुरा लाए हैं।" यह सुन सब दंग रह गए।

राजा ने पूछा— "तुमने यह फैसला कैसे किया?"

चतुरसेन ने कहा— "महाराज, पहले आप इस घोड़े को देखें। यह कितना उदास है। घुड़साल में रहते हुए तीन दिन से कुछ भी तो नहीं खाया है। और ये ऐसे मालिक हैं, जो इस दुखी घोड़े पर चाबुक बरसाने को तैयार हैं।"

राजा ने कहा— "तुमने ही तो चाबुक मारने के लिए कहा था। यदि ऐसा करने को तैयार न होते, तो फांसी की सजा मिलती। आदमी अपनी जान तो बचाएगा ही। इन्होंने भी अपनी जान बचाने की बात

सोची होगी।''

चतुरसेन ने कहा— ''महाराज, आपका कहना ठीक है। परंतु जब घोड़े को मालिक से बिछुड़ने का इतना दुःख है, इन्हें भी तो कुछ दुःख होना चाहिए। इनके चेहरे पर तो शिकन तक नहीं। असली मालिक इतना निर्दयी नहीं हो सकता कि अपने पालतू जानवर पर अकारण ही चाबुक बरसाने को तैयार हो जाए। अतः जाहिर है, घोड़ा किसी तीसरे का है।''

"फिर घोड़ा किसका है ? यह तो बताओ।''— राजा ने पूछा।

—''उसका भी पता लग जाएगा। पर इन्हें गिरफ़्तार कर लिया जाए। इनसे पूछा जाए। सच्चाई सामने आ जाएगी।'' राजा ने उनसे पूछा। दंड मिलने की बात से घबराकर उन दोनों ने अपराध स्वीकार कर लिया।

चतुरसेन ने सैनिकों से कहा— ''इस घोड़े को खुला छोड़ दो। जहां जाए जाने दो। तुम इसके पीछे-पीछे जाओ। जहां यह रुके, तुरंत लौटकर सूचना दो।''



घोड़ा चल पड़ा। सैनिक उसके पीछे हो लिए। गांव पर गांव छूटते गए। घोड़ा एक गांव में घुसा। एक झोंपड़ी के पास ठहर गया। वह जोर से हिनहिनाया। आवाज सुन कर एक बुढ़िया बाहर आई। वह घोड़े को देखते ही दौड़ी आई। फिर उसे थपथपाने लगी। बुढ़िया की आंखों में आंसू थे। घोड़ा खुश था।

एक सैनिक ने पूछा— ''बुढ़िया मां, यह घोड़ा तुम्हें कैसे मिला ?''

बुढ़िया बोली— ''यह मेरे बेटे का है। वह राजा की सेना में नौकरी करता था। मेरा बेटा पड़ोसी राजा से युद्ध करते मारा गया।''

''तुम अपनी गुजर-बसर कैसे करती हो ?''— सैनिक ने पूछा।

—''मैं जंगल से घास काट लाती हूं। घोड़े को खिलाती हूं। बची घास बेच देती हूं।''

सैनिक राजा के पास पहुंचे। बुढ़िया का किस्सा राजा को बताया। वह दुखी हो गए। बोले— ''मुझे वहां ले चलो।'' वह चले तो उनके साथ मंत्री व चतुरसेन भी थे।

राजा बुढ़िया के पास पहुंचे। बोले— ''मां, मुझे माफ कर दो। तुम्हारे बेटे की वीरता पर मुझे गर्व है। मैं शर्मिंदा हूं कि उसकी मृत्यु के बाद से आज तक तुम्हारी खोज-खबर नहीं ली।''

फिर राजा ने मंत्री से कहा— ''मंत्री जी, तुम बुढ़िया मां के रहने के लिए अच्छा प्रबंध कर दो। इन्हें किसी प्रकार की तकलीफ न हो।''

अगले दिन राजा ने भरी सभा में चतुरसेन की प्रशंसा की। कहा कि उसकी चतुराई से ही आज वह एक मृत सैनिक की मां से मिल सके। फिर राजा ने कहा— ''युद्ध में शहीद होने वाले सैनिकों के परिवारों की जिम्मेदारी अब से राज्य की होगी।''

चतुरसेन अब अपनी पत्नी के साथ राजधानी में सुख से रहने लगा। ●

चटपट

- अनीता— अब तो रात में तुम्हारी चारपाई के नीचे बिल्ली नहीं सोती ?
  विनीता— सोएगी कैसे ! मैंने चारपाई छोड़, जमीन पर सोना शुरू कर दिया है।
- ग्राहक— ऐसा कपड़ा जो सस्ता हो, मोटा हो और खूब चले।
  दुकानदार (नौकर से)— जरा भाई साहब को टाट लाकर दिखाना।
- पति— इन छुट्टियों में बनारस चलोगी या उन पैसों से साड़ी ला दूं ?
  पत्नी—बनारस ही ले चलो। वहां साड़ियों की क्या कमी ?
- दुकानदार (ग्राहक से)— कीड़े मारने की दवा भी साथ ले जानी है क्या ?
  ग्राहक— क्या करूंगा ? कीड़ों को यहीं भेज दूंगा।
- आदमी— क्या यह कमीज पूरी की पूरी सूती है ?
  कपड़े वाला (झुंझलाकर)— नहीं, इसके बटन प्लास्टिक के हैं।
- लेखक— मुझे यह उपन्यास लिखने में पूरे दो वर्ष लगे।
  मित्र— क्या जरूरत थी ? दस रुपए में यह छपा छपाया मिल जाता है।
- रामू— भगवान ने तुमसे वर मांगने को कहा। मांगा क्यों नहीं ?
  श्यामू— वर मांगकर क्या करता, मुझे तो वधू की जरूरत थी।
- राजेश— कान के आपरेशन से तुम्हें कुछ फायदा हुआ ?
  सुरेश— हां, पहले फोन की घंटी सुनाई नहीं देती थी। अब घंटियां ही घंटियां सुनाई देती हैं।
- कमला— तुम्हें पता है, ये सीढ़ियां कहां जाती हैं ?
  विमला— नीचे से देखो, तो ऊपर की तरफ और ऊपर से देखो, तो नीचे की तरफ।
- रमेश— तुम मेरे बालों को बार-बार टटोल क्यों रहे हो ? हजामत तो बना दी।
  नाई— कुछ नहीं। अपनी कैंची ढूंढ़ रहा हूं।
- खिलाड़ी— अगर ऐसा भोजन मुझे पांच दिन पहले दिया जाता, तो मैं मैच जीत जाता।
  बैरा— मगर साहब ! यह भी तो पांच दिन पहले का ही है।
- मां— दौड़कर जा, पान ले आ।
  बेटा— भला मैं जापान देश उठाकर कैसे ला सकता हूं ?
- मैनेजर— चुपचाप अपना काम करो।
  क्लर्क— अपना काम तो मैं चुपचाप ही करता हूं। यह तो दफ़्तर का काम है।
- ग्राहक— मुझे दांत का एक ब्रश चाहिए।
  दुकानदार— भाई साहब, यहां दांत का नहीं, प्लास्टिक का ब्रश मिलता है।
- पुलिस वाला— तुमने चोरी कैसे की ?
  चोर— आप यह कला सीखकर क्या करेंगे ?



तेनालीराम २५५

पहाड़ों की सैर



एक बार मंत्री, पुरोहित और सेनापति ने मिलकर सलाह की— 'जैसे भी हो, तेनालीराम से छुटकारा पाना ही होगा।' तेनालीराम को यह बात पता चल गई। पर चुप रहा।

कुछ दिन बाद मंत्री को राजा कृष्णदेव राय ने राज्य का दौरा करने भेजा। लौटने पर राजा ने पूछा— "मंत्री जी, कोई नया समाचार है क्या?"

मंत्री बोला— "महाराज, दक्षिण दिशा में पर्वत पर देवी का एक प्राचीन मंदिर मैंने देखा। अद्‌भुत है वह! क्यों न वहां चलकर देवी की पूजा की जाए। आप दर्शन करें, इसकी व्यवस्था कर आया हूं।"

सुनकर महाराज कृष्णदेव राय बोले— "कल ही चलते हैं।"

अगले दिन राजा, महारानी, मंत्री और पुरोहित के साथ चल पड़े। साथ में कुछ सैनिक भी थे। मंदिर के निकट पहुंचते-पहुंचते शाम हो गई।



मंत्री बोला— "महाराज, आप यहीं विश्राम करें। हम देखकर आते हैं, अंधेरे में रास्ता तो ठीक है।"

राजा ने कहा— "जल्दी देखकर आओ।" मंत्री, पुरोहित और तेनालीराम चल पड़े। अचानक तेनालीराम को कुछ याद आया। दौड़कर गया और पालकी का डंडा उठा लाया।

तेनालीराम आगे-आगे जा रहा था। मंत्री और पुरोहित थोड़ा पीछे चले। एक जगह तेनालीराम ने देखा, ऊबड़-खाबड़ चट्टानों के बीच खूब हरी घास है। तेनालीराम चौंका—'यहां इतनी घास कहां से आ गई।' उसने डंडा जमीन में मारा, तो वह नीचे धंसता चला गया। तेनालीराम बोला— "मैं आगे नहीं जा सकता। आगे कुछ गड़बड़ है।"



इसके बाद तीनों लौट आए। राजा ने कारण पूछा, तो तेनालीराम बोला— "महाराज, रास्ते में गड़बड़ है।"

"कैसी गड़बड़? चलो, मैं चलकर देखता हूं।"— यह कहते हुए राजा भी अन्य दरबारियों के साथ चल पड़े। घास के पास रुककर तेनालीराम बोला— "बस, महाराज! खतरा यहीं है।"

"तुम्हें कैसे पता?"— राजा ने पूछा।

"मेरे साथी ने बताया है महाराज!" — कहकर तेनालीराम ने डंडा जमीन में डाला, तो वह धंसता चला गया।

तभी मंदिर का पुजारी दूसरे रास्ते से वहां आ गया। राजा ने पूछा— "मंदिर में आने का रास्ता कौन-सा है पुजारी जी?"



पुजारी बोला— "महाराज, पहाड़ पर मंदिर है, तो वहां तक आने का रास्ता भी पथरीला ही होगा।"

—"तो यहां घास किसलिए डाली गई है?"

"महाराज, आपके मंत्री जी यहां आए थे। उन्होंने ही खाई चौड़ी करा कर घास डलवाई थी।"— पुजारी बोला।

"इसलिए कि और कोई पहुंचे न पहुंचे, मैं तो स्वर्ग में पहुंच ही जाऊं।" —कहकर तेनालीराम मुसकराने लगा। राजा सारी बात समझ गए। उन्होंने मंत्री को रात में ही अकेले वापस जाने को कहा। फिर वह चट्टानों के रास्ते से देवी के दर्शन करने चल पड़े।

अपने शिशु को दीजिए सेरेलॅक का अनूठा लाभ



कीजिए ठोस आहार की आदर्श शुरुआत

४ महीने की उम्र से आपके शिशु को दूध के साथ-साथ ठोस आहार की भी ज़रूरत होती है. उसे सेरेलॅक का अनूठा लाभ दीजिए.

पौष्टिकता का लाभ : सेरेलॅक का प्रत्येक आहार आपके शिशु की आवश्यकता के अनुसार सारे पौष्टिक तत्व प्रदान करता है — प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, फ़ैट, विटामिन तथा मिनरल. सभी पूरी तरह संतुलित.

स्वाद का लाभ : शिशुओं को सेरेलॅक का स्वाद बहुत भाता है.

समय का लाभ : सेरेलॅक पहले से ही पकाया हुआ है और इसमें दूध और चीनी मौजूद है. केवल इसे उबाले हुए गुनगुने पानी में मिला दीजिए.

पसंद का लाभ : तीन तरह के सेरेलॅक में से आप अपनी पसंद का चुन सकती हैं.

कृपया डिब्बे पर दिए गए निर्देशों का सावधानी से पालन कीजिए ताकि इसके बनाने में स्वच्छता रहे और आपके शिशु को संतुलित पोषाहार मिले.



6 महीने से

4 महीने से

6 महीने से

मुफ़्त
सेरेलॅक बेबी केयर बुक
लिखिये : सेरेलॅक
पोस्ट बॉक्स नं. 3
नई दिल्ली-110 008

Nestlé

सेरेलॅक का वादा : स्वाद भरा संपूर्ण पोषाहार

RK SWAMY/FSL/5112/HIN

बड़ा भाई

—स्वर्ण किरण

चीन में लीहान नाम का एक गांव था। वहां दो भाई रहते थे। बड़े का नाम था वि सांग। छोटे को यान सांग कहते थे।

बड़ा भाई धनवान था, पर उसके कोई संतान न थी। छोटा भाई गरीब था। उसके दो संतानें थीं। लड़का-लड़की।

एक दिन छोटे भाई ने पत्नी से कहा—"मैं धन कमाने परदेश जा रहा हूं। जल्दी ही लौट आऊंगा।" चलते समय वह बड़े भाई से बोला—"मेरे बच्चों का ध्यान रखना।" भाई से आश्वासन पा, वह परदेश चला गया।

बड़ा भाई तो दयालु था, मगर उसकी पत्नी छोटे भाई के बच्चों को बिल्कुल नहीं चाहती थी। एक दिन बड़ा भाई शिकार खेलने गया। देर तक शिकार न मिला। वह थककर चूर हो गया। अचानक उसने देखा, सामने एक विशालकाय दैत्य खड़ा है। वह डर से कांप उठा। भागने की राह देखने लगा, तभी दैत्य ने कहा—"तुम मुझसे बचकर कहां जाओगे ?"

"मुझ पर दया करो।"– वि सांग बोला।

"हां, तुम्हें मैं छोड़ सकता हूं, पर मेरी एक शर्त माननी होगी।"— दैत्य ने कहा।

—"कौन-सी शर्त ? मैं पूरी करूंगा।" दैत्य ने कहा—"मुझे कहीं से आंखें लाकर दे दो।" बेबस होकर वि सांग बोला—"मुझे पांच दिन की मोहलत दो।"

दैत्य मान गया।

वि सांग चलने लगा, तो दैत्य ने कहा—"ठीक समय पर आ जाना, वर्ना तुम्हें छोड़ूंगा नहीं।" वह घर पहुंचा, तो पत्नी को सारी बात बताई।

पत्नी ने कहा—"छोटे भाई के बेटे को ले जाना। उसकी आंखें दे आना, वर्ना दैत्य तुम्हें छोड़ेगा नहीं।"

यह सुनकर वह बोला—"ऐसी बातें करते तुम्हें शर्म नहीं आती ? अपने छोटे भाई के बच्चे पर मैं यह अन्याय नहीं कर सकता।"

"ठीक है, अपनी आंखें दे आओ। फिर काम कैसे करोगे ?" —पत्नी बोली। आखिर पत्नी की बात उसे माननी पड़ी।

अगले दिन वह बच्चे को लेकर दैत्य के पास पहुंचा। उसने दैत्य से कहा—"इस बच्चे की आंखें निकाल लो।"

बच्चा रोने लगा। बोला—"मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ? काश, मेरे पिता जी यहां होते ?" ...वह और जोर-जोर से रोने लगा। वि सांग ने एक नजर बच्चे पर डाली। उसका दिल पिघल गया। सोचने लगा—'छोटा भाई इसे मेरे पास छोड़ गया है। नहीं, मैं ऐसा नहीं करूंगा।'

दैत्य चाकू ले, बच्चे की आंखें निकालने ही वाला था, तभी वि सांग उस पर झपटा।

अचानक धमाका हुआ। दैत्य गायब था। उसकी जगह एक दिव्य पुरुष खड़ा था।

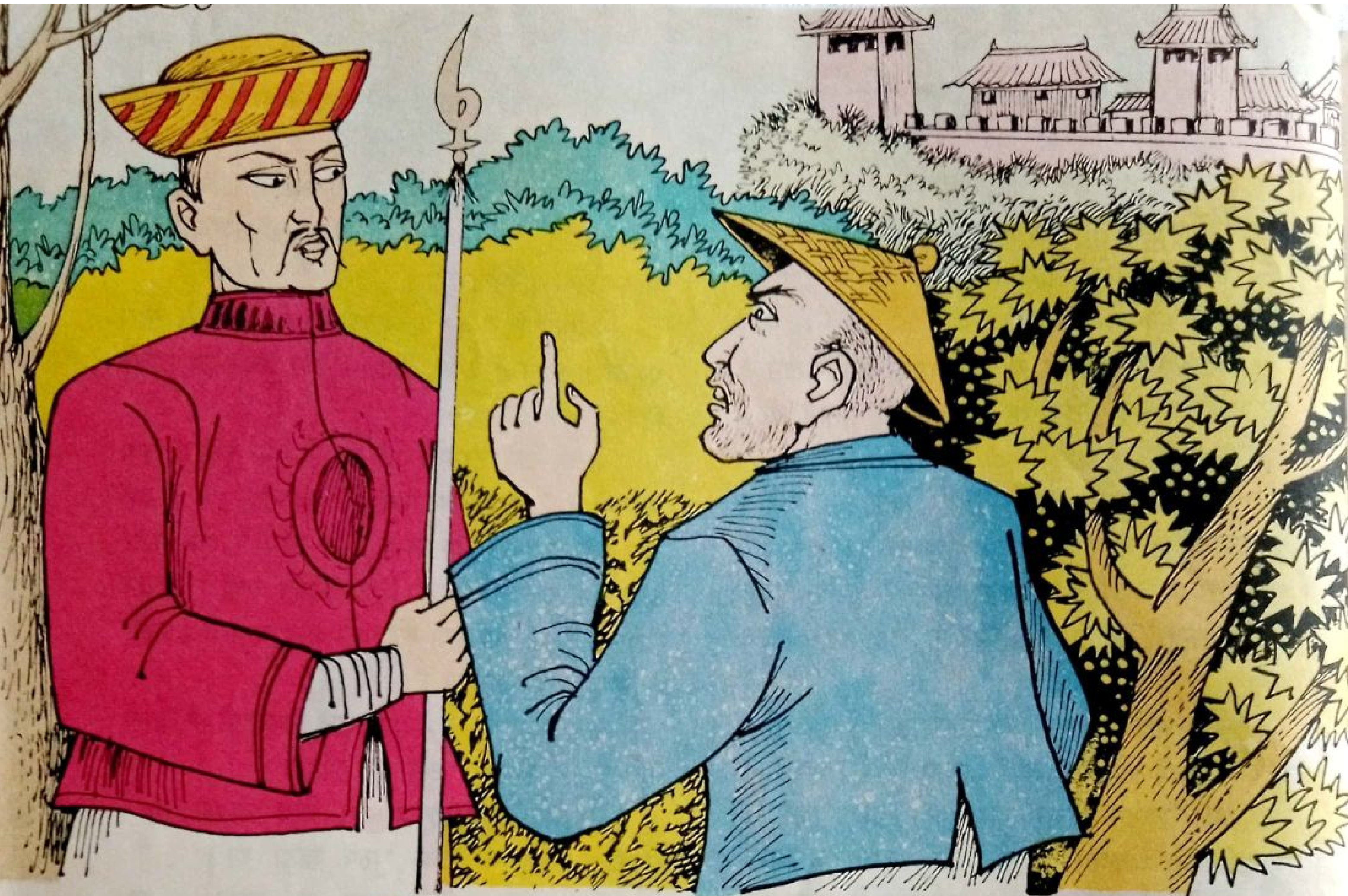
वि सांग कुछ समझ न सका। वह बोला—"आप कौन है ?"

—"मैं वन देवता हूं। मैंनें तुम्हारी आंखें खोलने के लिए ही यह शर्त रखी थी। छोटे भाई के बच्चों को तुम्हारी पत्नी सताती है। तुम देखते रहते हो। क्या यह ठीक है ?"

"आपने ठीक कहा। अब ऐसा नहीं होगा।" —वि सांग बोला।

उसी दिन से वि सांग का व्यवहार बदल गया था। वह छोटे भाई के परिवार का पूरा ख्याल रखने लगा। •





बूढ़ा किसान

—जयशंकर गुप्त

एक बार जापानियों ने कोरिया के शहर चे छ्यू पर कब्जा कर लिया। यह शहर ऊंची दीवार और कंटीली झाड़ियों की बाड़ से घिरा हुआ था। बाड़ इतनी घनी थी कि मनुष्य क्या, पशु-पक्षी भी इसके आर-पार मुश्किल से निकल पाते थे। दीवार के दूसरी ओर जापानी सैनिक दिन-रात पहरा देते रहते थे।

उस समय कोरिया का राजा अपने चापलूस और डरपोक मंत्रियों के बीच घिरा रहता था। वे हमेशा राजा को बहलाते—''महाराज, आप चिंता न करें। जल्दी ही चे छ्यू से जापानी खदेड़ दिए जाएंगे।''

एक दिन राजा ने रक्षा मंत्री को बुलाकर चेतावनी दी —''अब बार-बार वायदा करने से काम नहीं चलेगा। हमें जल्द से जल्द चे छ्यू वापस नहीं मिला, तो तुम बिना गरदन के दिखाई पड़ोगे।''

राजा की धमकी से वह बेचैन हो गया। नींद हराम हो गई। रक्षा मंत्री का नाम था —ते इयोन चिल। वह सेना का मुखिया भी था। एक दिन ते इयोन चिल वेश बदलकर चे छ्यू के आसपास की स्थिति जानने आया। घनी झाड़ियों की बाड़ और उसके पीछे दीवार पर पहरा दे रहे जापानियों को देख, उसका हौसला पस्त होने लगा, किंतु राजा की धमकी परछाईं की भांति उसका पीछा कर रही थी। वह उधेड़बुन में था, तभी खेत जोतता एक बूढ़ा किसान दिखाई पड़ा। रक्षा मंत्री ने सुना, किसान अपने काले बैल को डांट रहा था —'तू भी ते इयोन चिल हो रहा है ? आगे बढ़ने में तेरी नानी मर रही है क्या ?''

यह सुनते ही रक्षा मंत्री आग बबूला हो गया। आकर बोला —''मूर्ख, तू ते इयोन चिल को गाली दे रहा है, जिसकी बहादुरी के गीत गाए जाते हैं।''

किसान ने व्यंग्य पूर्वक कहा —''हां, बहादुर तो है ही। कितनी बहादुरी से उसने चे छ्यू दुश्मनों को सौंप दिया। अब तक वापस लेने की हिम्मत नहीं जुटा पाया

है बेचारा।''

''क्या ? तुझे दिखाई नहीं देता कि पूरा शहर घनी कंटीली झाड़ियों से घिरा है ?''—मंत्री क्रोध को दबाते हुए चिल्लाया।

''पर इन झाड़ियों को नष्ट करने से कौन रोकता है ?''—किसान ने प्रश्न किया।

'बकवास बंद कर।''—ते इयोन चिल फिर गुर्राया —''झाड़ियों के पीछे दीवार पर दुश्मन के सिपाही दिन-रात पहरा देते हैं। उधर फटकने वाले कुत्तों और बिल्लियों को भी वे तीर से छलनी कर देते हैं।''

''तो क्या इसी डर से मातृभूमि की रक्षा करने का साहस त्याग देना चाहिए ?''—किसान ने सवाल किया। फिर स्वयं उत्तर देते हुए बोला—''हर देशभक्त को अपनी धरती की रक्षा करने की कला आनी चाहिए।''

''तू तो ऐसे बोल रहा है, जैसे तुझे आती है यह कला ?''—रक्षा मंत्री ने कटाक्ष किया।

''आती क्यों नहीं ?''—बूढ़े ने झट कहा —''आज से पंद्रह महीने बाद मुझे सौ यौद्धा मिल जाएं, तो चे छ्यू पर कोरिया का झंडा फहराकर दिखा दूं।''

—''डींग हांकने में तेरा भी जवाब नहीं। ठीक है, मैं तुझे सौ लड़ाके दूंगा, लेकिन याद रखना, अगर तू अपनी बात से पीछे हटा, तो तेरी खाल से ढोल मढ़वा दूंगा।''

इतना कहकर ते इयोन चिल सीधा राजा के पास पहुंचा। किसान के बारे में सुनकर राजा जोर-जोर से हंसने लगा। फिर बोला —''इस बड़बोले पर निगाह रखो, ताकि यह कहीं भाग न जाए। भाग गया, तो हम उसकी गरदन नहीं कटवा सकेंगे।''

दूसरे दिन राजा के जासूस बूढ़े किसान की झोंपड़ी के आसपास मंडराने लगे। शाम को उन्होंने राजा को सूचना दी —''बूढ़ा दिन भर कागज की छोटी-छोटी थैलियां बनाता रहा।''

लगातार दस दिनों तक बूढ़े ने यही किया। ग्यारहवें दिन राजा को सूचना मिली —''आज वह कागज की पतंगें बनाता रहा।''

बीस दिन बीतने पर जासूसों ने राजा को बताया —''गांव के सभी बच्चों के साथ बूढ़ा सुबह से शाम तक पतंगें उड़ाता है।''

''वह पागल हो गया है, शायद।''—राजा बड़बड़ाया। अपने हाथों से बूढ़े की गरदन काटने को वह आतुर हो उठा। रक्षा मंत्री ने उसे समझाकर शांत करना चाहा —''हुजूर, मैंने उसे पंद्रह महीनों की मोहलत दी हुई है। वैसे भी अब वह भागकर कहां जाएगा ?''

''ठीक है, पर वह भागने न पाए''. —राजा ने हिदायत दी।

धीरे-धीरे गरमी बीत गई। जाड़ा आया। वह भी बीता और वसंत का आगमन हुआ। लगता था, जैसे किसान अपना वायदा भूल ही बैठा था। वह दिन भर खेतों में काम करता। घर का छप्पर ठीक करता। रस्सियां बनाता और जंगल से लकड़ियां बीनकर



लाता।

किसान की झोंपड़ी की ओर जासूसों की ताक-झांक बढ़ गई। मई के महीने में एक दिन किसान पहाड़ी पर खड़े होकर चे छ्यू को देर तक निहारता रहा। शाम को राजा के जासूसों की ओर इशारा करते हुए बोला —"कोई जाकर ते इयोन चिल से कह दे, इस महीने कृष्ण पक्ष की नौवीं तिथि को मैं सौ योद्धाओं की प्रतीक्षा करूंगा।"

नौवीं तिथि भी आ पहुंची। राजा ने सौ लड़ाकों के साथ एक जल्लाद भी भेजा। वह इसलिए कि अगर किसान अपना वायदा न निभा सके, तो उसकी तुरंत गरदन काट दी जाए।

आधी रात के समय किसान ने सैनिकों को समझाया —"मेरे पीछे-पीछे रेंगकर आगे बढ़ो। चमगादड़ों को भी हमारी आहट नहीं मिलनी चाहिए।"

सभी उसके पीछे रेंगते रहे। लगभग एक फर्लांग तक पेट के बल रेंगने के बाद, उसने फुसफुसाकर सैनिकों को रुकने का इशारा किया। फिर उनमें से दस सर्वाधिक चुस्त सैनिकों को साथ ले, वह आगे सरक गया। कुछ पल बीतते ही दस स्थानों पर आग की लपटें भड़क उठीं। हवा के तेज झोंकों ने लपटों को कंटीली झाड़ियों की ओर ठेल दिया। झाड़ियां चट-चट कर जल उठीं। लपटें आकाश छूने के लिए मचलने लगीं। किसान खुशी से चिल्लाया —"मानसे, मानसे।" (कोरियाई भाषा में 'मानसे' विजय घोष का प्रतीक है) फिर क्या था, कोरियाई सैनिकों का हृदय दुगने उत्साह और जोश से भर गया। वे भी 'मानसे' 'मानसे' करते हुए किले में जा घुसे। दुश्मन के सैनिकों को सपने में भी इस हमले की उम्मीद न थी। डरकर जल्दी ही उन्होंने हथियार डाल दिए।

सवेरा होते ही राजा भी चे छ्यू आ पहुंचा। किसान के पास जाकर उसने प्रश्न किया —"झाड़ियों तक आग पहुंची कैसे?"

—"मैंने दस जवानों को झाड़ियों के समीप सूखी घास में आग लगाने का आदेश दिया था।"

समीप ही रक्षा मंत्री खड़ा था। गुर्राया —"झूठ बोलता है तू? किले के आसपास कोई घास न थी, वरना मैं भी आग लगा सकता था।"

"तुम्हें घास-फूस उगाने से कौन रोक रहा था?"—किसान ने पूछा।

सेनापति का पारा और भी चढ़ गया —"जापानी सैनिक झाड़ी की ओर बढ़ने वाले जानवरों पर भी रहम नहीं करते थे। तू वहां घास-फूस कैसे उगा आया?"

किसान ने निडरता पूर्वक उत्तर दिया —"लड़ने के लिए धनुष, तीर और तलवार की जरूरत पड़ती है, पर विजय पाने के लिए दुश्मन की अपेक्षा, अधिक चालाक होने की आवश्यकता पड़ती है। सुनो, मैंने क्या किया! लगातार दस दिन तक मैंने कागज की थैलियां बनाईं। उनके भीतर घास-फूस के बीज भरता रहा। पतंग के पुछल्ले के साथ उन थैलियों को बांधा। बच्चे जब पतंग उड़ाते, तो ऊंचाई पर स्थित झाड़ियों में फंसकर पतंगों का फटना स्वाभाविक था। पंतग के साथ बंधी कागज की थैलियां भी फटती थीं। उन थैलियों में रखे बीजों को हवा नें बिखेरा। वसंत के आगमन पर बीजों में अंकुर फूटे। गरमी के आते-आते लम्बी और घनी घास-फूस उग आई। आज रात में जब हवा का रुख चे छ्यू की ओर था, मैंने आग लगा दी।"

राजा के सैनिक अधिकारी बूढ़े किसान की बात सुनकर खिसिया गए। अपनी खीज उतारते हुए बोले —"यह तो हम भी कर सकते थे।"

बूढ़े ने सिर झुकाकर कहा —"क्यों नहीं? पहले क्यों नहीं किया?" उसकी बात सुनकर सेनापति का सिर शर्म से झुक गया। मगर किसान रुका नहीं। अपनी बात कहकर वह नदी की ओर चल दिया। उसने मन ही मन कहा —"यह चे छ्यू इन धूर्तों को मुबारक। मैंने अपना फर्ज निभा दिया। अब इनके बीच नहीं रहूंगा।" और नाव पर बैठकर वह नदी के दूसरे किनारे की ओर बढ़ने लगा।

(कोरियाई लोक कथा)

जमींदार का बेटा

—अनुकृति शुक्ला



चेकोस्लोवाकिया के एक छोटे-से गांव में एक गरीब किसान रहता था। किसान की एक बेटी थी—मार्जेका।

मार्जेका जैसे-जैसे बड़ी होने लगी, उसकी सुंदरता की चर्चा दूर तक फैल गई। थी भी बहुत सुंदर—लम्बे सुनहरे बाल, फूल-सा कोमल चेहरा और चंचल नीली आंखें। स्वभाव इतना अच्छा था कि वह सारे गांव की लाड़ली थी।

किसान बड़े गर्व से कहता—"मेरी बेटी बिल्कुल राजकुमारी लगती है। मैं इसकी शादी किसी धनवान से ही करूंगा।"

एक दिन गांव में एक युवक आया। उसका नाम था येन्यीक। वह मजदूरी की तलाश में था। येन्यीक गरीब जरूर था, पर था बहुत मेहनती, ईमानदार और बहादुर। मार्जेका और येन्यीक एक-दूसरे को पसंद करने लगे। दोनों ने शादी करने का फैसला कर लिया।

किसान ने यह सुना, तो बहुत खुश हुआ। बोला—"येन्यीक गरीब जरूर है, पर अच्छा लड़का है। वह मेरी मार्जेका को खुश रखेगा।"

यह बात केत्साल ने सुनी। वह दूसरे गांव का किसान था। उसका काम था शादियों में बिचौलिया बनना। उसने किसान को खुश बैठे देखा, तो पूछा—"क्या बात है भाई! बहुत खुश नजर आ रहे हो?"

किसान मुसकराया—"हां, केत्साल! मैंने फैसला किया है, मैं मार्जेका की शादी येन्यीक से करूंगा।"

केत्साल ठिठक गया। कहने लगा—"तुम पागल तो नहीं हो गए। तुम्हारी बेटी राजरानी बनने के लायक है। येन्यीक निर्धन है। क्या तुम उस कंगाल से ब्याह दोगे अपनी बेटी को! तुम्हारी अकल पर पत्थर तो नहीं पड़ गए!"

किसान ने कहा—"पर येन्यीक बहुत अच्छा लड़का है।"

केत्साल बोला—"अच्छा है, मगर है तो गरीब। अपनी फूल-सी बेटी के लिए कोई अच्छा घर क्यों नहीं देखते?"

किसान चुप हो गया। केत्साल ने उसे समझाया—"मेरे गांव में एक जमींदार है मीखा। उसके दो लड़के थे। उनमें से एक लड़का बहुत दिनों से लापता है। अब मीखा का दूसरा बेटा वाशेक ही सारी सम्पत्ति का वारिस है। वह सुंदर और बुद्धिमान है। उसके पास बहुत बड़ा घर है। सैकड़ों बीघा जमीन है। मेरी मानो तो मार्जेका की शादी मीखा के बेटे से कर दो।"

किसान को यह बात भा गई। वह मीखा की धन-सम्पत्ति से प्रभावित हो गया। उसने केत्साल से कहा—"ठीक है, मेरी बेटी मार्जेका की शादी जमींदार मीखा के बेटे से ही होगी।"

केत्साल खुश हो गया। मीखा ने भी स्वीकृति दे दी। दोनों गांवों में शादी की तैयारियां होने लगीं।

मार्जेका ने यह सुना, तो सन्न रह गई। उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। वह अपने पिता से

बोली—"पिता जी, आप धन के लालच में आ गए। मैं येन्यीक को चाहती हूं। वाशेक से शादी नहीं करूंगी।"

केत्साल समझ गया कि येन्यीक के रहते मार्जेका किसी और से शादी नहीं करेगी। केत्साल के मन में कुटिलता आ गई। वह येन्यीक के घर पहुंचा। उसने कहा—"नौजवान, तुम गरीब मजदूर हो। मार्जेका को कभी खुश नहीं रख सकोगे। उसके रास्ते से हट जाओ। मैं उसकी शादी जमींदार मीखा के बेटे से करूंगा। हां, अगर तुम मेरी बात मन लो, तो तुम्हें सोने के तीन सौ सिक्के दे दूंगा।"

सुनकर येन्यीक बहुत नाराज हुआ। केत्साल के बहुत समझाने पर आखिर वह मान गया। वह बोला—"ठीक है केत्साल, पर मेरी एक शर्त है।"

"क्या शर्त है?"—केत्साल ने पूछा।

"तुम मार्जेका की शादी सिर्फ जमींदार मीखा के बेटे से ही करना।"—येन्यीक बोला।

केत्साल राजी हो गया। दोनों ने समझौता पत्र लिखा—'मार्जेका की शादी जमींदार मीखा के बेटे से होगी। इसके लिए येन्यीक को सोने के तीन सौ सिक्के दिए जाएंगे।'

केत्साल की मनचाही हो गई थी। जमींदार मीखा ने बहुत धूमधाम से शादी की तैयारियां शुरू कर दीं। उसने सारी बिरादरी को शादी में आमंत्रित किया।

उधर बेचारी मार्जेका का दिल टूट गया। वह येन्यीक का यह धोखा सहन न कर पाई। पागलों की भांति सारे दिन पहाड़ियों में अकेले घूमती रहती। झरनों के पास बैठकर रोती। घने जंगलों में उसकी करुण पुकार गूंजती रहती थी।

येन्यीक के इस विश्वासघात से गांव वाले बहुत नाराज थे। सारा गांव मार्जेका के दुःख से दुखी हो गया।

गांव वाले मार्जेका की दशा पर अफसोस जाहिर करते। सब कहने लगे—"येन्यीक ने अपनी होने वाली दुल्हन को बेच दिया।"

आखिर शादी का दिन आ गया। मीखा बड़ी धूमधाम से अपने बेटे की बारात लेकर मार्जेका के गांव आया। सारी बिरादरी वहां इकट्ठी थी।

येन्यीक को देखते ही लोगों में हलचल मच गई। "धोखेबाज आ गया।"—कोई फुसफुसाया। मार्जेका की सहेलियां रो पड़ीं। वे चिल्लाईं—"देखो, यह रहा येन्यीक! इसी की वजह से मार्जेका का यह हाल हुआ है।"

वहां आई नट मंडलियां गा उठीं—"देखो, येन्यीक ने अपनी दुल्हन को बेच दिया।"

मार्जेका क्रोध से लाल हो गई। वह चिल्लाई—"मैं इस धोखेबाज की सूरत भी नहीं देखना चाहती। मैं जमींदार मीखा के बेटे से ही शादी करूंगी।"

येन्यीक मुसकरा दिया। बोला—"बेशक तुम्हारी शादी जमींदार मीखा के बेटे से ही होगी।" यह कहकर वह मीखा के सामने जाकर खड़ा हो गया।

अचानक सबने देखा—मीखा फूट-फूटकर रो पड़ा था। उसने दौड़कर येन्यीक को गले लगा लिया। रोते हुए बोला—"मेरे बेटे, तुम मुझे छोड़कर कहां चले गए थे?"

सब लोग आश्चर्य चकित खड़े थे। येन्यीक बोला—"मैं ही जमींदार मीखा का खोया हुआ बेटा हूं। केत्साल से मेरी शर्त यह थी कि मार्जेका जमींदार के बेटे से ही शादी करेगी। मैं जमींदार मीखा का बेटा येन्यीक मार्जेका से शादी करूंगा। पिता जी, हमें आशीर्वाद दीजिए।"

मीखा बहुत खुश था। उसने मार्जेका और येन्यीक के विवाह की घोषणा कर दी।

सारा गांव खुशी से झूम उठा। मार्जेका के आंसू कब के थम चुके थे।

देहात की ऊंची-ऊंची पहाड़ियां ढोलों की थाप से गूंज उठीं। गांव वालों के पैर सुरीली धुनों पर थिरक उठे। धूमधाम से येन्यीक और मार्जेका की शादी हो गई। इस खुशी के मौके पर बेचारा केत्साल कहां चला गया, पता ही नहीं चला।

नंदन ज्ञान पहेली

१००० रु. पुरस्कार
कोई शुल्क नहीं

नियम और शर्तें

- पहेली में १७ वर्ष तक के पाठक भाग ले सकते हैं।
- **रजिस्ट्री से भेजी गई कोई भी पूर्ति स्वीकार नहीं की जाएगी।**
- एक व्यक्ति को एक ही पुरस्कार मिलेगा।
- सर्वशुद्ध हल न आने पर, दो से अधिक गलतियां होने पर, पहेली की पुरस्कार राशि प्रतियोगियों में वितरित करने अथवा न करने का अधिकार सम्पादक को होगा।
- पुरस्कार की राशि गलतियों के अनुपात में प्रतियोगियों में बांट दी जाएगी। इसका निर्णय सम्पादक करेंगे। उनका निर्णय हर स्थिति में मान्य होगा। किसी तरह की शिकायत सम्पादक से ही की जा सकती है।
- किसी भी तरह का कानूनी दावा, कहीं भी दायर नहीं किया जा सकता।
- यहां छपे कूपन को भरकर, डाक द्वारा भेजी गई पहेली ही स्वीकार की जाएगी। भेजने का पता है—
सम्पादक, 'नंदन' (ज्ञान-पहेली), हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१
- एक नाम से, पांच से अधिक पूर्तियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संकेत

बाएं से दाएं

१. मैं फिर कहता हूं— शहर मत जाना। (कल/कभी)

२. कृष्ण कथा से जुड़ा एक पेड़।

३. यह नए— की करामात है। (ढोल/खेल)

४. अब जरा— की भी बात हो जाए। (घर/वर)

६. वे— की देखरेख कर रहे थे। (कार/काम)

७. तो तुम भी घबरा जाते हो— से। (धूल/धूप)

८. देख लो, यहां— सके तो ठीक है। (मिल/चल)

९. एक दिन ऐसा— होना था। (ही/भी)

११. श्याम कुछ भी नहीं— पाया। (सोच/बेच)

१२. अगले ओलम्पिक खेल यहां होंगे।

ऊपर से नीचे

५. न जाने कब से वहां— हुआ था। (गड़ा/खड़ा)

१०. "इतने सारे— !"— उसने कहा। (बेर/ढेर)

जो तुम कहोगे।''

—''तो सुनो, तुम्हारे गांव में एक वैद्य रहता है, जो हर तरह का इलाज कर सकता है। उसके इलाज के कारण तुम्हारे गांव में कोई व्यक्ति अधिक समय तक बीमार नहीं रहता। वह वैद्य अपनी सभी जड़ी-बूटियां एक अलग झोंपड़ी में रखता है। तुम मुझे थोड़ी-थोड़ी करके वे जड़ी-बूटियां चुराकर ला दोगे, तो मैं तुम्हें मालामाल कर दूंगा।''

कुम्हार के मन में लालच घर कर चुका था। उसने बिना कुछ सोचे समझे कहा—''ठीक है। मैं आज रात से ही यह काम शुरू कर दूंगा। तुम मुझे आधी रात को यहीं मिलना। पर मुझे अपना इनाम हाथों हाथ मिलना चाहिए।''

आकृति ने 'हां' कहा और लोप हो गई।

उस रात कुम्हार ने वैद्य की झोंपड़ी से जड़ी-बूटियां चुराईं और तालाब के किनारे आ गया। वह आकृति वहां पहले ही से खड़ी थी। उसने मुहरों से भरी एक थैली कुम्हार को दे दी। कुम्हार थैली पाकर बड़ा प्रसन्न हुआ। खुशी-खुशी अपने घर चला

बोला— ठीक है केत्साल, पर मेरी एक शर्त है ।

"क्या शर्त है ?"—केत्साल ने पूछा ।

"तुम मार्जेका की शादी सिर्फ जमींदार मीखा के बेटे से ही करना ।"—येन्यीक बोला ।

केत्साल राजी हो गया । दोनों ने समझौता पत्र लिखा—'मार्जेका की शादी जमींदार मीखा के बेटे से होगी । इसके लिए येन्यीक को सोने के तीन सौ सिक्के दिए जाएंगे ।'

केत्साल की मनचाही हो गई थी । जमींदार मीखा ने बहुत धूमधाम से शादी की तैयारियां शुरू कर दीं । उसने सारी बिरादरी को शादी में आमंत्रित किया ।

उधर बेचारी मार्जेका का दिल टूट गया । वह येन्यीक का यह धोखा सहन न कर पाई । पागलों की भांति सारे दिन पहाड़ियों में अकेले घूमती रहती । झरनों के पास बैठकर रोती । घने जंगलों में उसकी करुण पुकार गूंजती रहती थी ।

येन्यीक के इस विश्वासघात से गांव वाले बहुत नाराज थे । सारा गांव मार्जेका के दुःख से दुखी हो गया ।

गांव वाले मार्जेका की दशा पर अफसोस जाहिर करते । सब कहने लगे—"येन्यीक ने अपनी होने वाली दुल्हन को बेच दिया ।"

आखिर शादी का दिन आ गया । मीखा बड़ी



गांव का देवता

—कुसुम गुप्ता

एक था कुम्हार। वह मिट्टी के बर्तन और खिलौने बनाकर बेचता था। मिट्टी की जरूरत पड़ती, तो वह गांव के बाहर वाले तालाब से मिट्टी ले आता। उसकी बनाई हुई चीजें लोग अच्छे दामों में खरीद कर ले जाते थे। उसका गुजारा अच्छी तरह हो जाता था। परंतु कुम्हार संतुष्ट नहीं था। वह जल्दी ही धीरे-धीरे बर्तनों का मूल्य बढ़ाता गया। वह बहुत अमीर बनना चाहता था।

एक दिन कुम्हार तालाब से मिट्टी लेने गया। मिट्टी खोद रहा था, अचानक उसे किसी के हंसने की आवाज सुनाई दी। चौंककर इधर-उधर देखने लगा। उसे वहां कोई भी दिखाई नहीं दिया।

वह फिर से मिट्टी खोदने लगा। थोड़ी देर बाद उसे फिर उसी तरह हंसने की आवाज सुनाई दी। इधर-उधर देखने पर उसे फिर कोई दिखाई न पड़ा, तो वह बहुत हैरान हुआ। उसने जोर से पुकारा—"कौन है? इस तरह हंस क्यों रहे हो? सामने क्यों नहीं आते?"

कुम्हार की बात सुनकर आवाज आई—"मैं ग्राम देवता हूं। तुम्हारे पीछे वाले नीम के पेड़ पर बैठा हूं। तुम्हारी मूर्खता पर हंस रहा हूं।"

कुम्हार ने पीछे मुड़कर देखा। नीम के पेड़ पर उसे सचमुच विचित्र आकृति बैठी दिखाई दी। उसने रंग-बिरंगे वस्त्र पहने थे। उसे देखकर कुम्हार बोला—"अच्छा बताओ, मैंने क्या मूर्खता की है?"

यह सुनकर वह आकृति बोली—"तुम इतने दिनों से मिट्टी के बर्तन बनाकर बेच रहे हो। क्या मिलता है इससे?"

कुम्हार ने कहा—"बस, मुझे दो वक्त की रोटी मिल जाती है।"

—ऊंह, दो वक्त की रोटी! बस यही न! क्या तुम्हारे पास अच्छा मकान है?। बढ़िया कपड़े हैं? सवारी करने के लिए घोड़े हैं?"

कुम्हार ने यह बात सुनकर सिर झुका लिया बोला—"नहीं, यह सब तो नहीं है मेरे पास।"

—"क्यों नहीं, किसे नहीं चाहिए यह सब?"

इस पर वह आकृति बोली—"तुम यह सब चाहते हो, तो तुम्हें वह सब करना होगा, जो मैं कहता हूं। बोलो मंजूर है?"

कुम्हार बोला—"हां, हां! मैं वह सब करूंगा, जो तुम कहोगे।"

—"तो सुनो, तुम्हारे गांव में एक वैद्य रहता है, जो हर तरह का इलाज कर सकता है। उसके इलाज के कारण तुम्हारे गांव में कोई व्यक्ति अधिक समय तक बीमार नहीं रहता। वह वैद्य अपनी सभी जड़ी-बूटियां एक अलग झोंपड़ी में रखता है। तुम मुझे थोड़ी-थोड़ी करके वे जड़ी-बूटियां चुराकर ला दोगे, तो मैं तुम्हें मालामाल कर दूंगा।"

कुम्हार के मन में लालच घर कर चुका था। उसने बिना कुछ सोचे समझे कहा—"ठीक है। मैं आज रात से ही यह काम शुरू कर दूंगा। तुम मुझे आधी रात को यहीं मिलना। पर मुझे अपना इनाम हाथों हाथ मिलना चाहिए।"

आकृति ने 'हां' कहा और लोप हो गई।

उस रात कुम्हार ने वैद्य की झोंपड़ी से जड़ी-बूटियां चुराईं और तालाब के किनारे आ गया। वह आकृति वहां पहले ही से खड़ी थी। उसने मुहरों से भरी एक थैली कुम्हार को दे दी। कुम्हार थैली पाकर बड़ा प्रसन्न हुआ। खुशी-खुशी अपने घर चला

गया ।

कई रात तक वह ऐसा ही करता रहा । किसी को कानों-कान भी खबर न हुई । किंतु जब वैद्य को पता चला कि उसकी जड़ी-बूटियां चोरी हो रही हैं, तो वह बहुत परेशान हुआ । उसने बहुत निगरानी भी रखी । किंतु चोर नहीं पकड़ा जा सका ।

आखिर एक दिन ऐसा भी आ पहुंचा, जब वैद्य की अधिकांश जड़ी-बूटिया चोरी हो गईं । अब वह बीमार लोगों का पूरा इलाज नहीं कर पाता था । फलस्वरूप गांव के लोग बीमार व दुखी रहने लगे । वैद्य को नए सिरे से सारी जड़ी-बूटियां इकट्ठी करने के लिए काफी समय चाहिए था ।

उधर कुम्हार चोरी से प्राप्त मुहरों को एक घड़े में इकट्ठा करता जा रहा था । घड़ा गले तक भर चुका था ।

—''बस, आज रात बची सारी जड़ी बूटियां और चुरा लाऊं ।'' ''फिर आराम से रहूंगा ।''

उस रात कुम्हार रात को वैद्य की झोंपड़ी में जा पहुंचा । वह जड़ी-बूटियां चुराकर ले ही जा रहा था कि अचानक उसे ठोकर लगी । वह औंधे मुंह धरती पर जा गिरा । दर्द इतना तेज था कि उसका सिर किसी पत्थर से टकराया । वह बेहोश हो गया ।

सुबह जब लोगों ने कुम्हारे को वैद्य की झोंपड़ी के बाहर बेहोश पड़ा पाया, तो वे उसे उठाकर वैद्य के पास ले गए । वैद्य ने उसका निरीक्षण किया । वैद्य बोला— ''देखता हूं । शायद कुछ जड़ी-बूटियां मिल जाएं ।'' वह झोंपड़ी में गया । परंतु कुछ ही समय पश्चात निराश होकर वापस आ गया । झोंपड़ी में जड़ी-बूटियां थीं ही कहां ! बाकी बची जड़ी-बूटियां भी इस रात कुम्हार ही चुरा ली थी ।



अचानक वैद्य को कुम्हार के पास पड़ी एक पोटली दिखाई दी । उसने उत्सुकतावश उस पोटली को खोला, तो उसमें कुछ जड़ी बूटियां निकली, वैद्य को बड़ा आश्चर्य हुआ । परंतु उस सयय वह सब कुछ भूलकर उन जड़ी बूटियों से कुम्हार का इलाज करने लगा ।

कुछ ही देर में कुम्हार को होश आ गया । जब उसने अपने आसपास लोगों को इकट्ठा देखा, तो उसे सब कुछ याद आ गया । वह सारी बात समझ गया । किंतु चुप रहा ।

अगली रात वह मुहरों भरा घड़ा ले तालाब के किनारे गया । वही आकृति आज भी उसका बेसब्री से इंतजार कर रही थी । कुम्हार ने उसे घड़ा थमाते हुए कहा— ''मुझे नहीं चाहिए ऐसा धन जो सिर्फ मुझे ही खुशी दे । अपनी मुहरें वापस ले लो । वैद्य की सारी जड़ी बूटियां लौटा दो, ताकि वह बीमार व दुखी लोगों की सेवा कर सकें ।''

उत्तर में वह आकृति मुसकराई ।

कुम्हार बोला— ''मुसकराओ मत । अब मैं समझ गया हूं कि जड़ी-बूटियां चुराकर मैंने सारे गांव का सुख चैन छीना था । उन्हें लौटा दो ।'द

आकृति ने कहा—''घबराओ नहीं । मैं तो तुम्हारे लालच को तोड़ना चाहता था । मुझे खुशी है कि तुम्हें अपनी भूल समझ में आ गई । ये मुहरें अपने पास रखो । वैद्य को भी उसकी जड़ी-बूटियां वापस मिल जाएंगी । हां एक बात याद रखना—आगे से कभी बिना सोचे-समझे रुपए के पीछे मत भागना ।''

अगले दिन वैद्य की झोंपड़ी फिर जड़ी-बूटियों से भर गई । कुम्हार ने उन मुहरों से बहुत-सी जड़ी बूटियां खरीदकर वैद्य को दे दी । गांव के गरीब एवं दुखी लोगों का मुफ्त इलाज हो सके । ●


चीटू-नीटू
इस बार गर्मी की छुट्टियों में मैं नए-नए आविष्कार कर के अपना नाम विज्ञान में ऊंचा करूंगा
मैंने उड़ जाने वाली स्याही का आविष्कार कर लिया है। सब दोस्तों को यही स्याही... जो काम करेंगे उड़ जाएगा
सब को बचाने का एक ही तरीका है, स्याही बदल दूं। लेकिन दूसरों का बुरा सोचने वाले चीटू की दवात में...
यह बढ़िया स्याही लो दोस्त, घर में तैयार की है। नमूना मुफ्त
अब सब से पहले छुट्टियों का काम खत्म कर लें...
सब की कापियां भर गईं और मेरे पन्नों पर लिखे उत्तर गायब
ऊंचे नाम के चक्कर में नाक नीची हो गई



शीर्षक बताइए

इस चित्र को ध्यान से देखिए। इस चित्र के अनेक शीर्षक हो सकते हैं। आप भी कोई सुंदर सा शीर्षक सोचिए। उसे पोस्टकार्ड पर लिखकर १० जून '८९ तक **शीर्षक बताइए, 'नंदन' मासिक, हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१** के पते पर भेज दीजिए। चुने गए शीर्षकों पर पुरस्कार दिए जाएंगे।

परिणाम : अगस्त '८९

चित्र : कुलवंत सिंह

पुरस्कृत चित्र

विकासचन्द्र ओझा, टी-२/४६ अशोक रोड, टी. आर. एफ. (टेल्को), जमशेदपुर (बिहार)

इनके चित्र भी प्रशंसनीय रहे— कार्तिकेय कुमार शर्मा, देवरिया; गोपालसिंह, संगरिया मंडी (राज.); मास्टर विष्ट, पंचकुला (हरि.); जय साहू, दिल्ली; मिलन सक्सेना, कानपुर; रीना शर्मा, सादोपुर, गाजियाबाद; चिन्मय चटर्जी, रांची।



पुरस्कृत कथा:

मेरा घोड़ा

पुराने समय की बात है । एक थे राजा । राजा को घोड़े पालने का बहुत शौक था । उनके अस्तबल में कई प्रकार के घोड़े थे । उसी राज्य में रहता था माधव ।

एक बार किसी ने राजा को माधव के बारे में बताया । यह भी कहा कि उसके पास हवा से बातें करने वाला एक काला अरबी घोड़ा है ।

अरबी घोड़े की तारीफ सुन, राजा साधारण आदमी के वेश में माधव के पास पहुंचे । घोड़े की मुंहमांगी कीमत अदा कर, उस घोड़े पर बैठकर महल की ओर चल पड़े । राजा ने जैसा घोड़े के बारे में सुना था, घोड़ा वैसा ही निकला । एकदम हवा से बात करने वाला । घोड़े पर सवार हो, राजा तेजी से नगर के बाहर निकल आए ।

इतने में किसी ने तीन बार तालियां बजाई और घोड़ा रुक गया । राजा ने घोड़ा आगे बढ़ाने की लाख कोशिश की, पर घोड़ा टस से मस न हुआ । राजा ने देखा, एक छोटा-सा लड़का घोड़े को बड़े प्यार से देख रहा है । घोड़ा भी चुपचाप लड़के के पास चला आया ।

राजा ने लड़के से पूछा— "कौन हो तुम ?"

लड़के ने कहा— "मैं घोड़े के व्यापारी माधव का छोटा लड़का— राघव हूं।"

—"घोड़ा रोकने का कारण ?"

"यह मेरा प्यारा घोड़ा है । मैं इसे बहुत प्यार करता हूं और घोड़ा भी मुझे बहुत चाहता है ।"— राघव ने कहा ।

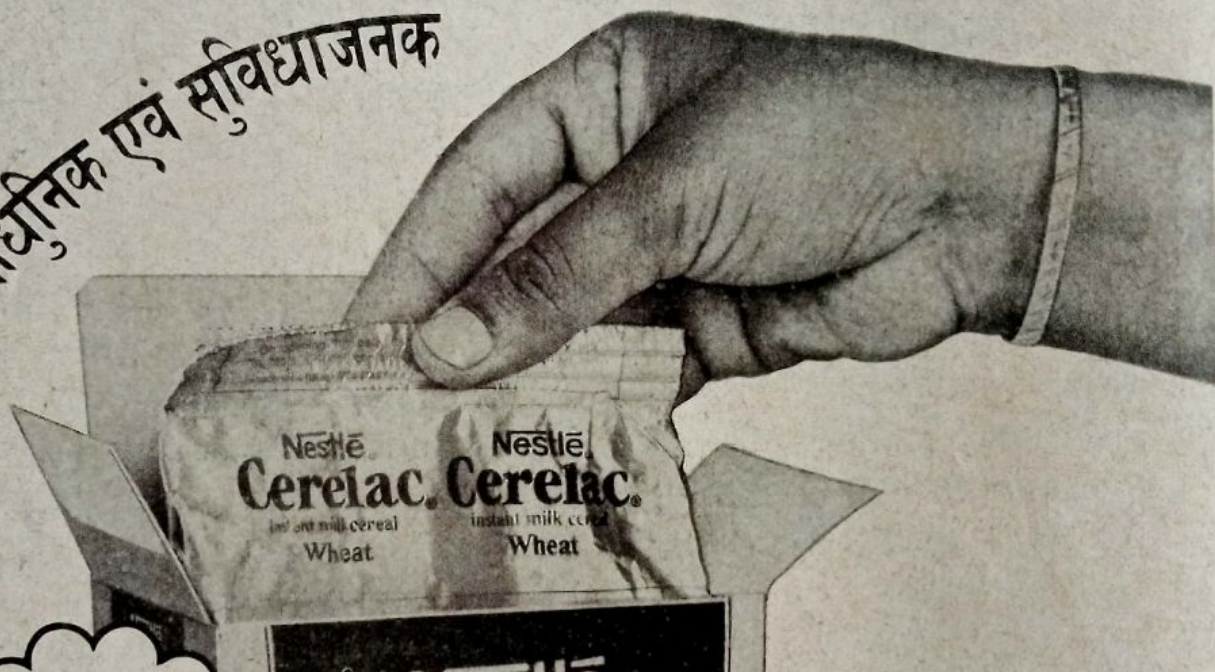
राजा ने कहा— "जानते हो, घोड़े को मैंने मुंहमांगी कीमत देकर खरीदा है । अब यह घोड़ा मेरा है ।"

—"महाराज, मैं तो जानता हूं कि यह घोड़ा आपका है, पर यह बात घोड़ा जाने तब न ! घोड़े को पैसों से क्या लेना देना ! घोड़े को पैसा नहीं, प्यार चाहिए महाराज ! सिर्फ प्यार । मैं घोड़े के बिना एक पल भी नही रह सकता और न मेरे बिना घोड़ा । लेकिन आपने इसे खरीद लिया है । इसलिए अब आप इसे ले जा सकते हैं ।" उसकी आंखों से टप-टप आंसू गिरने लगे । राघव को रोता देख, घोड़ा भी उदास हो गया । राघव का घोड़े के प्रति इतना स्नेह देख, राजा का मन भी भर आया । उन्होंने कहा— "घोड़े के प्रति तुम्हारा स्नेह देखकर अब मैं इसे ले जाना नहीं चाहता । लो, मैं तुम्हें इसे उपहार के रूप में देता हूं ।"

— महेशकुमार चतुर्वेदी, छोटी सादड़ी

इनकी कहानियां भी पसंद की गईं : बुद्धा मारडी, सारजमदा (बिहार); हीरा तिवारी, बेहरा गोकुल (उ. प्र.); वीरेंद्र सिंह राठौड़, गुड़गांव ।

अब! सेरेलॅक का लाभ किफ़ायती रीफ़िल पैक में उठाइए.





4महीने की उम्र से आपके शिशु को दूध के साथ-साथ ठोस आहार की भी जरूरत होती है। इसी समय से आप उसे सेरेलॅक का लाभ देना शुरू कीजिए। सेरेलॅक का प्रत्येक आहार सम्पूर्ण पोषाहार है तथा सेरेलॅक का स्वाद शिशुओं को भाता है। सेरेलॅक तैयार करना बहुत आसान है – बस इसे उबाले हुए गुनगुने पानी में मिला दीजिए। सेरेलॅक तीन स्वादों में उपलब्ध है – सेरेलॅक व्हीट, व्हीट एपल, व्हीट ऑरेन्ज।

हर रीफिल पैक में सेरेलॅक व्हीट की गुणवत्ता, हर थैली को वायु बंद सील करके, सुरक्षित रखी जाती है। फिर इसे एक बाहरी डिब्बे में पैक किया जाता है। हर रीफिल पैक, नेस्ले के क्वालिटी आश्वासन का प्रतीक है।

कृपया पैक पर दिए गए निर्देशों का सावधानी से पालन कीजिए ताकि इसके बनाने में स्वच्छता रहे तथा आपके शिशु को सन्तुलित पोषाहार मिले। रीफिल पैक को खोल कर उस में से सेरेलॅक निकाल कर तुरन्त किसी वायु बंद डिब्बे में रख दीजिए।

मुफ़्त
सेरेलॅक बेबी केयर बुक
लिखिये : सेरेलॅक
पोस्ट बॉक्स न. 3
नई दिल्ली- 110 008

Nestlé

R.K. SWAMY/FSL/5340 HIN

बातें रंग-बिरंगी

मोती- सभी कीमती पत्थर जमीन से खनिजों के रूप में प्राप्त किए जाते हैं, लेकिन मोती समुद्र में रहने वाले एक छोटे-से जीव द्वारा बनाए जाते हैं। इस जीव को घोंघा या औयस्टर कहते हैं। इस जीव का जीवन बड़ा संघर्ष वाला है। यह मुसीबत में जीता है। समुद्र में बड़ी मछलियां इसे खा जाती हैं। अपनी रक्षा के लिए यह अपने शरीर के चारों ओर एक कड़ा खोल बनाता है। इसे सीप कहते हैं। इसी के अंदर मोती का निर्माण होता है।

कभी-कभी ऐसा होता है कि सीप के अंदर बालू का कण चला जाता है। इस कण से इसके शरीर में जलन होने लगती है। जलन से छुटकारा पाने के लिए, घोंघा इस कण पर सीप के पदार्थ की परत दर परत चढ़ाए चला जाता है। यह परत कैल्सियम कार्बोनेट की होती है। कुछ ही दिनों में बालू के कण पर चमकदार पदार्थ की एक गोली-सी बन जाती है। यही सच्चा मोती होता है। इसका रंग सामान्यतः सफेद होता है, लेकिन यह काला और गुलाबी भी हो सकता है।

आजकल मोती कृत्रिम तरीके से भी बनने लगे हैं। इस तरीके में बालू के कण सीप में प्रवेश करा देते हैं। लम्बे समय बाद जब सीप को खोला जाता है, तो उसके अंदर मोती मिलता है। इनको 'कल्चर्ड मोती' कहते हैं। सच्चे मोती के मुकाबले 'कल्चर्ड मोती' कम मूल्य के होते हैं।





ओस- प्रातःकाल पौधों के ऊपर पानी की नन्ही-नन्ही बूंदें बिखरी होती हैं, जो सूरज के प्रकाश में मोतियों की तरह चमकती हैं। पानी की इन्हीं छोटी-छोटी बूंदों को ओस कहते हैं। देखने में ये बड़ी सुंदर लगती हैं। कभी सोचा है, ये बूंदें कहां से आती हैं?

हमारे चारों ओर के वायुमंडल में जलवाष्प होती है। रात के समय हवा ठंडी हो जाती है, तो यही जलवाष्प फिर से पानी में बदलकर, छोटी-छोटी बूंदों के रूप में संघनित होकर, घास और पत्तियों पर जमा हो जाती है। इसी को हम ओस कहते हैं।

एक गिलास में बर्फ के छोटे-छोटे टुकड़े डाल दिए जाएं, तो कुछ ही देर में गिलास की बाहरी सतह पर जल की नन्ही-नन्ही बूंदे जमा हो जाती है। ये बूंदें जलवाष्प के संघनित होने से बनी हैं। ठीक इसी प्रकार वायुमंडल की जलवाष्प के संघनित होने से ओस कण बनते हैं।

जब आकाश साफ होता है, तो ओस अधिक बनती है। इस स्थिति में धरती की सतह से पानी का वाष्पीकरण अधिक होता है। रात में पेड़-पौधे भी अधिक ठंडे हो जाते हैं। बादल छाए होते हैं, तो ओस कम बनती है, क्योंकि बादलों के कारण रात में पेड़-पौधे अधिक ठंडे नहीं हो पाते।

धूप निकलने पर ओस की बूंदें गायब हो जाती हैं। गर्मी के कारण ये बूंदें वाष्प में बदलकर वायु में मिल जाती हैं।

—संजीव गर्ग


एनजैंइन का टाइगर आया
एनजैंइन ग्लुको पोप्स लाया
Energein Gluco pops It's real fun!
Energy pops
Energein Gluco
एनजैंइन के खाली पाऊच जमा कीजिये
टाइगर कलब के मेम्बर बनिये और
बीसियो ऊपहार पाइये
ऍनजैंइन
ग्लुको पोप्स
पाइनेपल ● ओरेन्ज ● मिन्ट
बिन शक्कर की फिर भी मीठी
सिर्फ ग्लुकोज की पीपरमिन्ट
दस खाली पाऊच के बदले में दूकानदार से स्टीकर कूपन पाकर, या तो नीचे दी हुई कूपन सूचना अनुसार भरके, आज ही हमें भेज के मेम्बर बनने की शुरुआत कर दीजिये।
देर करोगे तो मेम्बर आप फिर न बन पाओगे
नाम : कुमार/कुमारी
पता :
पीन कोड
आकर्षक बहुपयोगी कवर – मेम्बरशीप का फॉर्म पाने के लिये यह कूपन + २० पाउच + रू. १-४० के डाक टिकट ये पते पर तुरन्त भेजिये
अेनजैंइन पो.बॉ. नं. ४१४२, नवरंगपुरा पो.ऑ. अहमदाबाद ३८० ००९
Energein Gluco pops

Scanned with CamScanner

राजस्थान पत्रिका प्रकाशन पाक्षिक

बालहंस

मई द्वितीय



◀ **विचित्र विशेषांक**

- विचित्र व्यक्ति
- विचित्र घटनाएं
- विचित्र कारनामें
- विचित्र जीव-जन्तु व प्रकृति

जून प्रथम



हास्य विशेषांक ◀

- हर पृष्ठ पर ठहाकों को जन्म देने वाली सामग्री
- हंसती-हंसाती कहानियां
- गुदगुदाती चित्रकथाएं
- खिलखिलाते गीत, कविताएं,

पृष्ठः ~~68~~ 84

JPC/121/89

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेंद्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस नयी दिल्ली में मुद्रित तथा प्रकाशित
कार्यकारी अध्यक्ष : नरेश मोहन

शीर्षक बताइए : परिणाम

एकदम चित्र से मेल खाते, अनूठे शीर्षक भेजे इस बार पाठकों ने। अप्रैल अंक में छपे रंगीन चित्र पर इन शीर्षकों को पुरस्कार के लिए चुना गया—

धूप लगे या हो बरसात,
छतरी लेकर घूमें साथ।

—चंदा बंदिनी पांडेय, द्वारा भूपेंद्रनाथ पांडेय, विक्टोरिया कोलियरी, लाल बाजार, कुल्टी, जि. बर्दवान (पं. बं.)

हंसती खिल-खिल प्यारी बहनें,
हाथ में छाता, स्वेटर पहने।

—सुनीता संघी, ८ पट्टाभिराम स्ट्रीट, कौंडीटोप पार्क, मद्रास।

गरमी का है मौसम आया,
प्यारी छतरी कर दो छाया।

—कु. नीति बक्शी, द्वारा दिनेश बक्शी, स्किपर भवन, बाराखम्भा रोड, नई दिल्ली।

इनके शीर्षक भी पसंद आए— अश्विनी सच्चर, ऊना (हि. प्र.); मुकेशकुमार लखोटिया, किशनगढ़ (राज.); भारतभूषण कालड़ा, मंडी अटेली (हरि.); अनुकृति शुक्ला, कानपुर; नेहा श्रीवास्तव, नई दिल्ली; सुनीता विश्वकर्मा, गंधवानी (म. प्र.); हरीश बजाज, हिम्मतसर (राज.)।

नंदन

ज्ञान-पहेली : २४४

परिणाम

क		वे		स	ट	
था		श			का	म
	खा		मि	ला		
क		के	तु		झो	ली
हां						
	खो	ल				
पूं	छ		उ	द	य	न

नं. ज्ञा. प. २४४

पाठकों ने ज्ञान-पहेली हल करने में इस बार काफी उत्साह दिखाया। विजेताओं में पुरस्कार की राशि इस प्रकार बांटी जा रही है।

सर्वशुद्ध हल : एक : तीन सौ रुपए

चैरी गुप्ता, एस. बी. १५, भवानीसिंह मार्ग, बापू नगर, जयपुर।

एक गलती : सात : प्रत्येक को सौ रुपए—

१. कु. समता गोलछा, गोलछा एजेंसीज, बाग बहरा, जि. रायपुर; (म. प्र.); २. व्योमकेश, द्वारा प्रो. विश्वमोहन कुमार चौधरी, एन. ए सी. रोड, खगड़िया; ३. अविनाश सारस्वत, मिनर्वा सिनेमा के पीछे काली जी का मंदिर, जयपुर; ४. प्रकाशकुमार मिश्रा, क्वा. नं. ३६२ डी. डी. सेक्टर, पिपलानी, भोपाल; ५. वंदना चावला, ५७० सोतीगंज, मेरठ (उ. प्र.); ६. पूनम वधावन, नं. १ टाइप ॥ क्वार्टर, मिंटो रोड, नई दिल्ली; ७. हर्षवर्द्धन, बाल विकास विद्यालय, कोर्ट एरिया, जहानाबाद (बिहार)।

आप कितने बुद्धिमान हैं : उत्तर

१. बाएं खड़े व्यक्ति के हाथ की कटार छोटी है।

२. उसके पीछे खड़ी ट्राली में जाली नहीं है।

३. उसके आगे बैठी लड़की की बाईं चोटी बांह के पीछे है।

४. बैंड वादकों की गैलरी का एक डंडा गायब है।

५. ड्रम बजाने वाले की ड्रम स्टिक का रंग बदल गया है।

६. गोल कठघरे पर रखी डिब्बी पर लिखा नाम गायब है।

७. कठघरे में बैठी महिला के ब्लाउज का गला बड़ा है।

८. उसके पीछे खड़े व्यक्ति के चेहरे पर ऐनक है।

९. बीच की मेज पर एक पात्र अधिक है।

१०. सामने के दरवाजों में से एक की मेहराब ऊंची है।

पत्र मिला

- 'नंदन' वह संजीवनी है, जिसे आप नई पीढ़ी को पिला रहे हैं। इसकी कथाएं बच्चों को अपनी महान संस्कृति से परिचित कराती हैं। अप्रैल '८९ अंक बहुत अच्छा लगा। किसी एक रचना का नाम लेकर पूरे अंक का महत्व कम करना नहीं चाहता। पूरा अंक ही पठनीय है।

—नारायणदास मघवानी, उज्जैन

- अप्रैल अंक में 'सूना तीरथ', 'बंदर की चाल' और 'नीली झील' कहानियां विशेष पसंद आईं। एलबम में 'सीता-राम' की मनोहर जोड़ी निराली थी। रंगीन झांकी 'मेरा भारत महान' उल्लेखनीय लगी।

—अमित शर्मा, नरेला, दिल्ली

- इस अंक में 'चीटू-नीटू', 'तेनालीराम' तथा 'चटपट' रोचक और मनोरंजक लगे। यदि पत्रिका में 'ज्ञान-विज्ञान' तथा 'खेल कूद' सम्बंधी एक स्तम्भ प्रारम्भ किया जाए, तो इसकी लोकप्रियता और अधिक बढ़ जाएगी।

—जयदीप विश्वास, रामगढ़ कैंट (बिहार)

- नए अंक में 'टूटी नींद', 'राजा का मोह' तथा 'अकेले लड़े राम' कहानियां बहुत अच्छी लगीं। 'सीताराम मनोहर जोड़ी' की छवि निराली थी। चुटकुला प्रतियोगिता देकर आपने हमारा उत्साह खूब बढ़ाया है।

—राजेश राजपुरोहित, बीकानेर

- पिछले पचीस वर्षों में 'नंदन' ने अपने पाठकों को जो कुछ दिया है, वह किसी और पत्रिका से नहीं मिला। अप्रैल '८९ अंक 'प्राचीन कथा-विशेषांक' के रूप में प्राप्त हुआ। यह अंक हर दृष्टि से सराहनीय था। एक बार ऐसा विशेषांक भी निकालें, जिसमें विश्व के महान लेखकों की रचनाएं हों।

—रतन शुक्ला, भागलपुर

- एक 'नंदन' पाने के लिए पूरे माह का इंतजार ! क्या यह हम बच्चों के साथ अन्याय नहीं है ?

—विनोद कुमार गुप्ता, कलकत्ता

- अप्रैल अंक हाथ में आते ही मन मयूर नाच उठा। एलबम देखकर मन भक्ति से भर उठा। 'बंदर की चाल' तथा 'हाथी जी उठा' कहानियां विशेष पसंद आईं। कृपया कोई खेल स्तम्भ प्रारम्भ करें। **—संजय ए. सोनी, बम्बई**

- 'संत दादू' चित्र-कथा बहुत अच्छी लगी। 'राजा का मोह', 'मंदिर बन गया', 'पहरेदार' तथा 'छल-बल' कहानियां मन भाईं। 'तेनालीराम' भी खूब रोचक लगा।

—सुनीलकुमार गुप्ता, रुदायन (उ.प्र.)

इनके पत्र भी उल्लेखनीय रहे : सुरेंद्र कुमार सैनी, वलीपुरा, बुलंदशहर; मलिका कालड़ा, लुधियाना; सुशीलकुमार, इटावा।



Scanned with CamScanner

रजि. नं. डी.-(सी)-१७१ आर.एन.आई. नं. १०५२

